* ॐ *

अफ्रीका की यात्रा

तथा

वैदिक धर्म प्रचार



लेखक

श्री० महता जैमिनी बी० ए० वैदिक मिश्नरी

प्रकाशक तथा मुद्रकः-

विश्वम्भर सहाय 'प्रेमी'

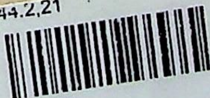
अध्यक्ष—प्रेमी प्रिण्टिङ्ग प्रेस मेरठ शहर



सितम्बर १९३२ ई०

०००] [मूल्य १)







अफ्रीका के नगर दारासलाम में व्याख्यान देते हुये।

भूमिका

जब मैंने पांचवीं बार समुद्री यात्रा करके इण्डोनेशिया तथा चीन व जापान की यात्रा और वैदिक धर्म प्रचार को समाप्त किया तो अगस्त १६३१ ई० में भारत पहुंचा। केवल दो दिन कलकत्ते में रहकर शिवनाथ राय के पास ठहरा। आर्य समाज कलकत्ता में कोई अतिथि सत्कार नहीं। वहां तो व्याख्यान का प्रबन्ध भी बड़ा कठिन होता है। साप्ताहिक सत्संग में कोई उपदेशक आकर व्याख्यान देदेवे और रात्री को दूसरी मञ्ज़िल पर अपना फ़र्श पर बिस्तर लगा कर सो जाय इससे अधिक कलकत्ता आर्य समाज सत्कार करने को तैयार नहीं है। ४ अगस्त को पटना में पहुंचा। दो दिन तक वहां व्याख्यान हुये। हाज़री उत्सव से कम न थी। वहां से आरा, बनारस, हरदोई, मुरादाबाद, सहारनपुर और अम्बाला प्रचार करते हुये १८ अगस्त को होशियारपुर अपने पुत्र प्रकाशचन्द्र प्रोफेसर के पास पहुंचा। दो तीन दिन प्रचार करके लाहौर आया। दोनों समाजों के मन्त्री तथा कुछ अन्य भद्र पुरूष स्टेशन पर उपस्थित थे। तीन व्याख्यान आर्य समाज बच्छोवाली, एक अनारकली तथा एक आर्यसमाज वालमण्डी में दिया अब मेरा विचार था कि एक दो मास पंजाब में ठहरकर नौम्बर में अफ़्रीका की यात्रा करूं वहां से फिर कनाडा व जर्मनी को जाऊं। मैंने इस सम्मेलन में प्रचारको जारी रक्खा। अगस्त मास

में १६ व्याख्यान दिये। सितम्बर मास में प्रचार करता हुआ मेरठ गया। वहां से लौट कर मुज़फ्फरनगर आया तो मेरठ का एक नवयुवक श्रीराम मुझे वहां आकर मिला और वलपूर्वक इच्छा प्रगट की कि मैं उसे साथ ले चलूं।

मेरी भी इच्छा थी कि इस वार की यात्रा में किसी नवयुवक को अपने साथ रक्खूं जो लेखक कार्य में मेरी सहायता करे। और वह दिल बहलाने तथा सेवा करने वाला भी हो। मैंने उसे कह दिया तुम पासपोर्ट प्राप्त करो मैं तुम्हें साथ ले चलूंगा। चूंकि एफ़० ए० तक उसने शिक्षा पाई थी। स्वभाव का भी सादा था इसलिये मैंने उसे साथ लेजाना स्वीकार कर लिया। उसने कहा मैं एक मास में पासपोर्ट प्राप्त करलूंगा। मैं प्रचार करने में लग गया। परन्तु उसे पासपोर्ट दिसम्बर तक न मिला। मैं उसके पासपोर्ट की प्रतीक्षा करता रहा। अन्त में बड़ी कठिनाई से उसे फ़रवरी मास में पासपोर्ट मिला। मेरी दाईं आंख की ज्योति कुछ कम होरही थी इसीलिये मैंने महाशय डाक्टर चौधरी से निरीक्षण कराया। उसने कहा कि आंख में मोतिया उतर आया है परन्तु अभी आपरेशन के लिये ६, ७ मास की देरी है। साथ ही मेरी धर्मपत्नी तथा पुत्रियों ने मुझे अग्रसर किया कि मैं अब अपने सुपुत्र प्रकाशचन्द्र प्रोफेसर का जो ३० वर्ष का हो गया है विवाह करके जाऊं। इस लिये मुझे ठहरना पड़ा।

५ मार्च को प्रकाशचन्द्र का विवाह पूर्ण वैदिक रीति से गुजरात में बिना जातिपांत के विचार किये ही कर दिया गया।

चूंकि डाक्टरों की सम्मति थी कि मैं नौम्बर में आपरेशन कराने के पश्चात् समुद्री यात्रा करूं इस लिये अब मुझे गर्मी के मौसम में भारत में ही कार्य करना पड़ा। प्रकाशचन्द्र का बिबाह करने के पश्चात मैंने प्रचार करने और लिखने पढ़ने का काम आरम्भ कर दिया। प्रतिमास मेरे व्याख्यानों का माध्यम ३४ या ३५ पड़ता था। क्योंकि कभी एक दिन में २ व्याख्यान भी हो जाते थे। मई जून, जुलाई में जबकि हमारे आर्य समाज के कार्यकर्ता पहाड़ों पर यात्रा करने चले जाते हैं। मैं हिसार और राजपूताना जैसे प्रान्तों में भ्रमण करके व्याख्यान देता फिरता था। अक्तूबर के अन्त तक मैंने पंजाब, यू० पी०, मध्य भारत, राजपूताना, क्वेटा, सिन्ध और कांची आदि प्रान्तों में बडे २ प्रसिद्ध नगरों में भ्रमण करके व्याख्यान दिये और भारत की जनता को दर्शाया कि इंडोनेशिया, चीन व जापान में किस तरह से भारत की प्राचीन सभ्यता संस्कृति और धर्म के चिन्ह अब तक पाये जाते हैं। साथ ही यहाँ के प्राचीन हिन्दुओं के मन्दिरों के खंडरात प्रतिमाओं, शिल्पकारी, चित्रकारी के फोटो जनता को दिखाता रहा जिससे उन्हें ज्ञात होवे कि विदेशों में किस तरह हमारे पूर्वजों ने जाकर अपने धर्म व सभ्यता को फैलाया और सुरक्षित रक्खा। साथ ही मैं मन्दिरों में जो हस्त लिखित ग्रंथ और वेद, रामायण, गीता आदि भोज पत्र, ताड़ और लण्डोर के पत्तों पर विद्यमान हैं उन का वर्णन करके विशाल भारत सम्बन्धी उनके अन्दर उत्तेजना तथा प्रभाव उत्पन्न किया।

मैंने अपने देश के नवयुवकों को आर्य समाज में स्कूल तथा कालिजों में बड़े ओजस्वी व्याख्यान देकर बताया कि किस प्रकार से जापान ने पचास साठ वर्ष के भीतर नवयुवकों के बल पर इतनी उन्नति करली है। मैंने बताया कि जापान ने शिल्पकारी, व्यवसाय, धन्धों की ओर ध्यान दिया है नौकरियों का ध्यान नहीं किया है। इस लिए आज जापान उन्नति शिखर पर पहुंच गया है। उद्योग धन्धों में इंगलैण्ड व अमेरिका भी उसकी तुलना नहीं कर सकते हैं। नवयुवकों की मनोवृति को परिवर्तित करने का यत्न किया कि वह दासत्व का ख्याल छोड़ कर अब धन्धों की तरफ लगें और जापान जर्मन में जाकर कुछ व्यवसाय सीखें और अपने देश में उन धन्धों का प्रचार करके आप भी अपना निर्वाह भली प्रकार से करें दूसरों को भी ऐसे धन्धे सिखायें और बेकारी को दूर करें। उसका परिणाम यह हुआ कि कई विद्यार्थीयों ने जापान जाने के लिये उत्सुकता प्रगट की और पासपोर्ट के लिये सरकार को प्रार्थना पत्र भेज दिये। कई जापान चले भी गये। उनके माता पिता को भी समझाया कि अब नौकरी मिलना तो कठिन है अपने देश का कष्ट दूर करने का एक यही उपाय है कि अपने देशकी आवश्यकतायें अपने देश की वस्तुओं से पूरी की जायं और भारत माता से सब कुछ प्राप्त किया जाय। इन उपदेशों का प्रभाव हर जगह जनता और नवयुवकों पर अति उत्तम रहा। जिसके लिये मेरी आत्मा को सन्तोष हुआ कि मैंने कुछ समय कर्तव्य का पालन किया।

अक्टूबर मास तक मध्य भारत में प्रचार करने के पश्चात् नवम्बर के आरम्भ में लायलपुर पहुंचा। वहां सात दिन कथा की और व्याख्यान दिये। उपस्थित्ति प्रति दिन उत्सव के समान होती थी अन्त में ७ नौम्बर को श्रीमान् मास्टर गुरुदत्त राम वकील जिसके अन्दर परोपकार प्रेम और सेवा भाव कूट कूट भरा हुआ है मेरे साथ आकर हर भजन असिस्टेण्ड सिविल सर्जन गोजरा के पास ले गये। मेरे पुत्र महता प्रकाशचन्द्र भी मेरी सेवा करने के लिये आगये। हमारे पहुंचते ही डाक्टर साहब ने तुरन्त आपरेशन कर दिया। जो सफलता पूर्वक हो गया परन्तु फिर भी शफ़ाखाने में ज़ख्म पूरा होने में दो सप्ताह ठहरना ही पड़ा। ला० गुरूदत्त राम वकील जो मेरे छोटे भाई के समान हैं मने करने पर भी हर दूसरे दिन वहां आते जाते थे। गोजरा के आर्य समाजी भाइयों ने तथा मेरे मित्र म० हंसराज और देशराज वकील म्यूनिसपिल कमिश्नर ने भी ऐसा करने में कोई कसर न रक्खी। कमालिया से मेरे कई सम्बन्धी और लायलपुर से लाला दरियावल वकील जो एक श्रद्धालु, परोपकारी तथा निष्काम भाव से सेवा करने वाले मेरी खबरगारी के लिये रहे। डाक्टर हरभजन सिह बहुत उदार चित, कर्तव्य पालन करने वाला, निर्मोही सज्जन पुरुष हैं। निराभिमानता तथा नम्रता उनमें कूट कूट कर भरी हुई है। दिन में तीन तीन बार मेरी खबरगीरी के लिये आता रहा। आखिर उसने २३ नौम्बर को हस्पताल रुखसत करते हुये ताकीद की कि मैं कम से कम तीन सप्ताह तक आराम करूं,। लिखने

पढ़ने का काम पूर्णतया बन्द करदूं। मैंने २५ दिसम्बर तक आराम किया। फिर प्रचार आरम्भ किया। जनवरी के अन्त में अफ्रीका प्रस्थान करने का विचार किया। चुनाचे जालंधर, नाभा संगरो, वृन्दाबन, मथुरा, कोटा प्रचार करने में दिसम्बर मास व्यतीत किया। जनवरी में हाथरस, फिरोज़ाबाद, मैनपुरी, शिकोहाबाद, गोरखपुर, फज़ाबाद, टांडा, बलिया, कानपुर और फरुखाबाद प्रचार किया। पता चला कि हमारा जहाज़ बम्बई से ८ फरवरी को अफरिका रवाना होगा। इसलिये मैं २ फरवरी को बांदाकुई पहुंचा और श्रीराम मेरठ अपने रिश्तेदारों से मिलने चला गया ३ से ५ फरवरा तक अहमदाबाद में व्याख्यान हुये। श्रीराम वहां आ गया। उसके बाद हम बड़ोदा पहुंचे। मास्टर आत्माराम ने ८ फरबरी को जहाज़ पर सवार होने से रोक लिया और २२ फरबरी के जहाज़ पर जाने की आज्ञा दी। मास्टर जी के साथ हमें १० से १२ फरवरी तक गुरुकुल सौनगढ़ के उत्सव पर जाना पड़ा। वहां मेरे तीन व्याख्यान हुये। और ३ व्याख्यान बड़ौदे में हुये। इसलिये हम २२ फरवरी को चलकर १३ फरवरा सुवह को बम्बई पहुंच गये। आर्य समाजिक भाइयों तथा मन्त्री ने आदर पूर्वक सत्कार किया। आर्य निवास में हमारे भोजन का अति उत्तम प्रबन्ध कर दिया। बम्बई में एक दर्जन आर्य समाज हैं। इसलिये प्रत्येक रात्रिको किसी न किसी समाज में मेरा व्याख्यान होता था। इस तरह मैंने आठ व्याख्यान भिन्न २ स्थानों में बम्बई में दिये। परन्तु जनता सन्तुष्ट न हुई। लोगोंकी प्रवल इच्छा

थी कि मैं एक मास यहां ठहरकर व्याख्यान दूं । समाचार पत्रों ने भी उन व्याख्यानों की प्रशंसा की और समाजिक लोग भी अत्यन्त प्रभावित हुये । इस प्रकार से मैंने लगभग डेढ़ वर्ष भारत में ठहरकर ४१६ व्याख्यान १८० भिन्न २ स्थानों में देकर छठी जल यात्रा करने के लिये प्रस्थान किया । आर्य समाज बम्बई ने बहुत सत्कार किया और २२ फरवरी को प्रातःकाल हम आर्य समाज से स्टीमर में सवार होने के लिये विदा हुये ।

जहाज़ी यात्रा की कठिनाइयां

वर्तमान समय में विदेश यात्रा के लिये कठिनाइयां अधिक हो गई हैं । इस लिये यात्रियों को कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है । सबसे अधिक कठिनता तो पासपोर्ट प्राप्त करने की है । १९१३ ई० में पासपोर्ट लेने की कोई शर्त न थी । १९१४ ई० से पासपोर्ट की प्रथा चली और अब प्रति दिन इतनी कठिनता होती जाती हैं कि चार पांच मास उसके लेने में लग जाते हैं । पुलिस खूब छान बीन करती है । गवर्नमैंट के विरुद्ध भाषण करने वाले या जिनकी जीविका का कोई आधार न हो, जिनका आचरण संदेहात्मक हो । उन सब बातों की छान बीन करने के पश्चात् पुलिस की रिपोर्ट अनुकूल होने पर पासपोर्ट मिलता है । दूसरे अब अमानतन रुपया जमा करने की शर्त कर दी गई है । अर्थात् प्रत्येक देश में जाने पर वहां के इमीग्रेशन आफीसर के पास कुछ धन जमा करना पड़ता है जो लौटते समय वापिस मिल जाता

है। दृष्टान्त के लिये पूर्वी अफ्रीका के लिये दस पौंड जमा करने पड़ते हैं। दक्षिण अफ्रीका को पचास पौंड और अमेरिका के लिये सौ पौंड। इसका परिणाम यह है कि अब विदेश यात्रा केवल धनवान व्यक्ति ही कर सकते हैं। मज़दूरी पर जाने के लिये कड़ी शर्त तथा अनेक बाधायें हो गई हैं। तीसरे अब डाक्टरी निरीक्षण भी बहुत कड़ा होता है। प्रत्येक यात्री को चेचक का टीका लगाना पड़ता है। जहाज़ी कम्पनियां टीके का सर्टीफिकेट तथा पासपोर्ट देखे बिना टिकट भी नहीं देती। जहाज़ पर सवार होने से पहिले शरीर के अंगों का निरीक्षण करता है। दूसरा आंख देखता है तीसरा टीके के निशान देखता है। जब डाक्टर संतुष्ट हो जावें तब जहाज़ पर जाने की आज्ञा मिलती है। कस्टम आफिस वाले सामान पर एक रुपया प्रति बंडल कर (टैक्स) लेते हैं। इसके अतिरिक्त तोल के हिसाब से भी किराया चार्ज करते हैं। आजसे दस वर्ष पूर्व इस प्रकार के कष्ट न थे। जहाज़ का किराया भी प्रति वर्ष कुछ न कुछ अधिक होता जाता है। मुझे अपने प्राइवेट सेक्रेटरी के लिये सौ रुपया जमा कराना पड़ा और सात रुपये फुटकर व्यय ले लिया। इस प्रकार किराया जहाज़ व अमानत के रुपये के अतिरिक्त ३२ रुपया अधिक व्यय हो गया।

हम १२॥ बजे करञ्जा जहाज़ पर सवार हुये। जहाज़ ठीक १॥ बजे रवाना हुवा। आज से तीन चार वर्ष पूर्व जहाज़ में दो दो हज़ार यात्री आया जाया करते थे। जहाज़ खचाखच यात्रियों से भरपूर हुवा करते थे। परन्तु अब एक तो हर जगह व्यापार

और धन्धे मन्दे पड़ गये। बेकारी अधिक हो गई है। दूसरे अब विदेश यात्रा के लिये बड़ी बाधायें हो गई हैं। इस लिये इस जहाज़ में चार सौ के लगभग यात्री थे। भोजन व्यय प्रत्येक मनुष्य से २० रुपये चार्ज करते हैं। इसलिये हमने भोजन का स्वयं प्रबंध कर लिया था। मेरा सेक्रेटरी भोजन बनाना जानता था। इसलिये हमें कोई कष्ट न हुवा। हमने बम्बई से १५ रुपये का सामान खूराक, फल, मिठाई और दूध के डिब्बे ले लिये थे। हमें एक तिहाई सामान बच गया। इस प्रकार ४० रुपये के बजाय १० रु० में ही निर्वाह हो गया। मार्ग में समुद्र शान्त रहा। मौसिम बहुत अच्छा था। पहिले जहाज़ बन्दर गोवा पर दो घण्टे ठहरा। वहां से कुछ माल लिया और कुछ उतारा। फिर जहाज़ शेशल में ठहरा, यह फ्रांसीसी प्रान्त है। यहां मुसाफिर उतरते और चढ़ते हैं।। सामान भी बहुत उतरता है।

मैं तो प्रति दिन सात घण्टे लिखने पढ़ने का कार्य करता रहा। ७॥ बजे नित्य कर्म से अवकाश पाकर ११॥ बजे तक लिखने पढ़ने का कार्य करता था। फिर भोजन करके २॥ बजे तक आराम करता। फिर ५॥ बजे तक अपने काम में लगा रहता। फिर ८॥ बजे तक जहाज़ के डेक पर टहलता तथा समुद्री दृश्य अवलोकन करता था और कुछ साथियों से वार्तालाप करने में समय व्यतीत करता। तत्पश्चात् शयन करता करता था। इस प्रकार १० दिन के पश्चात् हमारा जहाज़ मम्बासा बन्दरगाह पर लगा। फिर एक बार पासपोर्ट देखे गये। दो बार जहाज़ में सवार होने से पहिले,

तीसरी बार जहाज़ में, चौथी बार उतरने से पूर्व वहां के इमीग्रेशन आफ़ीसर ने निरीक्षण करके उसपर अपनी मोहर लगाई। इस प्रकार ४ मार्च को दोपहर १२ बजे हम जहाज़ से उतरे।

अफ़रीका की यात्रा के लिये कठिनाइयां

कुछ लोगों का यह ख्याल है और उन्हों ने प्रसिद्ध कर रक्खा है कि विदेश यात्रा में मुझे बड़ा आर्थिक लाभ पहुंचता है यदि यह बात सत्य है तो आर्य प्रतिनिधि सभा या सार्वदेशिक सभा क्यों अपने उपदेशकों को विदेशों में भेजकर क्यों लाभ नहीं उठालेती। जिससे प्रचार हो और धन का लाभ भी हो। क्यों सभा के उपदेशक केवल उन स्थानों में जाते हैं जहां पहले से समाज होती हैं? जब मैंने अफ्रीका जाने का विचार किया तो आर्य समाज मम्बासा और नेरोबी को पत्र लिखे और उन्हें साफ लिखा कि मैं किसी संस्था को चन्दा नहीं मागूंगा और न कोई अपील करुंगा। मम्बासा समाज ने मेरा पत्र पढ़ने पर भी लिखा कि आप किसी संस्था के लिये भिक्षा मांगने के लिये न आयें हमारी आर्थिक दशा अत्यन्त शोचनीय है। आर्य समाज नैरोबी के मन्त्री ने १६ जनवरी के पत्र में लिखा कि हम लोग किसी भी पहलू में भी आपकी सहायता न कर सकेंगे। केवल आपका प्रचार कराने में सहायता करेंगे। साथ ही आपको ज़मानत और रेलवे यात्रा के लिये कुछ रुपये भी भेजना चाहिये यहां की समाजें तो ऋणी हैं। वह रेल का किराया भी अदा न कर सकेंगी और न

यहां आपकी पुस्तकों की बिक्री हो सकेगी क्योंकि अभी यहां अनपढ़ लोगों में श्रद्धा और हमदर्दी बहुत है। सम्भव है कुछ गुजराती भाषा की पुस्तकें लग जायें। यह उत्तर बड़ा निराशा जनक था। ऐसी दशा में कोई उपदेशक विदेश यात्रा का क्या साहस कर सकता है? या क्या कमा सकता है। उसे अपने पास से खर्च करके प्रचार करना होगा। सम्भव है अब भी संस्था के चतुर मांगने वालों को अब भी कुछ प्राप्त हो सके परन्तु मैंने तो १९२५ ई० में मारीशस के लोगों से चन्दा मांगने के पश्चात् चन्दा लेना सर्वथा बन्द करदिया है। समाजें अपनी जगह सच्ची हैं क्योंकि कई उपदेशक आये जिन्होंने अपने खर्च का बोझ समाज पर डाला बाकी केवल चन्दा करने के लिये आये वह अपनेही आराम को मुख्य समझते हुये समाजों का कचूमर निकाल देते हैं और जनता के रुपये का लेशमात्र ध्यान नहीं करते। इस लिये अब विदेशों की समाजें भी होशियार हो गई हैं। उपदेशकों को भी अपना ढंग बदलना चाहिये।

महता जैमिनी

आर्य मिशनरी

अफ्रीका यात्रा

पहिला अध्याय

अफ्रीका व भारत का प्राचीन सम्बन्ध

मैंने अपनी पुस्तक जगत गुरु भारत में यह सिद्ध किया है कि प्राचीन काल में भारत का सम्बन्ध तमाम भूमण्डल के साथ था। अर्थात् पाताल देश (अमेरिका), अफ्रीका, युरोप आदि महा खण्डों में भारत की संस्कृति, सभ्यता, धर्म प्रचलित थे। भारतीय लोग तमाम देशों में जाकर व्यापार व प्रचार का कार्य किया करते थे। मैं इस पुस्तक में पहिले अफ्रीका और भारत के प्राचीन विशेष सम्बन्ध का वर्णन करूंगा। लोगों का यह ख्याल बैठा हुवा है कि अफ्रीका सुनसान, अंधेरा जंगली महाखण्ड है। वहां सिवाय रेतीले पर्वतों, बियावान तथा जंगलों के और कुछ नहीं नहीं होता। यहां के मूल निवासी असभ्य और मांस भक्षी हैं। शोक है कि हम लोग अपने प्राचीन ग्रन्थों का अवलोकन नहीं करते। पश्चिमी लोग हमारे साहित्य के ग्रन्थ लेजाकर उनके अनुवाद करके उनसे लाभ उठाते हैं और खोज करके अपने नये उपनिवेश स्थापित करते हैं। परन्तु हम अपने ग्रन्थों के पढ़ने का यत्न नहीं करते। स्वामी दयानन्द जी ने पुराणों को अध्यात्मिक तथा धार्मिक दृष्टि से वेद विरुद्ध पाकर उनका खण्डन किया। परन्तु इतिहासिक दृष्टि से पुराण लाभदायक ग्रन्थ हैं और पश्चिमी

लोगों ने इन ग्रन्थों से बहुत लाभ उठाया है। उनसे हमें अपनी प्राचीन संस्कृति और भारतके गौरव का जो विदेशों में प्रचलित था पता मिलता है चुनांचे रास महोदय अपनी पुस्तक "केनिया की अन्तरंग अवस्था" में लिखते हैं :—

East Central Africa has been a land of romantic association from a remote period. The ancient Hindu Vedas referred to a mysterious land of Chandarasthan wherethe mountains of Moon in which the river Nile had its source. In Asiatic Researches Vol 3 Wilford gives such news of the Nile as could be extracted from the Puranas of the ancient Hindus. Mr. Speke referring to the old records says, "It is remarkable that the Hindus have christened the source of the Nile Amara which is the name of a country at the North East Corner of Victoria Nayanza Lake which shows clearly that the Hindus had communication with North and South ragions of the lake. Chandrasthan was so called from the nature name Aniya Muezi having the same meaing as Muezi means Moon in the African Buntu dealect. Mr. Speke thought that a high group of hills to the North of Tanganyka were the Lunce Mountis of Pholemy or the Somgiri सोमगिरि) of the ancient Hindus.

अर्थात्—पूर्वी मध्य अफ्रीका प्राचीन काल से घटनाओं की भूमि चला आता है। प्राचीन हिंदुओं के वेद में चन्द्रस्थान की गुप्त भूमि का वर्णन आता है। जहां चांद के पर्वत थे। वहां ही नील नदी का स्रोत था।

मिस्टर बिल्फोर्ड "ऐशियाटिक रिसर्च" के तीसरे भाग में पुराणों की घटनाओं के आधार पर नील के स्रोत का वर्णन करते हैं। प्राचीन लेखों के आधार पर मिस्टर स्पीकी यात्री लिखता है कि हिंदुओं ने ही नील नदी के स्रोत की सबसे पहले खोज की थी जो बिक्टोरिया नाइंजा के उत्तरी पूर्वी कोने में एक देश का नाम है। इससे प्रगट होता है कि प्राचीन भारत के निवासी यहां आगमन रखते थे। चन्द्रस्थान के लिये यहां की बनती भाषा में ऐनामेवज़ी शब्द आया है जिसके अर्थ चन्द्रस्थान के ही हैं। स्पेक महोदय का यही विचार है कि टांगानीका के उत्तर में पहाड़ियों का एक बड़ा समूह है जिसका नाम तास्त्रे भूगोल लेखक ने सायोमाली भाषा में ल्यूनीस्यूनटी लिखा है और और हिंदुओं के पुराण में सोमगिरि है दोनों के अर्थ समान हैं।

जायन महोदय ने अपनी पुस्तक "वास्कोडिगामा और उसके अनुयायी" में लिखा हैं कि दो मनुष्य कैदी बनाकर एक जहाज़ में ले जाये गये। महाशय ब्रौस ने उन्हें एबीसीनिया निवासी वर्णन किया है। वह इस जहाज़के मस्तूलपर एक लकड़ी की प्रतिमा जबराईल फिरश्ते की देखकर उसके आगे नमस्कार

कर रहे थे। यह प्रजा विधि एशीमिनिया की जनता में नहीं

थे। उन्हों ने
र वह आगे
हुआ था और
। उसके चारों
ने अपने हिंदू
जब बास्का
र पर जाने
गा।

लोग भी कहते
। न जानते
सिक युगों से
देश में नहीं
स्त लिखित
कालयों और
करगे भारत
तहास लिखना
र परन्तु अब
और अन्य
जातियों के आक्रमण होने से बच रहे हैं उनसे पता लगता है कि भारत के लोग इतिहास लिखने में निपुण और तीव्र थे। उन्होंने ऐसे समय में तत्व ज्ञान और वैज्ञानिक साहित्य पर ऐसे अनमोल

… घटनाओं
क … न्द्रस्थान
क … थे। वहां
हीं …

… तीसरे
भा … ीत का
वर … की यात्री
लि … ने पहले
खो … में एक
देश … रत के
निव … ों की
बनत … स्थान
के हि … का के
उत्तर … ताम्बे
भूगो … और
और … है।

… और
उसके … कैदी बनाकर एक
जहाज़ में ले जाये गये। महाशय ब्रौस ने उन्हें एबीसीनिया
निवासी वर्णन किया है। वह इस जहाज़के मस्तूलपर एक लकड़ी
की प्रतिमा जबराईल फिरश्ते को देखकर उसके आगे नमस्कार

कर रहे थे। यह पूजा विधि एबीसिनिया की जनता में नहीं पाई जाती। इस लिये वास्तव में यह मनुष्य हिंदू थे। उन्हों ने भूलकर उसे कोई अपना देवता समझा होगा। फिर वह आगे लिखता है कि एक वेदी पर सोमी का चिन्ह बना हुआ था और बालक ईसा को उनकी माता गोद में लिये बैठी थी। उसके चारों ओर ईसा के शेष बैठे हुये थे। ऐसे चिन्ह को उन्होंने अपने हिंदू देवताओं की जंगली अवस्था का दृश्य समझा था। जब बास्को डीगामा एक बेड़ी (नौका) पर सवार होकर तट पर जाने लगा तो उन्होंने बलपूर्वक चिल्लाकर कृष्ण कृष्ण कहा।

(३) युरोप के विद्वान और एतिहासिक लोग भी कहते आये हैं कि प्राचीन भारत के लोग इतिहास लिखना न जानते थे। यह उनकी बड़ी भूल है। भारत को कई इतिहासिक युगों से गुज़रना पडा है ऐसे परिवर्तन आये जो अन्य किसी देश में नहीं आये। जब तक भारत के लोग अपने प्राचीन हस्त लिखित ग्रन्थों को जो भोजपत्र, ताड़पत्र और ताम्बे पर पुस्तकालयों और मंदिरों में पडे हैं अवलोकन करके उनका अनुवाद न करगे भारत का गौरव उन देशों पर प्रगट न हो सकेगा। भले ही इतिहास लिखना न जानने का दोष भारत वासियों पर लगाया जाय परन्तु अब भी जो ग्रन्थ अत्यन्त प्राचीन काल के व्यतीत होने और अन्य जातियों के आक्रमण होने से बच रहे हैं उनसे पता लगता है कि भारत के लोग इतिहास लिखने में निपुण और तीव्र थे। उन्होंने ऐसे समय में तत्व ज्ञान और वैज्ञानिक साहित्य पर ऐसे अनमोल

ग्रन्थ लिखे जब कि तमाम पश्चिम अंधकार के सागर में डुबकी लगा रहा था। अब भारत में जागृति पैदा हो रही है और इस न्यूनता को अनुभव करके भारत के महत्व की जो विशाल भारत में रह चुका है प्रगट करने का यत्न कर रहे हैं।

भारतीय लोग पश्चिमी लोगों से सहस्त्रों वर्ष पूर्व अफ्रीका में थल मार्ग से जाया करते थे। उस समय नहर स्वेज़ मार्ग था जो एशिया और अफ्रीका को मिलता था। इसी मार्ग से व्यापार होता था। अन्त में एक फ्रेञ्च इंजीनियर लेसिप्स ने विचार किया कि इस भूमि को खोदकर यहां नहर बना दी जाय। उसका यह विचार १८६६ में सम्पूर्ण हुवा जबकि बड़ी भारी नहर खोद कर अफ्रीका को जल मार्ग द्वारा युरोप से मिला दिया गया और एशिया से थल हटाकर पृथक कर दिया गया। सबसे बड़ा प्रमाण अफ्रीका और भारत के सम्मिलित होने का अफ्रीका की भाषायें हैं। इन भाषाओं का मूल श्रोत संस्कृत ही प्रतीत होता है। अर्थात् संस्कृत का तमाम भाषाओं की माता होना सिद्ध होता है। ओज़ा महोदय जो भाषाओं की विद्या के अनुभवी थे लिखते हैं कि संस्कृत के कई धातु अफ्रीकन भाषाओं के शब्दों में पाये जाते हैं जिनसे सिद्ध होता है कि प्राचीन काल में भारत का इस महाद्वीप के साथ गूढ़ सम्बन्ध था। जैसे अफ्रीका की सुहेली भाषा में अगा शब्द के अर्थ इजाज़त लेने के हैं यह संस्कृत के आज्ञा शब्द का अपभ्रंश है। ऐसा ही बनतो भाषा में साधारण मकान या छाया दार स्थान को बन्द कहते हैं जो संस्कृत का शब्द स्पष्ट है। अफ्रीकन

भाषा में बरक के अर्थ बरकत के हैं यह संस्कृत शब्द बर से निकला है। ऐसे ही दर्श को दरीचा कहते हैं जो संस्कृत शब्द दर्श के अपभ्रंश है। इस प्रकार अफ्रीकन भाषाओं के अनेक शब्द संस्कृत के अपभ्रंश हैं। अस्तु यदि सावधानी से अफ्रीकन भाषाओं की गवेषणा की जावे तो उनके धातु संस्कृत भाषा से निकले हुये प्रतीत होते हैं।

(४) धर्म सिद्धान्तों और रिवाजों के विषय में हाब महोदय ने अपनी पुस्तक "बन्तो जाति के सिद्धान्त व विचार" में लिखा है कि जो सिद्धान्त और रिवाज अफ्रीका में पाये जाते हैं वह असीरिया और अरब से १२०० वर्ष ईसा से पूर्व आये। एशियन जातियों के बिचार एबीसीनिया के सीबियन (Sebean) जाति के लोगों ने ईसा से कई ने शताब्दियां पूर्व यहां फैलाये उनके संस्कार व जात-कर्म नामकरण, चूड़ा कर्म आदि अग्नि के सन्मुख होते हैं। और भारतीय लोगों के समान प्रार्थना करते हैं। अब भी बहुत से बन्तो जाति के लोग दक्षिण अफ्रीका में बाजरा और दूध पर निर्वाह करते हैं। मांस भक्षण नहीं करते हैं। उन्हीं के समान ही अतिथि सत्कार करते हैं। अफ्रीकन लोग अब तक यही कहते सुनाई देते हैं कि हम उस जाति की संतान हैं जो भारतीय लोगों की जाति है। हमारी सभ्यता, संस्कार और धार्मिक विधि भारतीयों के समान है। परन्तु हमारे मन्द भाग्य से समय के फेर से हमारा सब कुछ नष्ट हो गया है अन्यथा हम भी सभ्यता में किसी जाति से पीछे न थे।

(५) जानस्टन महोदय ने अपने पुस्तक "अफ्रीका की कहानी" में लिखा है कि दस हज़ार वर्ष हुये जब गोरे लोग मध्य सागर में अफ्रीकन लोगों के साथ मिलजुल गये। नंगे जिस्म या जानवरों की खाल पहने हुये जंगली अवस्था में आये और झाड़ियों में रहने वाले छोटे क़द के लोगों के साथ मिल जुल कर रहने लगे। और विवाह आदि करके गाल, अकभ्यत, नन्द और मसाइ जातियों में मिल जुल गये।

(६) भूगर्भ विद्या और जल परिवर्तन विद्याओं से सिद्ध होता है कि हज़ारों वर्ष पूर्व अफ्रीका और भारत परस्पर सम्बन्धित थे। परन्तु कुदरत ने महान परिवर्तन करके उनको पृथक कर दिया। इसपर महोदय होल्डरनस (Holdernas) अपनी पुस्तक "भारत की जातियों" में लिखता है कि भारत का उत्तरी विभाग कलकत्ते से करांची तक पृथक था। और निचला भाग जहां अब भारत सागर है पृथक था। दक्षिण अमेरिका व दक्षिण अफ्रीका से गुज़र कर आस्ट्रेलिया तक पृथक एक महाखण्ड था जिसे लमोरन कहते थे। इस प्रकार भूगर्भ विद्या की बनावट में अफ्रीका भारत के साथ समानता रखता है। ऐसा ही विश्व कोष (Encyclo-peadia) में वर्णन है कि यदि प्राचीन मिश्र व अथोपिया को अलग कर दिया जावे तो अफ्रीका एशियाई जातियों की घटनाओं और रीति रिवाजों का देश बन जाता है। ग्यारहवीं शताब्दि में अरब निवासियों, ईरानियों और आर्यों ने वहां जाकर अपने उपनिवेश बसाये। विशेष कर सोखाला, मम्बासा और मलन्दी में समुद्र और खुश्की दोनों मार्गों से आकर व्यापार फैलाया।

(७) लैकी महोदय ने जो बृटिश म्यूज़ियम की ओर से खोज करने के उद्देशसे भेजा गया था मम्बासा में व्याख्यान देते हुये कहा कि हम खोज करने वाले व्यक्तियों को कई प्राचीन अस्थियां मिली है जो कान कमर और अंगुलियों के पिछले भाग की हैं। जो साठ हज़ार वर्ष की पुरानी प्रतीत होती हैं। उन की बनावट भारत की खोपड़ियों से मिलती जुलती है। इससे सिद्ध होता है कि हज़ारों वर्ष पूर्व भारतीय लोग वहां निवास करते थे ऐशिया, युरोप और उत्तर अफ्रीका में मनुष्य जाति के बिकास और संस्कृति के सम्बन्ध में तो कई विद्वानों ने अत्यन्त पुरुषार्थ से अनुसन्धान किया है। परन्तु कुछ विद्वान इस ओर ध्यान नहीं देते कि हबशियों के अतिरिक्त मध्य अफ्रीका में किस जाति और संस्कृति के प्राचीन चिन्ह पाये जाते हैं। अब यह निश्चय होता जाता है कि केनिया का उपनिवेश ऐसी जाति के अधिकार में था जो पश्चिमी जातियों की अपेक्षा भारतीयों से अधिक समानता रखने वाली थी। इस प्रकार केनिया की लाल पुस्तक १९२८ ई० लिखा है कि चाहे अन्वेषण कर्ता अभी इस ओर पूरा ध्यान न दें परन्तु यह सिद्ध हो चुका है कि पूर्वी अफ्रीका में जो प्राचीन चिन्ह मनुष्य जातिके मिलते हैं वे प्राचीन भारतीयोंसे सम्बन्धित प्रतीत होते हैं। और हज़ारों वर्ष पूर्व भारत के लोग वहां अपना निवास स्थान रखते थे। जो न्यासा झील से लेकर विक्टोरिया नाइञ्जा के पार इलाके तक विस्तृत था। जब उसके सिद्ध करने के लिये अनेक प्रमाण मिल चुके हैं।

(८) डाइजीनस (Diagenas) ने नील की गाथा टायर के नौका अध्यक्षों को बताई। उन्होंने उसे लेख बद्ध किया वह लेख तो लोप होगया है परन्तु उसका वह भाग जो नील के श्रोत के सम्बन्ध में था उसे क्लाडस महोदय ने १५० ई० में मुद्रित किया और मि० टाल्मी भूगोल वेत्ता के द्वारा सत्तरहवीं शताब्दी में आकर नील के श्रोत का पता लगाया जिसका वास्तविक गौरव प्राचीन हिन्दुओं को ही प्राप्त है। क्योंकि उन्होंने उसकी खोज करके अपने धर्म ग्रन्थों में सदैव के लिये सुरक्षित कर दिया। चुनाचे महोदय वैक एक हिन्दू का तैयार किया हुआ चित्र साथ लेकर नील का पता लगाने गया था। वह स्वयं लिखता है कि मुझे विल्फोर्ड ने जो नक्शा दिया था उसने हिन्दुओं के पूर्व ग्रन्थों से लिया था। हिन्दुओं के महाभारत और पुराणों में अफ्रीका का वर्णन इस बात की अमिट साक्षी है कि प्राचीन हिन्दू अफ्रीका से सम्बन्ध रखते थे। अन्त में महोदय स्पेक इस परिणाम पर पहुंचता है कि हमारा तमाम पहिला इल्म चन्द्र के पर्वत और उन प्रान्तों की जल विद्या के सम्बन्ध में प्राचीन हिन्दुओं ही से प्राप्त हुआ है। उन्होंने नील नदीके पुरोहितों को यह बातें बताईं। मिश्र के समस्त भौगोलिकों ने अपनी इस जानकारी को अपने यश के लिये प्रचलित कर दिया और उस गुप्त भेद को प्रकाशित कर दिया जो इस पवित्र नदी के विषय में किसी को ज्ञात न था। और हम लोग अटकल पच्चू घोड़े दौड़ा रहे थे।

(६) इसी प्रकार पर्वत नदी और झीलों के नामों से

समानता रखते हैं जैसे मेरु और सोमगिरी पर्वत टांगानिका के निकट हैं। अमर झील का नाम अब नयासा है शर्मी स्थान और पद्मा विक्टोरिया नायन्ज़ा के निकट था। अब उनके नाम बदल गये हैं। लाल सागर का नाम पुराणों में अरुण दधि लिखा है। अफ्रीका और भारत के स्थानों से ही उनमें कुदरती सम्बन्ध अब तक दृष्टिगोचर होता है। बृटानिया के जिस राजनीतिज्ञ पुरुष ने अफ्रीका को भारत की फालतू मनुष्य संख्या के आबाद करने के लिये उत्तम और निकट देश प्रगट किया था उसकी सम्मति ध्यान देने योग्य थी।

(१०) "एशियाटिक रिसर्च" में बिलफोर्ड महोदय लिखते हैं। ब्राह्मणों का कथन है कि प्राचीन काल में भारत और कई पश्चिमी देशों का परस्पर आगमन और व्यापार था। जहां तक मैंने उनके धर्म ग्रन्थका अवलोकन किया है यह बात सत्य प्रतीत होती है। चाहे हिन्दुओं ने भूगोल पर कोई क्रमबद्ध पुस्तक नहीं लिखी है परन्तु पुराणों में ऐसे चित्र मिलते हैं। उन देशों की सूची, नदी और पर्वतों के नाम दिये हैं उनसे उस काल की ज्ञात हुई भूमि का पता चलता है। उनके ज्योतिष ग्रन्थों में ऐसे नाम पाये जाते हैं।

जैन मत की पुस्तक त्रिलोक दर्पण को हम भली प्रकार अभी समझ नहीं सकते। हिन्दुओं के कथनानुसार पृथ्वी के दो भाग सुमेरू व कुमेरू हैं ऊपर के अर्द्ध भाग को सुमेरू और नीचे के भाग को कुमेरु कहते हैं। वायु और ब्रह्माण्ड पुराण में महा-

खण्ड को सात द्वीपों में विभाजित किया गया है। अर्थात जम्बू उग्र, यम, यमालय, शंख, कुश और बराह। उसके परे अताला पर्वत है जिसे अटलाण्ट कहते हैं। जम्बू ऐशिया का अन्तरीय भाग केन्द्र में है उसके पूर्व में अग्न, यम, यमालय है। पश्चिम में शंख, कुश और वराह। शंख द्वीप अफ्रीका का एक अंग था। तालमी महोदय ने यह विचार हिन्दुओं के ग्रन्थों से उद्धृत किये और उन हिंदुओं से लिये जो अस्कन्दरिया के निटक निवास करते थे। कुश द्वीप मध्य सागर तक विस्तृत था और नील के स्रोत से भारत तक। इन देशों को कालीकट भी कहते थे क्योंकि यह नील के निकट उपस्थित हैं। आगे वह लिखता है कि कुश द्वीप अथोपिया, नोबा और अबीसीनिया का मिलाकर नाम है। ब्राह्मण कहते हैं कि राजा कुश की सन्तान अपनी मातृभूमि को त्याग कर शंख द्वीप में जाकर निवास करने लगी और उन उपनिवेशों के नाम अपने पूर्वजों के नाम पर स्थापित किये इस लिये अब तक उनको देवताओं का देश कहते हैं। पुराने लोग ख्याल करते हैं कि देवता लोग नील के तट पर उत्पन्न हुये यह नदी अमरक्षय से निकलती है। सरोबर शर्मा के स्थान या शर्मा स्थान जो उजागर और शीतअन्त पर्वत के बीच में हैं सोमगिरी या चन्द्र पर्वत के भाग हैं। यह देश सरोवर के इर्द गिर्द चन्द्र स्थान कहलाते हैं। वहां से काली नदी (नील नदी) पदमवती की दलदलों में बहता हुवा निषाध पर्वत से गुज़र कर बरवर में जाता है। वहां से भीमकोट के पर्वतों से गुज़र कर शंखद्वीप में

पहुंचता है और अराबिया, अतात्री, बनों से गुज़र कर रूमसागर में जा मिलता है। कलिक पुराण में नील के नाम श्याम, श्यामला, मैजक, कृष्ण, अञ्जनाभा, इस्ता, नीला काला काली आदि आते हैं। वर्तमान समय में उजागर पर्वत को लोपाटा कहते हैं। शीत अन्त विक्टोरिया नाइन्जा के पश्चिमी भाग के प्रान्त को कहते हैं। पद्मवती नदी इफ़रात का नाम है। वहां शर्मा लोगों ने एक मंदिर बनवाया जिसका नाम पदम मंदिर था। वहां से चल कर शर्मा लोग मिश्र में पहुंचे जहां कि यत्त लोग रहते थे। जो खानाबदोश थे। आगे चलकर विल्फोर्ड महोदय लिखते हैं कि न केवल मिश्र व नील के किनारे के देश को किन्तु तमाम अफ्रीका को परिया नाम से प्राचीन काल में सम्बोधित करते थे। आर्यों के कई उपनिवेशों या अबीर लोगों के उपनिवेशों के कारण यह नाम पड़ गया। अबीर के अर्थ भेड़ बकरी चराने वाले के हैं। उसके शब्द ये हैं:—

Not only the land of Egypt and country bordering on the Nile even Africa itself had formerly the oppellation of Africa from numerons settlement of Aryarns or Ahirs(i.e. pastrullreties).

जैसे हिन्दू लोग गंगा को तीन पर्वतों से निकला हुआ मानते हैं। वैसे ही नील नदी को भी यमालय, भीम कोट और निषाध पर्वतों से निकला हुआ मानते हैं। हिन्दू लोग मानते हैं कि अफ्रीका के पर्वत बर्फ से ढके रहते हैं। ऐसा ही प्राचीन

मिश्र वासी, यूनानी और रोमा लोग मानते थे। यमालय के दक्षिण भाग को शीत अन्त कहते हैं। संस्कृत में मिश्र का नाम अगुप्त स्थान (चारों ओर से सुरक्षित) आता है। इसके तीन भाग थे। (१) शर्मा स्थान—मिश्र का निचला स्थान, (२) तपोबन—ऊपरी भाग, उसे थीबीअस भी कहते थे, (३) कण्टक देश—मध्य भाग। श्याममुख, कुटिलकेश, नाग और गरुड़ जातियों के लोग भारत से अफ्रीका में प्रस्थान कर गये। दानव लोग पश्चिमी भारत से मिश्र में आये। उनके पूर्वजों का नाम बेली था फिर वह इन्द्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसके काल में पदमवत मन्दिर, कदमवती के तट पर तय्यार हुआ। यह सब लोग काली नदी (नील नदी) के तट पर आबाद हुये।

(११) सटरपो महोदय लिखता है:—

The people of Maretani are said to have been Indians. Abyssenia was called Middle India in the time of Marcopolo while Ovid speaks of Audro-media that she came from India. The country between Caspian and Euxine had both names India and Ethopia. Even Archosia was called white India by Isodorus while Persians are called Yellow Indians.

अर्थात्-मरीतानी के लोग हिन्दू कहलाते थे। एबीसीनिया का नाम मध्य भारत था। मारकोपोलो यात्री के समय में होमर की पुस्तक में आता है कि इन्ड्रो-मेडिया भारत से आई थी।

कैसपियन और योकुसाइनी के मध्य का देश दोनों नामों—इंडिया और अथोपिया से प्रसिद्ध था। आइसोडर्सने अरकोशिया को सफेद इंडिया वर्णन किया है और ईरानको पीली भारतके नाम से वर्णन किया है।

यादव लोग पवित्र सदाचारी, अथोपिया निवासी थे। उन का वर्णन होमर भी अपनी पुस्तक में करता है। वह अटलाण्टिक सागर के तट पर आबाद हुये। बिरोवेन्स इतिहास लेखक निश्चय रूप से लिखता है कि अथोपियन भारतीय थे। युनान के लोग भारत को पंचाई भी कहते थे। ईथर (Esther) की पुस्तक में जो पुरानी अञ्जील का एक भाग हैं लिखा है कि ईसाई लोग इसे होदो पुकारते थे जो यादवका अपभ्रन्श है। तत्पश्चात् पाल लोग प्रस्थान करके जा बसे और उन्होंने पैलेस्टायन (पाली स्थान)को बसाया। इटली में पो नदी के किनारे पालीस्थान नगर विद्यमान है। हस्पान्ट के किनारे पर पालियापत्र मौजूद था। मिश्रमें परमात्मा का नाम ओसेरस था। जो ईश्वर का अपभ्रन्श है। कुटिलकेश लोगों ने नील नदीके किनारे आकर राज्य स्थापित किया। पुस्तक दृहदहेमा में लिखा हैं कि ईश्वर अपनी धर्मपत्नी पार्वती सहित आकाश से उतरा और शंख द्वीप के देश मिश्रकी भूमिपर निवास करने लगा। मिश्र के लोग ब्रह्मा, विष्णु, शिव के समान ओसीरस होरस और टाईफ़स तीन देवता मानते हैं। इस के आगे वह लिखता है:—

The Prince Devdos reigned over some

porture of Kush Divip which extended from the shores of Mediterranian sea to the banks of the Indus.

अर्थात्— राजा देवदास कुश द्वीप के कुछ प्रान्तों पर राज्य शासन करता था। जो रूम सागर के किनारों से सिन्ध नदी तक फैला हुवा था। तत्पश्चात् राजा पतहीनास की तरह पीढ़ियों ने वहां राज्य किया। उनके बनाये सात मन्दिर वहां मौजूद हैं।

(१२) अफ्रीका का पहिला यात्री लौंग स्टोन जब विलायत से जञ्जीबार आया तो वहां से सुल्तान (राजा) के हिन्दू कर्मचारियों और उसके कार्यकर्ता अलोदीन, विश्राम और जाफ़र ने ही उसे सामान रसद और अपने आदमी साथ देकर सहायता की। उस समय ऐराबी और भारतीय दूध और चीनी के समान परस्पर निर्भर थे और विश्वास रखते थे। लौंग स्टोन ने विक्टोरिया नायञ्जा का नाम अर्जुन का अमर सर कहा है। कलमाण्डजारो पर्वत का नाम संस्कृत में मञ्जर पुराण में मरुमंजर आया है।

(१३) शीतलवाद महोदय लिखते हैं—

Long before the British connection with the East Africa the merchants of India had free access to and commercial intercourse with that part of the world. History records that before 15 th. century, Indian merchants were in East Africa and Vasco-de-gama found large merchant vessels from India in the harbour of Mombasa.

अर्थात्—पूर्वी अफ्रीका के साथ अंग्रेजों का सम्बन्ध होने से बहुत पहिले से हिन्दुस्तान के व्यापारियों को संसार के इस भाग में जाने की पूर्ण स्वाधीनता थी और उसके साथ भारत का व्यापारिक सम्बन्ध खुल्लम खुल्ला जारी था। यह बात इतिहास से सिद्ध है कि १५वीं शताब्दी से बहुत पहिले भारतीय पूर्वी अफ्रीका में आना जाना रखते थे। वास्कोडिगामा ने मम्बासा के बन्दरगाह में भारत के बड़े २ जहाज़ों को देखा था और समुद्र के किनारे पर जो लोग आबाद थे वह रामायण और महाभारत की गाथायें सुनाते और बोलते थे।

इन उपरोक्त लेखों से सिद्ध होता है कि प्राचीन काल में हिन्दू लोग नयासा से विक्टोरिया नाइञ्ज़ा तक राज्य करते थे। इस में युगेण्डा, टांगानीका और केनिया के प्रान्त सम्मिलित थे। यदि वास्तव में उनका राज्य शासन न था तो उन्होंने उस द्वीप को चिरकाल तक अपना निवास स्थान क्यों बनाये रक्खा और अपने धर्म, सभ्यता तथा संस्कृति का प्रभाव और चिन्ह ऐसे सुरक्षित कैसे किये कि जिनकी जली हुई राख अब हमें फिर भड़कती और सुलगती हुई ज्वाला रूप में दिखाई देती है।

दूसरा अध्याय

अफ्रीका की जातियां और उनके रीतिरिवाज

जिस प्रकार भारत वर्ष में अनेक जातियां हैं और उनके रस्म व रिवाज भी भिन्न २ हैं, उनके रूप, रङ्ग, स्वभाव में अन्तर है

ऐसा ही पूर्वी अफ्रीका की अवस्था है। यहां भी भिन्न २ जातियों में भिन्न २ उप जातियां हैं। उनके रस्म व रिवाज और स्वभाव में भेद है। परन्तु भारत के समान कई बातों में समानता भी रखते हैं। बरटन महोदय अपनी पुस्तक " अफ्रीका की कहानी " में लिखते हैं कि मम्बासा मे उत्तर पूर्व भाग के लोग काले रंग के हैं उनमें गुदना गुदाने का रिवाज़ अधिक है वह अपने जिस्म पीठ के अंगों पर गोल चक्कर या फूल की तरह का गुदना गुदा लिया करते हैं। यह लोग बाल संवार कर तेल लगाकर शौकीनी पूरी कर लिया करते हैं। कई लोग गर्म पानी में लाल मिट्टी उबाल कर जिस्म पर साबुन की तरह मलते हैं। उनका स्वभाव चिर-चिरा होता है। कभी क्रोध में बैठे भयंकर रूप धारण किये होते हैं और कभी थोड़े समय में शान्त हो जाते हैं। स्वार्थी और लोभी हैं। अपने बचन के पक्के नहीं होते न दूसरों के उपकार का धन्य-वाद करेंगे और कृतज्ञता प्रगट करेंगे। मांस शराब के लिये बहुत उत्सुक रहते हैं। भीख मांगना बुरा नहीं समझते। अ थि सत् र नहीं जानते। कोई वस्तु बिना दाम लिये किसी को न देंगे। व्या-पारियों के साथ कुछ अच्छा बर्ताव करते हैं। परन्तु वह भी स्वार्थ-वश। शुष्क स्वभाव वाले हैं। दया भाव बिल्कुल नहीं जानते। यदि आज उन्हें कुछ सामान, द्रव्य मिल जावे तो कल की परवाह नहीं करते। न आगामी समय के कष्ट की परवाह करते हैं। यदि उनसे रास्ता पूछना हो तो जब तक कुछ उन्हें न दिया जाय वे न बतावेंगे। झूठ बोलना उनके लिये साधारण बात है। पड़ौसियों

की नक़ल उनके सामने करते हैं। अपने मेहमान से ज़रा सी बात पर बिगड़कर भाला बर्छी से आक्रमण कर देते हैं। उनकी भाषा सुहेली कहलाती है। पहिले बिल्कुल नंगे रहते थे अब वस्त्र पहनने लगे हैं। मारकनी, कांगी और चकनी पहनते हैं। बड़े मोल का कपड़ा जिसमें लाल नीली धारियां होती हैं अफ्रीकन सरदार अमीर और स्त्रियां उपयोग में लाती हैं। कुछ लोग शरीर को वृक्षों की छाल से ही ढांक लेते हैं। उनके भूषण कांच के दाने, पोत, मूंगा माला लड़ियां, हाथी दांत की बनी वस्तुयें, कौड़ी घोंघे, शङ्ख, लोहे पीतल और तांबे के तार, कबूतर के अंडे, लाल फूल कबोको अर्थात् दरियाई नील घोड़े की हड्डियां आदि होते हैं।

यह लोग नाच, गाने बहुत पसंद करते हैं। बांसरी बजाकर नाचते हैं। अपने त्यौहारों पर झुन्ड के झुन्ड मिलकर नाचते हैं। चांदनी रात को शनिवार के दिन और रविवार रात को गोमा करते हैं जो उनका उच्च कोटि का नाच होता है उसमें विभिन्न स्वांग बनाकर सात पुरुषों की कतार गोलाई में बना चक्कर लगाते हुये नाचते हैं। उन्हें ऐसा अभ्यास होता है कि यह अपना प्रत्येक अंग जिसे चाहें हिला सकते हैं। रान, उंगलियां जिस्म का कोई भाग जिसे हिलाना हो शरीर का वही भाग चलायमान होगा।

प्रत्येक जाति का नाच भिन्न होता है। युरोप के लोग उन के नाच को देख कर चकित रह जाते हैं। उनका नाच बाकायदा वैज्ञानिक आधार पर होता है। इससे पता चलता है कि यह लोग सभ्यता से शून्य न थे। तीर कमान, भाला, एक छोटी सी तलवार

कृपान उनके शस्त्र हैं। दोनों तरफ की धार वाला छुरा भी रखते हैं। एक दूसरे को मिलाते समय जाभो (नमस्कार) करते हैं। किसी के मकान पर जायेंगे तो होडी होडी करके पुकारते। अर्थात् क्या मैं भीतर आऊं। मुट्ठी भर चावल के बदले हाथी दांत देदेते हैं। दीपक जलाना नहीं जानते। रात को जलती लकड़ी लेकर चलते हैं। पारिवारिक प्रेम नहीं जानते। पिता पुत्र में प्रेम नहीं होता। स्त्री पुरुष परस्पर सख्त गालियाँ देते हैं। किसी सम्बन्धी के मरने पर रोते नहीं। किसी को चेचक निकले तो जंगल में छोड़ आते हैं। धन संग्रह करना नहीं जानते। जो कुछ हाथ आया तुरन्त उड़ा देते हैं। विवाह बड़ी आयु में करते हैं। स्त्री का मूल्य भेड़ बकरियों या दस बल तक होता है। लड़कियां पंचायती मकान में जाकर पति पसन्द करती हैं। स्त्री पुरुष अपनी अपनी सम्पति पृथक रखते हैं। तलाक़ का रिवाज भी है। पति स्त्री के हाथ एक कड़ा लकड़ी का देता है। जो कि तलाक का चिन्ह है। तलाक होनेपर सन्तान पिताके पास रहती है सुलतान जन्जीबर की तीन हज़ार स्त्रयां थीं। अफ्रीकन लोगोंमें व्यभिचार कम है। हिन्दुस्तानी व गोरे लोगों ने अफ्रीकन स्त्रियों से समागम प्रारम्भ कर दिया है।

टांगानीका का राजा अपनी प्रजा को एक से अधिक विवाह नहीं करने देता। यदि कोई स्त्री पुरुष व्यभिचार करते हुये पकड़ा जाय तो उन्हें क़त्ल किया जाता था या आंखें निकलवा दी जाती थीं कई जातियों में व्यभिचार करने वाला एक जोड़ा

वलों का दण्ड स्वरूप अदा करता था। यदि न दे सके तो उसे बेचकर जुर्माना वसूल कर लिया जाता था।

बरटन साहब वगोगो जाति के सम्बन्ध में लिखते हैं कि स्त्रियां अच्छे रूप वाली अन्य जाति के पुरुषों पर मोहित हो जाती हैं और अपने पति को सूचना देकर उनके साथ समागम करती हैं। दामाद अपनी साली के साथ समागम करने में संकोच नहीं करता। वीनम बेज़ी जातिकी स्त्रियां जंगल में जाकर बच्चा जनती हैं। बच्चे को हिरन की खाल में लपेट तर पीठ पर डालकर घर लाती है। साथ ही लकड़ियों की गठरी भी उठा लाती हैं बच्चे को एक साल दूध पिलाती हैं। जब बच्चा ४ साल का हो जाता है। उसे धनुष विद्या सिखाई जाती है। नाम करण संस्कार अरबी लोगों के समान करते हैं। यदि स्त्री बिना सन्तान के मर जाय तो पति अपने श्वसुर से दिया हुआ रूमाल वापिस लेता है यदि बच्चा पैदा होते ही मर जाये तो लड़की के मां बाप दामाद से कुछ तावान लेते हैं। यदि जोड़ा सन्तान पैदा हो तो उसे मनहूस समझ कर कुछ जातियां दोनों बच्चों को और कुछ एक बच्चे को मार डालती हैं और मरे बच्चे के बराबर एक लकड़ी पहिले बच्चे के साथ रखती है। यह बातें सन् १८६० तक अधिक प्रचलित थीं अब बहुत घटती जा रही हैं। ज्यों २ यह लोग गोरे और हिन्दुस्तानियों के संसर्ग में आते जाते हैं सभ्यता सीखते जाते हैं।

गोरे और हिन्दुस्तानियों के साथ समागम से जो सन्तान

उत्पन्न होती हैं वह मुशर्रत (मिश्रित) कहलाती है। उनके स्वभाव व विचारों में प्रत्येक संस्कार का प्रभाव होता है। हिन्दुओं की ऐसी सन्तान ईसाई या मुसलमान बनती हैं क्योंकि वह ऐसी सन्तान को अपनाते नहीं। तम्बाकू, भंग, गाँजा और बीयर शराब पीने का रिवाज़ आम है। कई लुटेरी जातियाँ अब भी हैं जो अजनवी लोगों को लूट लेती हैं। इसलिये समूह बनकर चलते हैं। तावीज़, गंडे, भूत प्रेत टोने जादू सब कुछ मानते हैं। मुर्दे को खड़ा करके गाड़ते हैं। यदि कोई बड़ा आदमी मर जावे तो एक भेड़ और एक बैल को देवता के निमित्त कतल करके उसकी खाल को मुर्दे से लपेट कर गाड़ते हैं। राजा के शव को बैठा कर दायें हाथ में तीर और कई बर्तन तथा तीन रानियों को जीवित ही गाड़ देते हैं। बड़वे जाति का यदि सरदार मर जावे तो उसके साथ जीवित स्त्री पुरुष को जो गुलाम हों गाड़ दिये जाते हैं। परन्तु अब यह रिवाज़ बहुत कम हो गया है। अंग्रेज़ों और पादरियों ने इस रिवाज़ को कम करने में बड़ा पुरुषार्थ किया है। गुलामी की प्रथा बहुत प्रचलित थी। अब सर्वथा बन्द हो गई है। जञ्जीबार में हर साल २० हज़ार गुलाम लाये जाते थे। हाथी दांत का व्यापार इन जातियों में बहुत प्रचलित था। अरबी लोगों ने खाल और कपड़े का व्यापार प्रचलित किया। बरटन महोदय लिखते हैं कि जब एराबी लोगों ने वहां प्रवेश किया तो वहां के लोग मोटे कपड़ों पर जो भारत के लोग कच्छ प्रान्त से लाते थे,

सन्तुष्ट हो जाते थे। उनकी कई प्रसिद्ध जातियों के नाम बजरामो वर्कोको, बजरहा, बड़वे, सोहाली आदि हैं। जो कुछ सभ्य हो गये हैं। वह अंग्रेज़ों और हिन्दुस्तानियों के घरों में नौकर रहकर काम करते हैं। आज्ञाकारी और महनती होते हैं घर के समस्त कार्य करते हैं। काममें नहीं हिचकते और न जी चुराते हैं। चोरी का स्वभाव दूर नहीं होता। जिन्हें सरकारी नौकरी मिल जाते और रुपये पर अधिकार हो, हड़प कर जाते हैं। जबाव मांगने पर कह देते हैं सजोई (हमें क्या खबर) कैद से भयभीत नहीं होते। अदालत में साफ इकबाल कर लेंगे और कह देंगे हमने रु० खा भी लिया है। यदि यह रुपया उड़ाने वाले न होते तो सरकार हिन्दुस्तानियों को हटा कर सब सरकारी विभागों में इन्हीं को भरती कर लेती।

तीसरा अध्याय

पश्चिमी जातियों का आगमन तथा उनका अधिकार जमाना

सन १८०७ में सैयद सुलतान जो जञ्जीवार और यमन का हाकिम था मर गया। उसका पुत्र सैयद समीद तख़्त पर बैठा १८१० ई० में उसने जञ्जीवारमें अपनी राजधानी बनाई। मक्का और अन्य प्रान्तों में अपने सम्बन्धियों को राज्य सोंपा। १८५६ ई०

में वह गया। उसके दोनों पुत्रों में परस्पर झगड़ा हो गया। उन्होंने भारत के गवरनर जनरल लार्ड केनिङ्ग को अपना मध्यस्त नियत किया। १८६१ ई० में उसने जञ्जीबार और अरब के प्रान्त जुदा २ करार दिये। और मजीद को जञ्जीबार का राज्याधिकारी नियत किया। १८७० ई० में सैयद मजीद के स्थान में उसका भाई बरग़शाह तख्त पर बैठा। १८७२ ई० में बृटिश इंडिया स्टीम नैवीगेशन कम्पनी (British India Steam Navigation Co.) ने लंदन और बम्बई के बीच जञ्जीबार के मार्ग से जहाज़ चलाने का मार्ग निकाला। १८७७ ई० में कम्पनी के प्रधान सर विलियम मैकानन ने सैयद बरग़शाह से सत्तर साल के ठेके किराये पर जञ्जीबार का इलाका लिया परन्तु फारन आफ़िस (Foreign office) ने उसे अस्वीकार किया। १८८० से १८८५ ई० के बीच जर्मनी के समुद्री खोज करने वालों ने पूर्वी अफ्रीका के तट पर पग रक्खा और १६ फ़रवरी १८८५ ई० को जर्मनी के कैसर ने जर्मन उपनिवेश स्थापित करने वाली सभा को अफ्रीका में उपनिवेश स्थापित करने और व्यापार करने का आज्ञा पत्र दे दिया। उन प्रान्तों के लिये जो उस सभा ने सन्धी करके मूल निवासियों के राज्य अधिकारियों से प्राप्त किये थे। फिर बृटिश तथा जर्मन सरकार का परस्पर विरोध हो गया। परन्तु १ नवम्बर १८८६ ई० को निर्णय हो गया और सुलतान जञ्जीबार के जनपद और जर्मनी व बृटिश के सुरक्षित प्रान्तों की सीमायें पृथक निश्चित हो गई। २१ मई १८८७ ई० में सैयद बरग़शाह ने ईस्ट अफ्रीकन

बृटिश एसोसियेशन को पचास वर्ष के लिये सुगमतायें और अधिकार दे दिये जिन के द्वारा जञ्जीबार में कम्पनी को कर लगाने, कुर्की करने तथा भूमि बिक्री करने और व्यापार आदि करने का पूरा अधिकार मिल गया। साथ ही तमाम जुडीशियल (न्याय करने) और राजनैतिक अधिकारजो जञ्जीबारके सुलतान के थे उसकी ओर स कम्पनी को प्रयोग में लाने का अधिकार दिया गया। इस कम्पनी ने १८८७ ई० में अफ्रीका की भिन्न २ २१ जातियों के साथ सन्धियां कीं जिन के द्वारा २०० मील तक समुद्री तट के नगरोंमें देशी राजाओंसे इस कम्पनी को अधिकार मिल गये। आखिर १८ अप्रेल १८८८ ई० को इम्पीरियल बृटिश ईस्ट अफ्रीका कम्पनी २४ हज़ार पौंड की पूंजी से देशी अध्यक्षों से प्रान्त लेने और प्राप्त किये प्रान्तों का प्रबन्ध करने के लिये नियत की गई। और नवम्बर १८८८ ई० को मल्का विक्टोरिया ने इस कम्पनी को चार्टर (आज्ञा पत्र) दिया। इस कम्पनी ने १८९० ई० में मम्बासा में सब से पहिली अदालत (न्यायालय) की स्थापना की। युगेण्डा को बृटिश सम्राट के प्रभावित प्रान्त के आधीन बना दिया उसका नाम British Sphere of influence बृटिश प्रभावित प्रान्त रक्खा।

कम्पनी का व्यय अधिक हो गया। विशेषकर अरबी लोगों की दास प्रथा बन्द करने के लिये कम्पनी को बहुत खर्च करना पड़ा। जो असबाब कम्पनी का युगेण्डा को काफले द्वारा जाता था उस पर बहुत खर्च करना पड़ता था। इस लिये कम्पनी को

रेल बनवाने की सूझी। लार्ड सालसबरी ने जो उस समय उपनिवेश मंत्री था, उचित समझा कि दास प्रथा रोकने के लिये रेल का जारी करना आवश्यक साधन होगा। इसके अतिरिक्त सरकार को पूर्वी तट पर समुद्री सेना का एक दस्ता रखना पड़ता था जिस पर एक लाख पौंड वार्षिक व्यय होता था। इस लिये सम्राट बृटानिया ने आज्ञा दी कि मम्बासा से विक्टोरिया नायञ्जा तक रेल बनाने के लिये २५ हज़ार पौंड व्यय किया जाय परन्तु सरकारी कोष से इस रकम के मिलने की आशा न पाकर पैमायश करने के लिए २० हज़ार पौंड व्यय करने की आज्ञा प्राप्त हुई। युगेण्डा में कप्तान मोगाड को सेना रखने का व्यय चालीस हज़ार पौंड वार्षिक देना पड़ता था। परन्तु सन् १८९१ ई० में हाउस आफ कामन्स ने रेलवे की पैमायश के लिये सहायता देने से इंकार कर दिया। इस लिये कम्पनी ने युगेण्डा को त्यागने का विचार कर लिया। इससे बृटानिया में सनसनी फैल गई क्योंकि इससे पादरियों को बड़ी हानि पहुंचती थी और बृटानिया के कई लोगों का व्यापार तथा कारोबार नष्ट हो जाता इस लिये चर्च मिशन की ओर से कई पादरी कम्पनी के डाइरेक्टरों से जाकर मिले और कहा कि कम्पनी को सोलह हजार पौंड दान के तौर पर दिया जाय जिससे एक वर्ष और युगेण्डा में वह ठहर सकें। इसलिये कप्तान मोगार्ड को समुद्री तार द्वारा सूचित किया गया कि अब दिसम्बर सन् १८९२ ई० तक वहाँ से लौटने का नाम न ले। आखिर मार्च सन् १८९२ ई० में पार्लियामेंट ने युगेण्डा रेलवे के

लिये २० हज़ार पौंड देना स्वीकार कर लिया। अगस्त सन् १८६२ ई० में पैमायश रेलवे समाप्त हुई। फिर २३ जनवरी सन् १८६३ ई० को पार्लियामेंट ने एक कमिश्नर गैराड पोर्टल को युगेण्डा के लिये नियत किया जो १६ मार्च को कम्पाला पहुंच गया और वहां उसने युनीयन जैक का झंडा गाड़ दिया। आखिर १५ जून सन् १८६३ ई० में युगेण्डा को सुरक्षित प्रान्त बना दिया गया और कम्पनी से चार्ज लेकर उसे पार्लियामेंट के आधीन कर दिया गया। इस में २२ हज़ार वर्ग मील भूमि सम्मिलित की गई शेष पर कम्पनी का अधिकार रहा। परन्तु पीछे कम्पनी ने ढाई लाख पौंड लेकर चार्टर वापिस कर दिया। पोर्टल महोदय के बलपूर्वक यत्न करने पर यह रेलवे लाइन सन् १६०३ ई० में सम्पूर्ण बनगई। उस पर कुल खर्च ८० लाख पौंड हुये। सर एडवर्ड गिर्ग गवर्नर केनिया की सम्मति सन् १६२६ ई० में यह थी कि ज़मीनों को बेच कर ४० लाख पौंड का ऋण उतार दिया जाय। आखिर १ जुलाई सन् १८६५ ई० में फारन आफिस ने बाक़ायदा इम्पीरियल बृटिश ईस्ट अफ्रीका कम्पनी से इस प्रान्त का चार्ज ले लिया और आर्थर हार्डिङ्ग सरकार की ओर से एजएट नियत हुआ जो जञ्जीबार में रहते हुये उसके शासन का प्रबन्ध करता रहे। सन् १६०१ ई० में लार्ड लम्सैन्डों ने एक रुपया प्रति देसी मकान कर लगा दिया और सन् १६०३ ई० में दो रुपया कर दिया। कई स्थानों में रुपये के बदले उसकी भेड़ स्वीकार कर ली जाती थीं। सन् १६०७ ई० में हर खजूर के वृक्ष पर जिससे नशा और मावा

निकलता था एक रुपया टैक्स लगा दिया गया और मसाई जाति पर विशेष टैक्स लगाने का विचार हुआ। परन्तु पार्लियामेंट ने उसे स्वीकार न किया। झोंपड़ी टैक्स अधिक कर दिया गया। अर्थात् २० शिलिङ्ग वार्षिक कर दिया गया। या टैक्स न देने पर मुफ्त सरकार की एक मास तक मज़दूरी करे।

चौथा अध्याय

भारतीयों का आगमन और उनसे बर्ताव

मैं पहिले वर्णन कर चुका हूं कि जब मम्बासा से विक्टोरिया नायञ्जा तक रेल बनने का काम प्रारम्भ हुआ तो अंग्रेज़ों ने भारतीयों की आवश्यकता को अनुभव किया। यद्यपि भारतीय लोग इस से पूर्व व्यापार कार्य कई शताब्दियों से वहां करते थे परन्तु अब तक न तो मज़दूर की हैसियत से वहां आये थे न उनकी चिर स्थाई निवास करने की वहां आशा थी। सन् १८६५ ई० से जब से रेल का काम प्रारम्भ हुआ तो हज़ार २ आदमियों से भरपूर भारतीय लोग जहाज़ों में आने लगे। और चालीस हजार के लगभग भारतीय केवल रेलवे विभाग के कार्यों के लिये बुलाये गये। इस तरह से भारतीय वहां धीरे २ अधिक होते गये। सरकार ने भी हर प्रकार की उन्हें सुगमता दी। आबाद होने के लिये सरकार ने भूमि दी। लार्ड सालसबरी ने तो हाउस आफ कामन्स

में अपने भाषण में यहां तक वचन दिया कि:—

We most confidently expect as an indispensible condition of the proposee arrangements that the colonial laws and their administeration will be such that Indian settlers who have completed the terms of service to which they agreed, as return for the expense of bringing them to the colonies, will be freemen in all respects in rights and previleges in no way inferior to those of any other class of Her Majesty's subjects.

अर्थात्-हम निश्चय रूप से आशा करते हैं कि उपनिवेशों के क़ानून और उनके राजनियम ऐसे होंगे कि जो भारतीय प्रवासा अपनी काम करने की अवधि समाप्त करने के पश्चात् उपनिवेशों में स्थाई रूप से आबाद होंगे उनके अधिकार महारानी विक्टोरिया की दूसरी प्रजा से कम न होंगे अर्थात् सब के साथ समानता से बर्ताव होगा। भारतीयों ने जो पुरुषार्थ और सेवा अफ्रीका में आकर की और जितना परिश्रम अफ्रीका के उन्नत तथा समृद्धिशाली बनाने में किया उसे कोई निरपक्ष और बुद्धिमान् गोरा इंकार नहीं कर सकता। मैं यहां दो चार प्रसिद्ध लेखकों और राज्याधिकारियों की सम्मतियां भी प्रकाशित करता हूं।

(३) पैरी जान्स्टन महोदय अपनी पुस्तक "केनिया में भारत निवासी" लिखता है:—

Indians cannot sufficiently be praised for

the way in which they are now developing Uganda creating trade where no trade existed, building hotels on once desolate parts of the white Nile. The Indians are circulating and creating trade with those who invited us here but our men are too indolent or too proud to develop the trade with them.

अर्थात्— जिस ढंग से यहां हिन्दुस्तानी युगेण्डा को उन्नत कर रहे हैं उसकी प्रशंसा नहीं की जा सकती। जहां पहिले व्यापार न था वहां व्यापार की स्थापना कर रहे हैं सफेद नील के सुनसान स्थानों में होटल खडे कर रहे हैं। हम कदापि भूल नहीं सकते कि युगेण्डा और अफ्रीका के अनेक भागों में अधिक मनुष्य हैं जिनका दावा इस भूमि को अपने अधिकार में रखने का है जिसका निश्चय उन्हें उस समय कराया गया था जब कि उन्होंने केनिया में वृटिश संरक्षता को निमंत्रित किया था। यही लोग हैं जो इस समय व्यवहार की अवस्था उत्पन्न करने के साथ ही उसका विस्तार कर रहे हैं। परन्तु हमारे गोरे इतने अभिमान व प्रमाद में मग्न हैं कि ऐसे कामों में हाथ डालना नहीं चाहते। सब से पहिले भारतीय ही अग्रसर होते हैं फिर जर्मन लोग आगे बढ़ते हैं। जब व्यापार पूंजीपतियों के ध्यान देने योग्य हो जाता हैं तब अंग्रेज़ सरमायदार भी जा पहुंचते हैं।

(३) राबर्ट ब्राउन महोदय अपनी पुस्तक "अफ्रीका की कहानी" में लिखता है:—

To the Asiatic races mixed with the native stock belongs the future of this colony.

अर्थात्—एशिया की जातियां अफ्रीकन लोगों के साथ मिश्रण करके ही इस देश के भविष्य को उत्तम बना सकेंगी।

(३) सर जान कर्क ने सैन्डर्सन कमीशन के सम्मुख साक्षी देते हुये कहा।

But for the Indians we should not be here now It was entirely through being in possession of the influence of those persons Indian merchants that we were able to build up the influence that resulted in our possession as Protectorate.

यदि भारतीय लोग अफ्रीका में न होते तो हम वर्तमान समय में भी वहां न ठहर सकते। क्योंकि भारतीय व्यापारियों का ही प्रभाव है कि जिसके द्वारा हम वहां ऐसी उत्तम स्थिति बना सके कि आज हम इस देश के संरक्षक बन सकते हैं।

(४) विन्स्टन चर्चिल अपनी पुस्तक "अफ्रीका में मेरा भ्रमण" में लिखता है।

It is Indian trade who penetratingr in all sorts of places to which no whiteman could go or in which could earn living has developed the early beginings of trade and opened up the first slender means of communication with them.

अर्थात्—ये भारतीय व्यपारी हैं जो अफ्रीकाके सभी स्थानों में घुसेहुये अपनी जीविका कमा रहे हैं। यही वहां ऐसे दुर्गम स्थानों में डटे हैं जहाँ न तो गोरे लोग पहुंच सकते हैं न कमाई कर सकते हैं। भारतीयही अन्य जातियों की अपेक्षा अधिक पुरुषार्थी और उत्साही हैं इस देश में आरम्भिक व्यापार के अगवा और अन्य देशों के साथ राह व रस्म का मार्ग खोलने वाले हैं।

(५) पादरी एण्डरूज़ साहब जिसने दो तीन बार अफ्रीका की यात्रा करके वहां के भारतीयों की अवस्था की जांच की। अपने अनुभव से कहते हैं कि भारतीयों की सहायता से अंग्रेज़ों ने इस देश पर अपना अधिकार जमाया और उसे सुरक्षित बनाया।

(६) बैकर महोदय ने जीवन जी को विलायत से लिखा था कि आप लार्ड मिलनर को सूचित कर दें कि जब युगेण्डा रेल बनाने का विचार हुआ था उसका विशेष उद्देश्य यह वर्णन किया जाता था कि भारत के जिन प्रान्तों में अधिक मनुष्य संख्या है उनको अफ्रीका में लाकर बसाया जाय।

इन प्रमाणों से सिद्ध होता है कि भारतीयों ने अफ्रीका की उन्नति करने और यहां अंग्रेज़ी राज्य के पांव जमाने में कितना प्रशंसनीय कार्य किया। सोडान में भारतीयों ने किस कदर सरकार की सहायता की उस पर पैरी जान्सटन महोदय लिखते हैं कि मैं ही सब से पहिले भारतीय सिपाहियों को सोडान में ले

गया था। चाहे वह संख्या में कम थे परन्तु उन्होंने हमारी कठिनता को हल कर दिया। सिख सिपाहियों ने अरब लोगों की शक्तिशाली क्रान्ति को दबा लिया और थोड़े समय में सुडान के राज्यविद्रोह की समाप्ति कर दी। "केनिया में भारत निवासी" देखो।

साथ ही मलिक मोहम्मद हसीन अफ्रीका निवासी का भाषण जो उसने सन् १९२९ ई० में कमीशन के सम्मुख किया, पढ़ने योग्य है। उसने बताया कि सन् १९१४ ई० में जब जर्मनी और अंग्रेज़ों का युद्ध हो रहा था तो भारतीय सेना ने अफ्रीका में भयभीत अंग्रेज़ों के बच्चों और स्त्रियों की भली प्रकार से रक्षा की। परन्तु अब सुनिये—

भारतीयों के साथ क्या बर्ताव है ?

सन् १९०८ ई० तक पूर्वी अफ्रीका में किसी प्रकार का अत्याचार न था। परन्तु रेल तैयार हो जाने पर सरकार ने गोरे लोगों को अफ्रीका में जमीदार बनने और वहां बसने के लिये प्रेरणा की। इस लिये ये लोग इंगलिस्तान से चलकर अफ्रीका में खूब फैलने लग गये। जब उन्होंने देखा कि हिन्दुस्तानी लोग यहां समृद्धिशाली हो गये हैं तो ईर्षा द्वेष के वशीभूत होकर विचारने लगे कि इन दुष्टों को यहां से निकालकर अलग करें। सन् १९१२ ई० में हर मनुष्य पर एक पौंड वार्षिक टैक्स लगाया

गया। उस समय २७ हज़ार भारतीय केनिया कालोनी में थे। अर्थात् ४ लाख रुपया उनसे जज़िया स्वरूप प्राप्त किया गया। मूल निवासियों, फ्रैंच, पुर्तगीज़ और गोवा के लोगों पर टैक्स न था। क्योंकि गोवा यद्यपि भारत का अंग है परन्तु वहां पुर्तगीज़ राज्य है इस लिये वहां के हिन्दुस्तानी पुर्तगाल प्रजा समझे गये। भारतीयों ने इसका बड़ा विरोध किया। अमीर गरीब सब पर ये टैक्स समान था। सन् १८९५ ई० में कुल केनिया उपनिवेश की भूमि राज भूमि (Crown land) बना दी गई। अब युरोपियन लोग २ हज़ार वर्ग मील भूमि के अधिपति हैं। हिन्दुस्तानी लोग केवल २२ वर्ग मील भूमि के मालिक हैं। अफ्रीका में ३० लाख मुसलमान हैं। फौज में मुसलमानों को भी भरती किया जाता है।

इसके पश्चात् और कई कड़े कानून भारतीयों के विरुद्ध बनाये गये। अन्त में गोरे लोगों ने मिलकर एक सभा बनाई जिसका नाम युरोपियन ऐसोसियेशन रक्खा। इस में एक प्रार्थना पत्र (Memorial) बनाकर विलायत की राज-सभा को भेजा उसका नाम युरोपियन ऐसोसियेशन शरायतनामा रक्खा। इस में निम्न लिखित प्रार्थना की गईः—

(१) चूंकि हमारी सभ्यता और उन्नति के जातीय आदर्श हमारी ईसाई पश्चिमी सभ्यता में ही निर्धारित हैं और ये हमारा कर्तव्य है कि हम इस बात का निश्चय करें कि जो कुछ इसमें उत्तम बातें हैं वह जागृत अफ्रीका निवासियों की आवश्यकताओं

के लिये प्रकाशित करें। चूँकि भारतीय लोग ऐसी सभ्यता का अनुकरण करते हैं। जो पूर्वी है और अनेक विचारों में हमारी सभ्यता के विपरीत है। उनका सामाजिक आचार व्यवहार और व्यवस्था इन्हीं अफ्रीकन मूल निवासियों के संसर्ग में अधिक लाते हैं। और इस तरह उन्हें व्यक्तिगत भारतीय प्रभाव के आधीन कर देता जोकि पश्चिमी आदर्शों के सर्वथा विरुद्ध और हानिकारक है। इसलिये हमारी प्रार्थना है कि एशियाटिक लोगों को बोट (राय) देने का अधिकार देने से गोरे लोगों को बहुत हानि और दुख पहुंचेगा इसलिये न तो उन्हें राय देने का अधिकार दिया जाय न ही उन्हें नगरों में भूमि खरीदने की आज्ञा दी जाय, सिवाय इसके कि थोड़े समय के लिये वह भूमि किराये पर ले सकें। न एशियाई लोगों को सरकारी नौकरों में प्रविष्ट किया जाय। साथ ही ऐसे साधन उपयोग में लाये जायं जिनसे भारत के लोग अपने देश से प्रस्थान करके इस देश में प्रवेश न कर सकं जिससे पश्चिमी सभ्यता का यह मज़बूत दुर्ग जो मध्य अफ्रीका में है अपने निकट के उपनिवेश दक्षिण अफ्रीका के साथ साथ एशियाई लोगों के सम्बन्धित राज्यनीति में खड़ा हो सके। डाल्मर महोदय ने इसके समर्थन में यहां तक लिख दिया कि बृटिश राज्य ईसाई मत का समर्थन करने और पश्चिमी सभ्यता का प्रचार करने ही के लिये स्थापित है।

(२) अफ्रीका में बृटिश राज्य का आदर्श यह है कि अफ्रीकन मूल निवासियों को पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव और

संसर्ग में लाया जावे और उनपर पूर्वी सभ्यता का रंग न चढ़ने दिया जावे।

(३) यह हमारी तरफ़से राजद्रोह करना होगा कि यदि पूर्वी अफ्रीका का कोई भाग पश्चिमी प्रभाव के अतिरिक्त किसी अन्य देश या जाति के प्रभाव में आजावे।

(४) बृटिश राज्य की सबसे अधिक बल वर्द्धक शक्ति यही है कि पश्चिमी सभ्यता की स्थापना और वृद्धि ही प्रान्त में की जावे।

(५) यह हमारी पश्चिमी सभ्यता ही है जो हम मूल निवासियों पर प्रभावित कर रहे हैं और अपनी आवश्यकताओं के अनुकूल उन्हें ढाल रहे हैं। मैं यह नहीं कह सकता कि हमारी सभ्यता पूर्वी सभ्यता से उच्च कोटि की है परन्तु हमारा आदेश और सिद्धान्त यह होना चाहिये कि चाहे हमारी सभ्यता उत्तम या निकृष्ट हो हमें उसे ही अफ्रीकन मूल विवासियों में आच्छा-दित और विस्तृत करनी चाहिये। पस पश्चिमी आदर्श और मूल निवासियों के लिये पथ प्रदर्शक और अगवा होने चाहिये जो अधिकारी इम्पीरियल (राजनीति) के जिम्मेवार हैं उन्हें उचित है कि ऐसे आदर्शों को कार्य रूप में लावें।

मेजर ग्रोगनने यहां तक स्पष्टरूप से कर दिया कि दक्षिण अफ्रीका ने भारतीयों के लिये सामने का फाटक बन्द किया है हम उनके लिए पीछे का फाटक बन्द करदें।

अब ज़रा उस कमीशनकी रिपोर्ट भी सुनिये जो १९१९ई० में अफ्रीका की आर्थिक अवस्था की जांच के लिये नियत की गई थी। इस कमीशन ने अपनी रिपोर्ट में तीन विषयों पर बल पूर्वक लिखा है।

(१) भारतीय लोग अफ्रीका में क्लर्क, राज, तुर्कबान, बढ़ई, मशीन चलाना आदि सभी काम करते हैं और उनके करने में निपुण हैं परन्तु यदि अफ्रीका निवासियों को इन कामों में अभ्यास कराया जावे तो यह काम वह लोग भी संतोषजनक कर सकेंगे चूंकि भारतीय लोग संगठित होकर यह कार्य करते हैं इस लिये वह अफ्रीकन लोगों को आगे नहीं बढ़ने देते और अफ्रीकन लोगों को उन्नति करने और योग्य बनने का अवसर भी नहीं प्राप्त होता इसलिये भारतीयोंकी उपस्थिति में अफ्रीकन लोगों को उन्नति करना कठिन है।

हम यह बात मानते हैं कि भारतीयों ने इस देशमें आकर व्यापार फैला है मूल निवासियों की आवश्यकताओं को अधिक कर दिया है और उन्हें लेनदेन करना सिखाया है ऐसे कार्य के लिये वह धन्यवाद और प्रशंसा के योग्य है परन्तु यदि हम मूल निवासियों का साहस बढ़ाते और उनकी सहायता करते तो यह सब काम वह लोग भी कर सकते हैं इसलिये प्रत्येक विभाग में जो भारतीयों का प्रभाव अधिक जमा हुआ है उचित नहीं है किन्तु गोरे और अफ्रीकन लोगोंको उनके मुकाबलेमें आना पड़ता है और वह मुकाबले में पूरा बल दिखाते है।

(२) शारीरिक अवस्था में भारतीय आरोग्य नहीं हैं क्यों कि वे आरोग्यता के नियमों का पालन नहीं करते। न वे अपने शरीर या घरों में शुद्धता रखते हैं।

(३) उनका आचरण भी भ्रष्ट है इस लिये अफ्रीकन उनके संसर्ग में आने से दुराचारी बन जाते हैं। साथ ही भारतीय जुर्म फैलाने वाले हैं। इसलिये यहां भारतीयों का निवास करना मूल निवासियों की उन्नति, सदाचार तथा आरोग्यता के लिये अत्यन्त हानिकारक है।

एण्डरूज़ महोदय ने इस पर जांच करके गोरे लोगों को खूब डाटा है उनके तमाम मिथ्या विचारोंको रद्द करके लिखा है कि जहां कहीं भारतीय लोग गये अफ्रीकन युरोपियन की अपेक्षा भारतीयों से अधिक सत्सङ्ग और प्रेम करते हैं। उन्होंने अफ्रीकन लोगों को शिल्पकारी सिखाने में तमाम शिल्पकारी के स्कूलों और कारीगरी के शिक्षणालयों से अधिक काम कर दिखाया है। ऐसा ही भारतीय व्यापारियों ने अफ्रीकनों को व्यापार के काम में चतुर बना दिया है। और लेनदेन के गुप्त भेदों को वता दिया है। इस प्रकार महोदय एण्डरूज़ ने कई निरपक्ष गोरे लोगों के व्यान लेकर उनकी साक्षी से सिद्ध किया है कि भारतीयों ने अफ्रीकनों को हर प्रकार से लाभ पहुंचाया है। अफ्रीकन लोग गोरों की अपेक्षा हिन्दुस्तानियों से धन्धे, हुनर और व्यापार का काम और अन्य सामाजिक धन्धे सुगमता और शीघ्रता से सीख सकते हैं। अन्त में उनकी सम्मति है कि उन्नतिशील समझदार

युगेण्डा के अफ्रीकन भारतीयों के यहां रहने की पुष्टि करते हैं। भारतीय हर प्रकारसे उनकी सहायता करते हैं। इसलिये अफ्रीकन चाहते हैं कि भारतीय हमारे साथ सर्वदा निवास करें। एण्डरूज़ महोदय लिखते हैं कि मुझे चीफ़ जस्टिस युगेण्डा ने और वहां के सुलतानने अपने लेख दिखाये जिसमें उन्होंने सरकार बृटानिया को स्पष्ट लिखा कि युगेण्डा की हार्दिक इच्छा है कि भारतीय लोग उनके बीच में रहें क्योंकि उन्होंने इस देश का बहुत भला किया है। वह यह चाहते हैं कि उनके देशमें और भी भारतीय आकर निवास करें। चीफ जस्टिस कौंसिल अफ्रीकन ने यहां तक कहा कि अगर हिन्दुस्तानी लोग यहां से चले गये तो हम वृक्षों की खाल पहिना करेंगे।

एक नवयुवक युगेण्डा ने यहां तक कह दिया कि हम तो यह आशा करते हैं कि भविष्य काल में भारत हमारी सहायता करेगा।

भारतीयों के सदाचार के सम्बन्ध में डाक्टर कुक ने जो २० वर्ष से अफ्रीका में अपना अनुभव रखता है और पूर्वी अफ्रीका में प्रसिद्ध हैं कमीशन के सम्मुख निरभयता से स्पष्ट कहा कि ने भारतीयों को सब जातियों से अधिक सदाचारी अनुभव किया है। एण्डरूज़ महोदय गोरों के आचार के विषय में वर्णन करते हैं कि अफ्रीका में गोरों का आचरण सदा से ही भ्रष्ट चला आया है। इस देश में उनका इतिहास अपराधों से भरा हुआ और रक्त से रंगा हुआ है। यथार्थ में यह देश सभ्य कहलाने वालों

का स्थान नहीं रहा है। गोरे अफ्रीकन स्त्रियों के साथ पशुवत व्यवहार करते हैं परन्तु भारतीय मनुष्यता से कदापि नहीं गिरते भारतीयों के शुद्ध चरित्र मिलनसारी और सहानुभूति के गुणों के कारण अफ्रीकन उनका सन्मान करते हैं। उनका वहां रहना ईश्वरीय संकेतपर नियत होता है। मानों अफ्रीकाके मूल निवासियों का संस्कार करने के लिये उनकी योजना हुई है।

माडरन रिविव्यू नवम्बर १९२० ई० अफ्रीकन लोगों के भारत के सम्बन्ध में निम्न लिखित शब्द हैं:—

Can India not give us from her store of learning? Can we not be tought by her; how to meet these problems which have arisen in Connection with the mighty material power of the west. will they not come to help us.

अर्थात्—क्या भारत हमें अपने ज्ञान के भण्डार से कुछ शिक्षा न देगा? क्या हम इससे शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते? हम इन कठिनाइयों का कैसे मुकाबला करें जो पश्चिम की प्राकृतिक शक्ति के सम्बन्ध से उत्पन्न हुई हैं। क्या भारत के लोग हमारी सहायता करने के लिये आगे न बढ़ेंगे? आगे चलकर एण्डरूज़ महोदय लिखते हैं कि जब मैं युगेण्डा में था तो एक भारतीय ज़मीदार के खेत में देखा कि एक हज़ार अफ्रीकन लोग मज़दूर का काम कररहे थे। वह बड़े प्रसन्न थे। कभी किसी को शिकायत करने का अवसर प्राप्त न हुआ। परन्तु अंग्रेज़ इस भारतीय से

ईर्षा द्वेष करतेथे क्योंकि उसने मज़दूरी अधिक देकर भाव चढ़ा दिया था। ऐसा ही अन्य प्रमाणों से भी सिद्ध किया जा सकता है कि भारतीयों पर मिथ्या दोष लगाकर और बहाने बना कर उनको निकालने के लिये गुप्त रीति से साज़िश की जाती हैं। १९१९ ई० में सरकार ने एक कमीशन बैठाया, इस बात का पता लगाना था कि पूर्वी अफ्रीका को युरोपियन कौलौनी बनाया जावे या इसमें हिन्दुस्तानी लोग भी आबाद रहें। कमीशन में न तो किसी हिन्दुस्तानी को सभासद बनाया गया और न किसी हिन्दुस्तानी की साक्षी ली गई। इस लये उसने मन मानी रिपोर्ट करदी जो भारतीयों के सर्वथा विरुद्ध थी उसका परिणाम यह हुआ कि—

(१) भारतीय किसी ऊंचे अधिकार या ज़िम्मेदारी की नौकरी पर नियत न किये जायें प्रत्येक भारतीय चाहे कितना ही ज़िम्मेदारी का कार्य करता हो, आधीन समझा जाता है। उनका वेतन, एलाउन्स, पेंशन तथा छुट्टी के नियमोंमें वर्ण का भेद किया जाता है और गोरे अधिकारी से निकृष्ट दर्जे का समझा जाता है।

(२) बावजूद कमीशन और निरीक्षण अंग्रेज़ों के अनुभव की शिफ़ारसों के भी लैजिस्लेटिव कौंसिल (राज सभा) में इम्पीरियल गवर्नमेंट ने भारतीयों को वोट देने के अधिकार से वर्जित कर दिया है। इस समय केनिया की राज सभा में ३८ सभासद हैं उनमेंसे केवल ६ एशियाई हैं। अर्थात् ५ भारतीय और १ अरबी। यद्यपि भारतीयों की संख्या सारे उपनिवेश में ४०००० और गोरे १७००० हैं।

(३) नैरोबी में म्यूनिसपिल कौंसिल है। मम्बासा, नकोरो और अलडरियट में म्यूनिसपिल बोर्ड और दूसरे नगरों में टाउनशिप (Town ship) हैं। नैरोबी की म्यूनिसपिल कमेटी में ६ निर्वाचित यूरपीयन और ७ नामज़द भारतीय सदस्य हैं, दो राज्य अधिकारी और १ डिस्ट्रिक्ट कौंसिल का प्रतिनिधि कुल १६ सदस्य हुये। चूंकि ईस्ट इंडियन अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस ने म्यूनिसपेलिटी और कानूनी कोंसिल में साम्प्रदायक प्रतिनिधि के तरीके को स्वीकार नहीं किया इस लिये भारतीय सभासदों को भी गोरे स्वयं नियत करते हैं। नैरोबी में भारतीयों की संख्या भी अधिक है और सरकार को कर भी अधिक देते हैं परन्तु फिर भी १६ सभासदों में से ७ भारतीय नियत किये जाते हैं।

(४) गवरनर की एक्ज़ीक्यूटिव कौंसिल (राज्य प्रबन्ध के सभा) में १२ मैम्बर हैं जिसमें से ८ राज्य अधिकारी दो गोरे नियत किये जाते हैं एक अफ्रीकन मूल निबासी और केवल एक भारतीय प्रतिनिधि लिया जाता है।

(५) गोरे लोगों के मुकद्दमों के लिये जूरी बैठती है भारतीयों के लिये असेसर बैठते हैं।

(६) जेलखानों का निरीक्षण करने के लिये कोई मैम्बर हिन्दुस्तानी नियत नहीं किया जाता।

(७) सब से उत्तम कृषि भूमि ऊंचे पर्वत पर है जो ऊंची भूमि कहलाती है वह सब गोरे लोगों को देदी गई हैं। भारतीय लोग गोरे लोगों से या सरकार से यहां भूमि खरीद नहीं सकते।

(८) डैफरिन फ़ोर्स रक्षा करने वाली सेना में भारतीयों को सम्मिलित नहीं किया जाता। इनके अतिरिक्त निम्न लिखित सामाजिक बाधायें भी हैं :—

(१) नगरों में युरोपियन लोगों और भारतीयों के निवास स्थान पृथक पृथक कर दिये गये हैं।

(२) जिन होटलों के अध्यक्ष गोरे लोग हैं वह भारतीयों को अपने होटलों में नहीं घुसने देते। यही दशा क्लब और आनन्द के स्थानों की है।

(३) जो संस्थायें अन्य देशों में साधारण जनता के उपयोग के लिये हैं यहां पर वे गोरे लोगों के लिये विशेषतया पृथक कर दी गई हैं। जैसे रायल ईस्ट अफ्रीकन ओटो मोबायल एसोसियेशन, ऐरो क्लब (Aero Club) आदि, विशेषतया यूरोपियन लोगों के लिये हैं। भारतीय उनमें सम्मिलित नहीं हो सकते।

(४) भारतीय रोगी केवल अफ्रीका के अस्पतालों में प्रविष्ट हो सकते हैं। गोरे लोगों के अस्पतालों में नहीं जा सकते।

(५) शाही नाच (State ball) जिसमें गवरनर और राजवंश के लोग सम्मिलित होते हैं केवल युरोपियन जनता के लिये निश्चित (Reserve) हैं। जब प्रिन्स आफ वेल्स १९२९ ई० में यहां पधारे थे उस समय इस नियम को पूर्ण रीति से उपयोग में लाया गया था अर्थात् किसी भारतीय को किसी नृत्य सभा में निमंत्रित या सम्मिलित नहीं किया गया। अस्तु।

जिन भारतीयों ने अपना रक्त पसीना बहाकर इस देश को आबाद किया अपनी जान न्यौछावर की, रेल तैयार की आज उस

से अछूत पारिया जाति के समान बर्ताव किया जाता है और सब सरकारी विभागों में उन्हें पृथक किया जा रहा है। किसी युरोपियन अधिकारी को नहीं हटाया गया। उसका परिणाम ये हुआ कि आधे से अधिक भारतीय अब नौकरी से हट चुके हैं। भविष्य के लिये भारतीय मुलाज़िमों के लिये कड़ी शर्त लगाई जा रही हैं। और सब रियायतें बंद की जा रही हैं। अब उनके लिये मुस्तकिल मुलाज़मत को बंद किया जा रहा है। इस लिये जो भारतीय मुलाज़िम वर्तमान समय में हैं हर समय भयभीत रहते हैं कि न मालूम कब हमें पृथक कर दिया जाय। इस प्रकार से भारतीय लोग कष्ट का जीवन अफ्रीका में व्यतीत कर रहे हैं अब नई इन्कम टैक्स की तजवीज की जा रही है जिससे भारतीयों को और भी अधिक हानि पहुंचेगी।

पांचवां अध्याय

आर्य समाज नैरोबी का वृतान्त

मैं प्रथम कह चुका हूं कि पूर्वी अफ्रीका की केनिया कौलोनी में भारत के लोग अधिकतया १८८५ ई० से आना प्रारम्भ हुये मज़दूर व कुली हज़ारों की संख्या में रेल बनाने के लिये भारत से बुलाये गये। उनके साथ साथ क्लर्कों व अन्य मुलाज़मों की भी आवश्यकता पड़ी। पंजाब से अधिक संख्या में नवयुवक प्रत्येक काम में भरती हुये। सरकार ने भी उनको बहुत माकूल वेतन

दिये। यहां तक कि साधारण इंट्रेन्स तक शिक्षित युवक १५० शिलिङ्ग मासिक पर नौकर रक्खे जाते थे। सरकार इस इलाके को आबाद करने के लिये रुपया खर्च करने में संकोच नहीं करती थी। इस लिये पंजाबी लोग चालीस हज़ार के लगभग अफ्रीका में पहुंच गये। चूंकि वेतन अच्छा था, मज़दूरों की मज़दूरी की भारत से चौगुनी थी। पहिले कभी घर से बाहर न निकले थे। इतना रुपया उन्हों ने देखा न था। यहां आकर प्रलोभनों में पड़ गये। और पश्चिमी सभ्यता की लहर में बहने लगे। मांस खाना शराब पीना, जुआ खेलना, व्यभिचार करना, श्रृंगार और फैशन परस्ती उन्होंने अपना कर्तव्य बना लिया। इस प्रकार भारतीय नवयुवक विषयासक्त हो गये। और अपने सदाचार, धर्म और सभ्यता को तिलाञ्जलि दे रहे थे। निकट था कि भारतीय लोग बोरबों द्वीप के समान भारतीय सभ्यताको परित्याग करके ईसाइयों में मिल जुल जाते परन्तु कुछ ऐसे नवयुवक भी आ पहुंचे जिन के अन्दर भारत माता से प्रेम था। और आर्य समाज से सम्बन्ध रखने वाले थे। इनमें सब से अधिक पुरुषार्थ और जोश के पुतले बद्री दास जी थे। पहिले तो आप ने कुछ समय के लिये अपने मकान पर निमन्त्रित करके गृह-उपासना तथा हवन शुरू किया। जब नवयुवकों का कुछ ध्यान इधर हो गया तो आपने अगस्त १९०३ ई० में आर्य समाज की स्थापना करदी। यह समाज रेलवे कारटर्स में लगती रही पहिला प्रधान म० इन्द्र सिंह और मन्त्री म० बद्री दास जी नियत हुये। साप्ताहिक सत्संग बारी बारी से

लोगों के मकान पर होता रहता था ।

दिसम्बर १६०४ ई० में सब से पहिला जलसा बा० वजीर चन्द ठेकेदार के स्थान पर हुआ और वहां ही मन्दिर बनवाने के लिये अपील की गई । उदारचित भाइयों ने आधी तनख्वाह एक मास देने का बचन दिया । इस प्रकार अधिकारियों का साहस बढ़ गया और भूमि अध्यक्ष से प्रार्थना की गई कि वह आर्य समाज के लिये कुछ भूमि का टुकड़ा दे देवे । चुनाचे भूमि मिलने पर शीघ्र ही टीन की चादरों का मन्दिर बनवाया गया । जो ५६ फिट लम्बा और ५४ फिट चौड़ा था । इस प्रकार छः साल तक समाज का कार्य टीन के छप्परों में होता रहा । फिर पक्का मकान बनवाने का बिचार किया गया । अपील करते ही कई हज़ार रुपया एकत्रित हो गया । अधिकारी लोग चार वर्ष तक मन्दिर के पूर्ण करने में उद्योग करते रहे । अन्त में १६१२ ई० में महाराज बड़ौदा के भ्राता राजा सम्पत राव के शुभ हाथों से जो अकस्मात् अफ्रीका की यात्रा को आ रहे थे मन्दिर की नींव रखाई गई । और १६१६ ई० में मन्दिर सम्पूर्ण बन गया । भारत के किसी योग्य विद्वान के आगमन में मन्दिर प्रवेश संस्कार १६१८ ई० में कराया गया । यह मन्दिर बड़ा विशाल और सुन्दर बना हुआ है । ऊपर स्त्रियों के बैठने के लिये गैलेरी बनी हुई है । उपदेशक के बैठकर प्रचार करने के लिये आंगन में ऊंचा स्थान बना हुआ है । भारत के अच्छे २ मन्दिरों का मुक़ाबला करता है यात्रियों के लिये १३ कमरे बने हुये हैं । बाहर से आने वाले यात्रियों को बड़ा आराम

मिलता है। पुस्तकालय और वाचनालय का अति उत्तम प्रबन्ध है। हाल में ६०० मनुष्य आराम से बैठकर भाषण सुन सकते हैं। जब आर्य समाज ने अनुभव किया कि यहां भारतियों की सन्तान के लिये शिक्षा का प्रबन्ध नहीं है तो सब से पहिले आर्य समाज ने पुत्रियों को शिक्षा के लिये प्रबन्ध करने का यत्न किया चुनाचे १६१० ई० में पहिली आर्य पुत्री पाठशाला आर्य समाज नैरोबी ने स्थापित की। उस समय सरकार की ओर से स्त्री शिक्षा या लड़कों की शिक्षा का प्रबन्ध न था। हिन्दू लोगों ने बड़ा विरोध किया और कई प्रकारके दोष लगाये और पुत्री शिक्षा के विरुद्ध बाधा डालने में कोई कमी न छोड़ी परन्तु आर्य समाज दृढ़ता के साथ अपना कार्य करता रहा। १६२२ ई० में सरकार से किराये पर भूमि लेकर उस पर पुत्री पाठशाला का मकान बनाया गया जिसमें छः विशाल कमरे हैं। व्यायाम शाला भी है। व्यायाम का उत्तम प्रबन्ध है। पुत्री पाठशाला में हिन्दी अंग्रेज़ी की शिक्षा के साथ साथ धार्मिक शिक्षा, बाजा बजाना, दस्तकारी, हर प्रकार की घरेलू शिक्षा भी दी जाती है। लड़कियों को सादा उच्च बनना सिखाया जाता है।

शनैः२ आर्य समाज का ऐसा प्रभाव पड़ा कि अब सरकार ने भी पुत्री पाठशालायें खोलदी हैं। ऐसे ही गुजराती, सनातनी, सिक्ख और मुसलमान भाइयों ने भी अपनी पाठशालाये खोल दी हैं। परन्तु फिर भी आर्य सामाजिक पाठशाला सर्वोच्च समझी जाती है। भारतीय दर्शक बड़ी प्रशंसा करते हैं और सम्मति

पुस्तक में अपनी उत्तम२ सम्मतियां लिख जाते हैं। पं० बद्रीदास रेलवे में बड़े उच्च पद पर थे। वे कर्तव्य परायण, ईमानदार व्यक्ति थे इस लिये अंग्रेज़ अफसर उनसे बड़े प्रसन्न रहते और बड़ा सम्मान करते। उनका आदर्शवान जीवन था। इस लिये उनका नवयुवकों पर उत्तम प्रभाव पड़ा। आपने नवयुवकों से समाज का बड़ा काम कराया, उनमें सामाजिक जागृति उत्पन्न करते रहे मांस, शराब आदि के प्रलोभनों से आपने नवयुवकों को बचाया उनपर आर्य समाज का गौरव अंकित कर दिया। आर्य समाज नैरोबी प्रति दिन उन्नति करता रहा। सभासदों की संख्या १५०, २०० रही है। रेलवे मुलाज़िम अधिक सम्मिलित होते हैं।

आर्य समाज नैरोबी के सुप्रसिद्ध महानुभाव पं० बद्री दास म० इन्द्र सिंह, म० नाहर सिंह, पं० मथुरा दास, म० वैसाखी राय, मास्टर लाहौरी राय, म० बिहारीमाल, म० देवीदास पुरी पं० लालचन्द, बा० बज़ीर चन्द ठेकेदार, ला० गणेशीलाल दुकान दार, बा० प्रभुदयाल, बा० अनन्त राय, ला० मुन्शीराम, म० तुलसी दास द्विज, म० सीता राम आदि रह चुके हैं। इनमें से कई भाई तो यहां से भारत को चले गये हैं। और कई संसार से भी विरक्त हो गये हैं। वर्तमान समय में इन भाइयों में से पं० बद्री दास, म० देवीदास पुरी, बा० प्रभुदयाल, म० तुलसी दास म० सीता राम, म० कृष्ण देव कपिल, म० बाबूराम मन्त्री समाज, पं० हंसराज, पं० आर्यमुनी जी एम० ए० व म० विशन सहाय शर्मा प्रधान आर्य समाज बहुत उत्साह से काम कर रहे हैं।

(२) आर्य समाज की पुत्री पाठशाला का वर्णन ऊपर किया गया है। इसमें लगभग १६० लड़कियां इस पाठशाला में शिक्षा पा रही हैं। जिसमें कुछ मुसलमानों की पुत्रियां पढ़ती हैं पाठशाला सर्व प्रिय है। सभी लोग बड़ी सहानुभूति प्रगट करते हैं। इस वर्ष उत्सव पर आनरेबिल तय्यब जी जीवन जी ओ बी ने लड़कियों को इनाम अपने कर कमलों से बांटा। ऐसा ही अंग्रेज़ और गवानी लोग इस पाठशाला को दान देते और उसके साथ बहुत सहानुभूति प्रगट करते हैं।

(३) आर्य वीर दल समाज के आधीन है जिसके सेनापति राम रिक्खामल जी हैं। नवयुवकों को अति उत्तम खेल और व्यायाम की ओर रुचि दिलाई जाती है। अर्थात् आर्य समाज के छटे नियम शारीरिक उन्नति का क्रियात्मक रूप में पालन किया जाता है।

(४) आर्य समाज की ओर से एक वाचनालय है जिस में आर्य समाज के सब समाचार पत्र आते हैं और जनता बड़े उत्साह से पढ़ती है। समाज का अच्छा बड़ा पुस्तकालय भी है।

(५) आर्य समाज ने एक रात्रि हिन्दी पाठशाला का प्रबन्धभी कर रक्खा हैं इसमें हरिजन सनातनी और सब जातियों के लोगों को हिन्दी शिक्षा देने का प्रबन्ध किया हुआ है। लोग बड़े चाव से हिन्दी पढ़ते हैं।

(६) यहां स्त्री समाज भी है। उसका साप्ताहिक सत्संग

और वार्षिकोत्सव होता है। इस वर्ष मैंने वार्षिकोत्सव पर देखा कि स्त्रियां सादा वस्त्रों में थीं। बड़े प्रेम से व्याख्यान सुनती थीं एक दिन भोजन का प्रबन्ध उन्होंने अपने हाथ में लिया।

(७) यद्यपि यहां १६२४ ई० से आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना हो चुकी है। परन्तु आर्य समाज नैरोबी भारत से ही उपदेशक बुलाती रही है। उनका मार्गव्ययभी देती रही है। आर्य समाज नैरोबी की आर्थिक दशा ऐसी नहीं है कि वह किसी उपदेशक को बुलाकर प्रचार करा सके। अब तक नैरोबी समाज ने निम्न लिखित उपदेशक बुलाकर प्रचार कराया। कई उपदेशक स्वेच्छा से प्रचार करने या किसी संस्था के लिये चन्दा एकत्रित करने आये—

(१) भाई परमानन्द जी (२) स्वामी मंगलानन्द पुरी (३) पं० पूर्णानन्द जी (४) पं० पारानी शंकर (५) पं० ईश्वरदत्त विद्यालङ्कार (६) ठाकुर पृथ्वीराज सिंह (७) पं० हरिशंकर विद्यार्थी (८) पं० बालकृष्ण जी (९) पं० मणी शंकर जी (१०) प्रोफेसर रामदेव जी (११) पं० चमूपति एम० ए० (१२) डा० भक्तराम सहगल (१३) स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी (१४) स्वामी परमानन्द जी (१५) पं० बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार (१६) पं० बुद्धदेव जी मीरपुरी (१७) पं० रलियाराम जी एम० ए० (१८) महात्मा टेकचन्द जी (१९) म० कर्मचन्द जी (२०) श्रीमती शन्नो देवी (२१) श्री० रामप्यारी (२२) श्रीमती नारायणीदेवी (२३) पं० सत्यव्रत स्नातक (२४) पं० सत्यपाल स्नातक (२५) पं० गढ़हौमी (२६) पं० ऋषिराम

आदि ने आर्य समाज का अति उत्तम प्रभाव डाला। समाज ने भी यथा शक्ति इनकी सेवा की। इनसे प्रचार कराया। समाज ने गुरुकुल कांगड़ी, कन्या महा विद्यालय जालंधर को बहुत दान दिया और भी अन्य लोगों की यथा शक्ति आर्थिक सहायता भी की।

(८) समाज ने कई शुद्धियां भी कीं। एक यहूदी स्त्री को शुद्ध करके एक आर्य सज्जन से उसका विवाह कराया। हरिजनों के प्रति यथा योग्य वर्ताव किया है।

आर्य समाज नैरोबी ने ईस्ट अफ्रीका में भारतीय सभ्यता भारतीय संस्कृति और वैदिक धर्म को सुरक्षित रखने में भारी काम किया है। समाज संशोधन तथा लोगों को ईसाई बनने और दुराचार में पड़ने से बचाने के लिये अद्वितीय काम किया है।

(९) १९२७ ई० में आर्य समाज ने सिलवर जुबली मनाई और आर्य कांफ्रेंस भी बडे समारोह से की। प्रति वर्ष वार्षिकोत्सव करती है। संस्कारों में रुचि दिलाती है। नवयुवकों के सुधार का अधिक ध्यान रखती है। यदि पण्डित ऋषिराम जी यहां आकर दूसरी समाज स्थापित न करते तो नैरोबी का प्रभाव और गौरव साधारण जनता पर बहुत बना रहता। परन्तु दूसरी समाज के खुलने से साधारण जनता पर वह प्रभाव नहीं रहा! समाज मांस खाने वाले, शराब पीने वाले नवयुवकों को भी आश्रय देने लगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना

१९२० ई० तक आर्य समाज नैरोबी का सम्बन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से था। परन्तु १९२०में यहां आर्य कांफ्रेंस पं० ईश्वरदत्त विद्यालङ्कार के सभापतित्व में हुई जिसका परिणाम यह हुआ कि यहां आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना हो गई। मि० देबी दास पुरी के पुरुषार्थ से विभिन्न समाजों ने इसमें भाग लिया। उस समय से सभा बराबर प्रचार कार्य कर रही है। नियमानुसार उसकी रजिस्ट्री हो चुकी है। सभा ने १९२४ ई० में आर्य समाज कोलो के उत्सव पर अपने अधिवेशन में निश्चय किया कि यहां वैदिक संस्कृति फैलाने तथा ब्रह्मचर्य स्थापित करने के लिये गुरूकुल खोला जावे। एक डेपूटेशन द्वारा २०००० शिलिंग एकत्रित भी किये। १९२६ ई० में जञ्जा में छोटा भाई मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा के पुरुषार्थ से प्रचार और शिक्षा प्रबन्ध के लिये छः लाख शिलिंग की निधि बनाने का निश्चय किया गया। छोटा भाई और महाशय नाहर सिंह के पुरुषार्थ से जञ्जा और उसके आस पास से १४ हजार शिलिंग एकत्रित भी हो गये। इसमें से कुछ गुरूकुल भेजा गया और शेष से जञ्जा में आर्य समाज के लिये भूमि खरीदी गई।

सेठ कालीदास मानजी १९२४ ई० में आर्य समाज में सम्मिलित हुये और तब से आर्य समाज और प्रतिनिधि सभा के कार्यों में बड़े उत्साहसे काम करते हैं। प्रत्येक शुभ काममें उदारता

के साथ दान करते हैं। आपने आर्य समाज कम्पाला को २० हज़ार का दान किया। स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान से पूर्वी अफ्रीका की आर्य जनता में बहुत उत्साह उत्पन्न हुआ और उनका स्मारक स्थापित करने का विचार किया गया। चुनाचे सेठ कालीदास मानजी के सभापतित्व में १९२८ ई० में निश्चय किया गया कि गुरुकुल की स्थापना से पूर्व श्रद्धानन्द ब्रह्मचर्य आश्रम नैरोबी में स्थापित किया जावे। ९ अगस्त १९२८ ई० को नैरोबी में पूर्वी अफ्रीका की समस्त समाजों की एक आर्य कांफ्रेंस बुलाई गई। और आर्य समाज नैरोबी की सिलवर जुबली भी की गई। म० कृष्णदेव कपिल मन्त्री और सेठ मानजी कालीदास ने इस अवसर पर बडे उत्साह व परिश्रम से कार्य किया। २३ दिसम्बर १९२८ को आश्रम खोला गया। उसका पहिला प्रबन्ध कर्ता और मन्त्री मिस्टर देसाई एम० ए० हुआ जिसने बडे पुरुषार्थ और त्यागभाव से इस आश्रम को चलाया। सेठ कालीदास मानजीने अपनी भूमि ६ एकड़ और उसपर बना हुआ एक मकान और ६ हज़ार शिलिंग इस शुभ कार्य के लिये दान दिये।

इस प्रकार आश्रमकी इमारत बड़ी विशाल बन गई। पहिले ३ लड़के प्रविष्ट हुये। अब आश्रम में ४० विद्यार्थी हैं जिन में ३, ४ खोजे लड़के भी हैं। वहां बच्चों की शारीरिक, धार्मिक और आत्मिक उन्नति का पूरा ध्यान रक्खा जाता है। विद्यार्थी इतने बढ़ गये हैं कि पास में ही एक मकान किराये पर लेना पड़ा है। अब नई इमारत के लिये सेठ मानजी कालीदास ने दस हज़ार

शिलिंग और दान दिया है। आश्रम में वाटिका भी है जिस में संतरे, मचौंगे, सेब, बेर आदि फल हैं जो बच्चों के लिये मिलते हैं। आजकल आश्रम का प्रबन्ध मिस्टर छोटा भाई के हाथ में है जो बड़े उत्साह व प्रेम से करते हैं। आश्रम में समाचार पत्रों का प्रबंध है। भारतीय प्रसिद्ध दर्शकगण आश्रम का भी निरीक्षण करते हैं और सम्मति पुस्तक में उसके विषय में बड़ा प्रशंसनीय लेख लिखे जाते हैं। मि० जमनादास पटेल भी इस कार्य में बड़ी सहायता करते थे। उनकी मृत्यु से आर्य समाज और आर्य प्रति निधि सभा को बहुत हानि पहुंची है। प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित निम्न आर्य समाजें हैं:—

नैरोबी, नकोरो, अलडिरियट, क्योमो, मचाकोस, कम्पाला, जञ्जा, टरोरो, लोगाज़ी, मम्बासा, जन्जीबार, दारासलाम, बटोरा, लम्बवा, मबाली कुल १५ आर्य समाज पूर्वी अफ्रीका में हैं।

नैरोबी में प्रचार

मैं नैरोबी में १८ मार्च को पहुंचा। लोग स्टेशन पर स्वागत के लिये उपस्थित थे। सायंकाल को मेरा व्याख्यान समाज मंदिर में कराया गया। जिसका विषय "अमेरिका में भारतीय सभ्यता" था। लोगों ने बहुत पसन्द किया। १९ मार्च को रविवार था। साप्ताहिक सत्संग में मैंने वेद के महत्व पर व्याख्यान दिया। सायंकाल एक वाग्दान रस्म में सम्मिलित हुवा। वहां भी मेरा

व्याख्यान हुवा जिसे उपस्थित महानुभावों ने बड़ा पसंद किया। २१ मार्च को गर्ल्स स्कूल के आंगन में मेरा व्याख्यान "अमेरिका में वैदिक धर्म का प्रभाव" पर हुवा।

२८ मार्च को स्त्री समाज में व्याख्यान हुवा। सायंकाल को "इंडोनेशिया में वैदिक धर्म प्रचार" विषय पर व्याख्यान हुवा। २४ मार्च को फिर "जापान की उन्नति विषय" पर व्याख्यान हुवा। २६ मार्च को समाज में वेद मंत्रों की कथा की जिन्हें जनता ने बहुत उत्सुकता से सुना। २८ मार्च को "धर्म की आवश्यक्ता पर अंग्रेज़ी में व्याख्यान हुवा। जनता ने इसकी बड़ी प्रशंसा की। प्रतिदिन उपस्थिति अधिक ही होती जाती थी। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिक्ख सभी भाई सुनने के लिये आते थे। आर्य सामाजिक भाइयों के हृदय में बड़ी उत्तेजना उत्पन्न हुई। हिन्दू संगठन पर भी मेरा व्याख्यान हुवा। भारत की संस्कृति पर भी मैंने व्याख्यान दिया। श्रद्धानन्द ब्रह्मचर्य्य आश्रम में मैंने विद्यार्थियों के कर्तव्य पर व्याख्यान दिया। एक व्याख्यान पुत्री पाठशाला में स्त्री शिक्षा पर दिया। इस प्रकार २ अप्रेल तक मैंने नैरोबी में १५ व्याख्यान दिये और जनता पर वैदिक धर्म का अति उत्तम प्रभाव डाला। कितने ही लोग कहते थे कि हमने ऐसे व्याख्यान कभी नहीं सुने।

दूसरी बार मैं नैरोबी में ४ अगस्त को पहुंचा। चूंकि ५ से ७ अगस्त तक नैरोबी समाज का उत्सव था। इसलिये समाज की इच्छा थी कि मैं दस दिन पहिले पहुंच कर कथा करूं परन्तु एक तो जन्जीबार के लोग जाने न देते थे। दूसरे जहाज़ भी कोई

ऐसा न मिला जो समय से पहिले पहुंचा दे इसलिये मैंने ५ अगस्त से प्रचार आरम्भ किया और १३ अगस्त तक मैंने ११ व्याख्यान दिये। जनता बड़े प्रेम से सुनती थी। कभी एक व्याख्यान होता और कभी एक दिन में दो बार होता था। उत्सव पर दो दो व्याख्यान दिये। जनता बड़ी प्रभावित हुई।

इस प्रकार नैरोबी में कुल २६ व्याख्यान हुये। जनता तथा सभा और समाज के सब अधिकारी बड़े प्रसन्न हुये। लोगों ने उपनिषदों की कथा बड़ी पसंद की। बंसरी वाला व्याख्यान जनता ने बड़ी उत्सुकता से सुना। १३ अगस्त को समाज ने मुझे निम्न लिखित अभिनन्दन पत्र दिया। उसका मैंने रोचक शब्दों में उत्तर दिया। अन्त में शाम को ४ बजे लोग स्टेशन पर छोड़ने आये। जनता ने भारत मां की जय के नारे लगाये। प्रेम-पूर्वक सभी विदा हुये।

Farewell Address.

Presented by

THE ARYA SAMAJ NAIROBI
and the Arya Pratinidhi Sabha Eastern Africa.

To,

DR. MEHTA JAIMINI,

B. A. L L. B., M. R. A.S., PH. D. Vedic Missionary.

On behalf of the Arya Samaj, Nairobi, and the Arya Pratinidhi Sabha, Eastern Africa, we

the undersigned bid you a hearty farewell on the eve of your departure to the Motherland.

Shriman Ji, we take this opportunity of recording our deep sense of appreciation of the valuable services you have rendered to the cause of the Arya Samaj and Vedic Dharma in Nairobi as well as in the East African Territories.

Ever since your arrival in this country you have spared no pains to expound before large audiences the high ideals of Vedic Dharma and to demonstrate the grandeur of ancient culture of India. In you we have indeed found a very able exponent of Aryan religion, Aryan culture, and Aryan civilization. Your instructive and informative lectures and discourses demonstrate beyond doubt your vast store of learning. Your scholarship is admirable, the simplicity of your expression is fascinating, and the masterly treatment of the subjects on which you speak challenges attention.

Shriman Ji, we deeply appreciate the indefatigable zeal and untiring energy you have shown for thirteen long years of your whole hearted service of the Arya Samaj in India as well as abroad. Your travels to far-off countries of the world,

undertaken for the purpose of spreading the message of the Vedas far and wide, are an unmis takable proof of the ceaseless endeavours that you have been making in this direction.

Shriman Ji, we can but inadequately express to you our sense of gratitude for the missionary work that you have been incessantly carrying on in different plces in this country since you landed here in March last. Suffice it to say that every one of us fully realizes how untiringly you have tried, during your short stay amongst us, to propagate the true religion of the Vedas

In the end we request you to accept this address as an humble token of our appreciation of your meritorious services in the cause of Vedic Dharma to which you have dedicated your life at a vary great personal sacrifice. We heartly wish you bon voyage, long life, and a still mone brilliant and useful career in all your undertakings in the future

13th August 1933

We are Yours Aryantly

D. D. Puri,
President.

Prabhu Dayal,
Secretary.

A. P. Sabha, E. A.

B. R. Sharma.
Presdient.

B. R. Bhalla.
Secretary.

Arya Samaj, Nairobi.

अर्थात्—आर्य समाज तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पूर्वी अफ्रीका की ओर से हम आप का वियोग के समय हार्दिक सत्कार करते हैं। हम आप की अनमोल सेवाओं का जो आपने नैरोबी और पूर्वी अफ्रीका में वैदिक धर्म्म के फैलाने के लिये की हैं, प्रशंसा प्रगट करने के लिये यह अवसर पाते हैं। जब से आप इस महाद्वीप में पधारे हैं आपने बड़ी२ सभाओं के सम्मुख वैदिक धर्म के ऊंचे आदर्शों के प्रगट करने में कोई कसर नहीं रक्खी है। और भारत की संस्कृति के महत्व को उज्ज्वल करने में बड़ा महान कार्य किया है। आपको हम आर्य संस्कृति और आर्य सभ्यता की व्याख्या करने में एक महान योग्य विद्वान पाते हैं। आपके शिक्षाप्रद और अनुसन्धान पूर्ण व्याख्यानों से निस्संदेह आप की विद्वता का भण्डार प्रगट होता है। आपकी विद्वत्ता प्रशंसनीय है। आपकी व्याख्यान की सरलता और शैली मनो-रञ्जक है और बिषय को प्रतिपादित करने का ढङ्ग हृदयों को आकर्षित कर लेता है।

श्रीमान् जी !

हम आपके अनथक उत्साह और लगातार पुरुषार्थ की प्रशंसा करते हैं। जो आपने १३ वर्ष से भारत और विदेशों में आर्य समाज की तन मन धन से सेवा करनेमें दिखाया है। आप ने जो यात्रायें संसार भर के देशों में वेदों का सन्देश दूर देशों तक पहुंचाने के लिये की हैं वह इस लगातार उत्साह और

पुरुषार्थ का प्रयत्न प्रमाण हैं जो आप इस महान कार्य के लिये करते रहे हैं।

श्रीमान् जी ?

हम आपके प्रचार के काम का धन्यबाद कदापि पूर्णरूप से नहीं दे सकते जो आपने इस देश में लगातार अपने आगमन ४ मार्च से अब तक किया है इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि हममें से प्रत्येक सभासद सदैव इस बात को अनुभव करता है कि आपने किस तरह अत्यन्त पुरुषार्थ के साथ वैदिक धर्म के फैलाने में इस थोडे से समय में कार्य किया है।

अन्त में हम प्रार्थना करते हैं कि आप हमारी इस तुच्छ भेंट को जो हमने आपके वैदिक धर्म के प्रशंसनीय कार्य के प्रगट करने के लिये उपस्थित की है स्वीकार करें। हम सब हार्दिक प्रार्थना करते हैं कि आपकी यह मातृभूमि की यात्रा सकुशल सफल हो। परमात्मा आपको चिरञ्जीव रक्खे। और भविष्य में भी आप इससे अधिक लाभदायक कार्य करते रहें।

हम हैं आपके आर्य भाई:—

विशनदास शर्मा प्रधान	बाबूराम भल्ला मन्त्री आर्यसमाज
देवीदास पुरी प्रधान	प्रभुदयाल मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा

नैरोबी १३ अगस्त १९३२ ई०

छटा अध्याय

केनिया कालौनी की यात्रा

मम्बासा में प्रचार

४ मार्च को मम्बासा में उतरा और उसी दिन सिनेमा हाल में सायंकाल के समय व्याख्यान दिया। हाल जनता से भर गया दूसरे दिन समाज में व्याख्यान दिया। तीसरे दिन अल्लादीन विश्राम हाई स्कूल में प्रिन्सिपल महोदय के सभापतित्व में व्याख्यान दिया। उन्होंने व्याख्यान की बड़ी प्रशंसा की। और कहा में चाहता हूं मेरे विद्यार्थी प्रति दिन ऐसे व्याख्यान सुना करें। ६, ७, ८ मार्च को आर्य समाज के आंगन में व्याख्यान होते रहे। लोग बड़े प्रेम से सुनते रहे। १० मार्च को पटेल सभा के विशाल भवन में व्याख्यान हुआ। ११ मार्च को समाज में और १२ मार्च को अंग्रेज़ी में इम्पीरियल थियेटर में हुआ। अंग्रेज़ी का व्याख्यान भारतके सन्देश पर था। इसे जनता ने बहुत पसन्द किया। यहां तक कि सि० तलवार ने इसे छपवाकर दुनिया भर की समाजों में भेजने का विचार किया चुनाचे मुझसे आज्ञा पाने के लिये उसने जो पत्र मुझे लिखा उससे पता लगता है कि जनता मेरे व्याख्यान से कितनी प्रभावित हुई थी।

" मान्यवर महता जी, मेरी कामना है कि आपका व्याख्यान मुद्रित कराके अपनी लागत पर दुनिया भर की समाजों

में भेजूं। चूंकि मैं और मेरे मित्र आपके व्याख्यान को आधुनिक काल के लिये बहुत उत्तम और उचित समझते हैं और चाहते हैं कि भारत का सन्देश लिखे पढ़े मनुष्य के कानों तक पहुंचे इस लिये आपकी बड़ी कृपा होगी यदि आप मुझे संसार भर की समाजों का सूचीपत्र भेजदें जिससे मैं आपका व्याख्यान जो आप ने रीगल थियेटर में १२ मार्च को दिया था सब आर्य समाजों को पहुंचा सकूं।

आपका आज्ञाकारी:—

रामनाथ तलवार

प्रिन्सिपल शार्ट हैण्ड कालिज मम्बासा

मुझे नैरोबी जाना था परन्तु जनता ने विवश करके १७ मार्च तक रोक लिया। और बड़ी कठिनाई से १८ मार्च को विदा किया। मम्बासा में १४ दिन में १५ व्याख्यान हुये। आज तक किसी व्याख्यानदाता ने भारत से यहां आकर इतने व्याख्यान नहीं दिये थे। न जनता कभी किसी व्याख्यान में इतनी संख्या में इतने प्रेम और इतनी श्रद्धा के साथ सुनने आई थी।

३ अप्रेल को नैरोबी गया। वहां ४, ५ अप्रेल को समाज मन्दिर में व्याख्यान हुये। फिर मम्बासा के मन्त्री ने ११ मई को मुझे निम्न प्रकार का पत्र लिख कर भेजा।

प्रिय भ्राता जी, नमस्ते !

मैं आपको प्रसन्नता पूर्वक सूचित करता हूं कि हमारे सभासद, हितैषी और तमाम जनता आपके व्याख्यानों से बहुत

उत्तेजित हुई है और आपके व्याख्यानों से बहुत लाभ उठाया है और आपके अनुभव की जो आपने विदेशों के सम्बन्ध में अपने व्याख्यानों में प्रगट किये हैं बहुत प्रशंसा करती है। सब लोग आपके दर्शन के अत्यन्त अभिलाषी हैं और १८ मई की परीक्षा कर रहे हैं जो आपने अपने पत्रों द्वारा यहां आने की तिथि नियत की है।

आपका भक्तः—

देशराज मन्त्री आर्य समाज मम्बासा

मैं ६ जून को मम्बासा पहुंचा और ११ जून तक ५ व्याख्यान दिये। एक व्याख्यान गोवानी इन्स्टीट्यूट में शिक्षा प्रणाली पर था इस व्याख्यान में पुर्तगीज़ सरकार के कौंसिल ने प्रधान पद को स्वीकार किया। गोवानी लोगों ने इस व्याख्यान को बहुत पसन्द किया। और प्रधान ने भी बहुत प्रशंसा की। डेलीमेल अखबार ने यह सारा व्याख्यान अपने २२ जून १९३३ के पत्र में प्रकाशित किया। लोग बड़े प्रसन्न हुये। इस प्रकार से २० व्याख्यान मम्बासा में हुये। तीसरी बार भारत लौटते समय तीन दिन के लिये मम्बासा में ठहरा और ३ व्याख्यान और दिये। जनता बड़े प्रेम से सुनती रही और बड़ी प्रशंसा करती रही। इस प्रकार मम्बासा में मेरे कुल २६ व्याख्यान हुये। तीन संस्कार कराये और श्रद्धानन्द व्यायाम शाला की प्रारम्भिक रस्म भी मेरे द्वारा ही पूर्ण कराई गई।

मम्बासा आर्य समाज का वृतान्त

मम्बासा में १९०५ ई० में आर्य समाज स्थापित हुआ था सामाजिक भाइयों ने बड़े पुरुषार्थ से काम किया। यहां पहिले एक स्कूल भी भारतीय नवयुवकों की आवश्यक्तायें पूर्ण करने के लिये खोला गया। परन्तु जब १९२१ ई० में गवर्नमेंटने अलादीन विश्राम हाई स्कूल खोला तो आर्य समाज ने अपना स्कूल रखने की आवश्यक्ता न समझी।

मारशल्ला के दिनों में आर्यसमाज पर बादल छा गए और सामाजिक अधिकारी जेल में डाल दिये गये। एक को फांसी का हुक्म हुआ। परन्तु फिर काले पानी के हुक्म में सज़ा तबदील हुई जब सरकार ने रहम करके सब राजनेतिक कैदियों को रिहा कर दिया तो उनमें समाज के भी कार्यकर्ता रिहा हो गये। परन्तु समाज का काम शिथिल पड़ गया। परन्तु अब कई सालसे समाज फिर जीवित हुआ है और आर्य भाई बड़े उत्साह से कार्य कर रहे है समाज ने भूमि खरीद कर उसपर मन्दिर बनवाया है यद्यपि अभी तक मन्दिर का हाल नहीं बना है परन्तु १०-१२ कमरे बन चुके हैं। एक कमरे में समाज का साप्ताहिक सत्संग होता है। शेषमें यात्री ठहरते हैं। परन्तु आर्य समाज अपने ऋण से उऋण हो चुकने पर एक विशाल भवन बनाने की योजना कर रहा है। आर्य समाज का पहिला भवन १५ हज़ार की लागत का है और बर्तमान इमारत ३० हज़ार के लगभग मूल्य की है। आर्य समाज में मिस्टर श्रीराम गौतम प्रधान, म० बाबूराम, मि०खोलसा और

म० राय बहुत उत्साह से काम करते हैं। संस्कारों की ओर लोगों की रुचि बढ़ रही है। समाज प्रतिदिन उन्नति कर रहा है। जो भी उपदेशक अफ्रीका में आते हैं पहिले यहां ठहर कर प्रचार करते हैं। सब से अधिक व्याख्यान मेरे यहां पर हुये। आने जाने का एक प्रकार से यह स्थान बन्दरगाह बना हुआ हैं।

मम्बासा की दर्शनीय वस्तुयें

(१) अल्लादीन विश्राम हाई स्कूल दस लाख शिलिंग से तैयार कराके अल्लादीन ने गवर्नमैंट के सुपुर्द कर दिया है। अब यहां पर लगभग ८०० भारतीय विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं।

(२) समुद्र पर स्नानगृह--दो लाख शिलिंग से अंग्रेज़ों के लिये बनाया गया है। कहते हैं कि यह स्नानगृह संसार में प्रथम श्रेणी का है।

इसके अतिरिक्त मैटरन अस्पताल बहुत उत्तम बना हुआ है। इसमें एशियाटिक लोगों के लिये प्रबंध नहीं है केवल गोरे लोगों के लिये है।

आग़ा खानी मत के जमायत खाने भी देखने योग्य स्थान हैं। जो बड़े विशाल और उत्तम बने हुये हैं।

साथ ही मुसलमानों का प्राचीन समय का बनाया हुवा दुर्ग है जिस पर अब तक सुल्तान जन्जीबार की ध्वजा लहरा रही हैं। पांच छः सौ वर्ष का पुराना बना हुवा है छत पर अरबी इबारत लिखी हुई है।

सातवां अध्याय

नकोरो अलडोरियट में प्रचार

३ अप्रेल को हम रात्रि के समय नकोरो पहुंचे । ४, ५ अप्रेल को आर्य समाज के मंदिर में हमने व्याख्यान दिये । जनता ने बहुत प्रेम और श्रद्धा से सुने और बहुत प्रभाव पड़ा । आर्य समाज ने अपना उत्सव ३, ४ जून के लिये रक्खा और मुझे कथा करने के लिये पहिले बुलाया । इसलिये मैं वहां २८ मई की रात को पहुंच गया । २९ मई से २जून तक रात्रि में ५ दिन तक उपनिषदों की कथा की । ३, ४ जून को उत्सव के समय ३ व्याख्यान दिये । जनता पर बड़ा प्रभाव पड़ा इस अवसर पर ८ और पहिले २ व्याख्यान दिये कुल १० व्याख्यान नकोरो में दिये । आर्य समाज ने हमको मम्बासा तक का किराया देने के बजाय नैरोबी तक का थर्ड क्लास का टिकट लेकर दे दिया जो बड़ा अप्रिय लगा ।

अलडोरियट में–

६ अप्रेल को ९ बजे हम अलडोरियट चले । मार्ग में गाड़ी पटरी से उतर गई । हम सब बाल बाल बच गये । रात्रि को १० बजे वहां पहुंचे । ७, ८ अप्रेल को यहां थियेट्रीकल हाल में व्याख्यान हुये । लोगोंने बहुत श्रद्धा और प्रेम प्रगट किया । बड़ा सत्कार किया । सञ्जीवन राज ठेकेदार ने बहुत श्रद्धा प्रगट की । दोबारा आकर २७ से २९ तक तीन व्याख्यान और दिये । जनता पहिले

से भी अधिक संख्या में आई। व्याख्यानों से बड़ी प्रभावित हुई। आर्य समाज ने १४ मई को समाज मंदिर की मेरे हाथ से नीव रखने का विचार किया और प्रार्थना की कि उनके मध्य रहकर आठ दिन तक प्रचार करूं इसलिये मैं १२ मई को वहां पहुंच गया। १२ मई से २२ मई तक १० व्याख्यान बराबर अलडोरियट में दिये। जनता बड़ी प्रभावित हुई। लोग श्रद्धा और प्रेम से व्याख्यान सुनने के लिये उपस्थित होते थे। अलडोरियट में कुल १५ व्याख्यान हुये। इनमें से एक व्याख्यान २२ मई को अंग्रेज़ी में दिया। आनरेबिल टी० जे० ओसिया मैम्बर कौंसिल जो भारतीयों के विरुद्ध रहता है-उसने सभापतित्व ग्रहण किया। तमाम अंग्रेज़ अफ़सर इसमें सम्मिलित हुये। गोरे लोगों ने बड़ी प्रशंसा की। हाल खचाखच भरा हुआ था। स्थान न मिलने के कारण लोग बाहर खड़े रहे। प्रधान ने भी भाषण की बड़ी प्रशंसा की। एडवरटाइज़र समाचार पत्र ता० २५ मई के अङ्क में निम्न लेख मेरे व्याख्यान के विषय में प्रकाशित हुवा:—

ADVERTISER 25-5-1933.

The lecture delivered by Professor Jaimini at the Empire Cenema on Monday last under the Chairmanship of the Honourable T. J. Ocea M. L. C., was well attended a number of Europeans being included in the audience. The Professor Marshalled his facts and presented his evidence supported by quotations from such

authoreties as Maxmullar, Shroeder and Edward Carpenter with the practised skill of loyal mind and the large and appreciative audience expressed their approval with the discourse. Mr. Ocea made a short speech at the conclusion of the lecture thanking the speaker of the evening for his able exposition of the religions and intelectual aspects of Indian Culture.

अर्थात् प्रो० जैमिनी ने गत सोमवार को इम्पीरियल थियेटर में जो लैक्चर दिया उसके प्रधान आनरेबिल टी० जे० ओसिया मेम्बर कौंसिल नियत हुये थे। उपस्थिति बहुत अच्छी थी। कई युरोपियन लोग भी उसमें सम्मिलित हुये। प्रोफेसर ने घटनाओं को ऐसे क्रम से रक्खा और साक्षी में कई युरोपियन विद्वानों के जैसे मैक्स मूलर, वान शरोडर और एडयर्ड कारपेन्टर के प्रमाण और उद्धरण रक्खे कि जिससे तमाम श्रोतागण बहुत आनन्दित और प्रभावित हुये। मि० ओसिया ने अपने प्रधानपद के भाषण में महता जी को धन्यवाद दिया। और कहा कि आप ने भारतीय संस्कृति के धार्मिक और आत्मिक अवस्था का ऐसी उत्तमता और योग्यता से विस्तार किया है जिसे समस्त जनता ने बहुत पसंद किया है।

कटाली में प्रचार

२३ मई को मैं कटाली प्रचार करने गया। यद्यपि प्रोग्राम

दो दिन का थ परन्तु जनता ने इतना प्रेम और श्रद्धा प्रगट की कि मुझे २७ मई तक वहां ठहरना पड़ा और ५ लैक्चर वहां पर देने पड़े। यहां भी हिन्दू मुसलमान जनता ने बड़े प्रेम व श्रद्धा से व्याख्यान सुने। गुजराती लोगों ने बड़ा प्रेम प्रगट किया। बड़ी कठिनता से वहां से आने दिया। चलते समय मुझे ७५ शिलिंग मार्ग व्यय के लिये दिये।

मेरे प्रचार के विषय में जो पत्र मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा अफ्रीका ने मंत्री आर्य समाज अलडोरियट को १७ अप्रैल को लिखा था। उसकी कुछ पंक्तियाँ यहां उद्धृत करता हूं।

My dear Sanjiwan Raj.

Professor Mahta Jaimini ji I certainly endorse your good remarks; as he is embodiment of simplicity and living example of self-help. He would be most befitting person to be requested to lay the foundation stone of your Samaj. I have also requested him to allot you eight or ten days on his return journey and complete this holy function. I am trying to seek his co-operation to stay a little longer at least to the end of this year to make a thorough tour amongst the suburban samajes and infuse new spirit in them.

Prabhu Dayal
Secretary.

अर्थात्—महता जी के विषय में जो उत्तम विचार आप ने प्रगट किये हैं मैं उनके साथ सहमत हूं। वह वास्तव में सरल स्वभाव और त्याग का आदर्श हैं और उत्तम विश्वास पर कार्य करने की एक जीवित जागृत शक्ति हैं। यदि आप उनके कर कमलों से समाज मंदिर की स्थापना करावें तो यह इस कार्य के लिये अत्यन्त योग्य पुरुष हैं। उनसे पत्र द्वारा प्रार्थना कर रहा हूं कि वह लौटते समय आठ दस दिन आपके यहां प्रचार करें। और इस पवित्र कार्य को सम्पादन करें। मैं यत्न कर रहा हूं कि दिसम्बर के अन्त तक उन्हें अफ्रीका में ठहराऊं जिससे वह तमाम समाजों में भ्रमण करके नवीन जीवन डाल जायं।

आपका शुभचिन्तकः—
प्रभुदयाल मन्त्री।

प्रतिनिधि सभा ने मुझे निम्न लिखित पत्र भेजा

श्रीमान महता जी, नमस्ते !

मुझे अन्तरंग सभा ने आज्ञा दी है कि आपका उन अनथक अवैतनिक सेवाओं के लिए धन्यवाद करूं जो आपने अत्यन्त पुरुषार्थ से प्रचार द्वारा इस सभा की की हैं। आप हमारे धन्यवाद को स्वीकार करें। यही प्रार्थना है कि आर्य समाज नकोरो का वार्षिक उत्सव ३, ४ जून को नियत हुआ है और इस अवसर पर आर्य पुत्री पाठशाला का आरम्भिक संस्कार भी है ऐसे पवित्र यज्ञ के लिये आपकी उपस्थिति की अत्यन्त आवश्यक्ता है इस

लिये आप अपना जञ्जीबार और टांगानीका का प्रोग्राम थोड़े समय के लिये स्थगित करदें और उत्सव की कार्यवाही को सुशोभित करें। आशा है कि आप हमारी इस बिनती को स्वीकार करेंगे।

आपका शुभचिन्तकः—
प्रभुदयाल मन्त्री

आठवां अध्याय
कोमो में प्रचार

३० अप्रैल को अलडोरियट से मैं मोटर द्वारा कोमो में गया। उस दिन शाम के ५ बजे पुत्री पाठशाला के मकान में मेरा व्याख्यान हुआ। लोगों ने बहुत प्रेम से सुना। तत्पश्चात् बराबर प्रतिदिन रात्री के समय व्याख्यान होते रहे। जनता दिन प्रतिदिन अधिकाधिक संख्या में आती रही। ७ मई को आर्य पुत्री पाठशाला का परितोषिक वितरण उत्सव हुआ। जिसमें कन्याओं ने भजन सुनाये सम्बाद सुनाया और खेल व अन्य कार्य दिखाये मैंने उनको परितोषिक बांटा और व्याख्यान दिया। वार्षिक कार्य विवरण भी पाठशाला का सुनाया गया। रात्रि को मेरा फिर व्याख्यान हुआ। पांव में तकलीफ़ होने पर भी मैं बराबर कार्य करता रहा। ११ मई तक प्रति रात्रि को व्याख्यान देता रहा। सामाजिक लोग प्रचार से बहुत प्रसन्न हुये। इस प्रकार से मैंने

११ मई तक वहाँ १३ व्याख्यान दिये। एक व्याख्यान स्त्रियों में स्त्री शिक्षा पर भी दिया। इतना प्रचार कोमो में अबतक न हुआ था। किसी उपदेशक ने १० दिन में १३ व्याख्यान यहां पर कभी नहीं दिये थे।

यहां पर पुत्री पाठशाला १ २५ ई० से बहुत अच्छी दशा में चल रही है। ८० लड़कियां शिक्षा पा रही हैं। लड़कियों को कुछ धार्मिक शिक्षा भी दी जाती है। आर्य समाज की अवस्था संतोष जनक है। लोगों पर प्रचार का उत्तम प्रभाव पड़ा चूंकि १४ मई को मुझे अलडोरियट पहुंचना था इस लिये वहां की जनता से १२ मई को विदा हुआ। लोग जाने न देते थे। समाज ने ५० शिलिंग किराया मोटर का और ५० शिलिंग आगे मम्बासा तक जाने का मार्ग व्यय दिया। गुजराती भाइयों ने भी बहुत श्रद्धा प्रगट की। सभी बड़े प्रेम और उत्साह से भाग लेते रहे। जनता इन व्याख्यानों से बड़ी प्रभावित हुई।

युगेण्डा में प्रचार

९ अप्रेल को टरोरो स्टेशन पर उतरे। पहिले रामलाल स्टेशन मास्टर के भतीजे का नाम करण संस्कार कराया। और एक व्याख्यान दिया उसने तमाम हिंदुस्तानियों का प्रीति भोज भी किया। ९ व १० की रात्रि को टरोरो में व्याख्यान दिये। जनता पर बड़ा प्रभाव पड़ा। यहां पर आर्य समाज शिथिल अवस्था में है क्योंकि यहां हिन्दुस्तानी अधिक संख्या में नहीं हैं। इसी कारण

संतोष जनक अवस्था नहीं है। ११ अप्रेल को वहां से रेल में सवार होकर रात को जन्जामें पहुंचे। १२,१३ अप्रेल को जन्जा में काली दास पुस्तकालय के मैदान में व्याख्यान हुये। जनता वहुत प्रसन्न हुई। १४ अप्रेल सुबह को ९ से ११ बजे तक व्याख्यान रक्खा गया। व्याख्यान देकर शाम के ४ बजे रवाना होकर १० बजे रात को कम्पाला पहुंच गये। कम्पाला में १५ अप्रेल से उत्सव था मेरे व्याख्यान कराये गये। १६ को एक तथा १७ ता० को दो व्याख्यान हुये। जनता ने अन्य व्याख्यानों को सुनना पसन्द नहीं किया। मेरे व्याख्यान बड़ी उत्सुकता से सुने।

यहां समाज का वड़ा विशाल मदिर है। जो लगभग ६० हज़ार शिलिंग की लागत से बना हुआ है। समाज की ओर से पुत्री पाठशाला भी है।

इसके बाद १८ अप्रेल को आर्य समाज ने मेरा व्याख्यान कराया। १९ अप्रेल को मि० क्लार्क बेरिस्टर ने अफ्रीकन क्लब की ओर से मेरा व्याख्यान अफ्रीकन लोगों में कराया। इसमें अफ्रीकन शिक्षित लोग और सरदार सम्मिलित हुये। यह व्याख्यान अफ्रीका और भारत के प्राचीन सम्बन्ध और व्यापार के विषय में था। सब ने इस व्याख्यान को बहुत उत्सुकता से सुना और मेरे व्याख्यान के सम्बन्ध में अपनी प्रशंसा करने के लिये संक्षिप्त भाषण भी दिये।

२१ अप्रेल को मेरा व्याख्यान इंडियन एसोसियेशन ने

सनीमा हाल में कराया। गुजराती भाई अति प्रफुल्लित हुये। २१, २२ अप्रेल को मेरे दो व्याख्यान जापान की वर्तमान उन्नति के विषय में हुये। २३ अप्रेल को प्रातः आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में मैंने वेद मंत्र की व्याख्या की लोग बड़े प्रसन्न हुये।

इस प्रकार कम्पाला में जो युगेण्डा की राजधानी है दस व्याख्यान हुये। जनता बड़ी प्रसन्न हुई। आर्य भाइयों ने बड़ी श्रद्धा प्रगट की। दोपहर के बाद २३ अप्रेल को हम सेठ मान जी कालीदास की मोटर में सवार होकर लोगाज़ी पहुंचे। वहां पर हमारा आर्य समाज के मंदिर में व्याख्यान हुवा। २४ को रात्रि के समय फिर व्याख्यान हुवा। यहांपर शिक्षित जनता ने बड़े प्रेम से व्याख्यानों को सुना और सब ही बड़ प्रसन्न हुये। २५ अप्रेल को प्रातःकाल वहां से चलकर १० बजे जञ्जा आये और रात को फिर वहां पर लाइब्रेरी में व्याख्यान हुआ। २६ को भी वहां पर व्याख्यान दिया २७ अप्रेल को प्रात काल वहां से चल कर रात्रि ११ बजे अलडोरियट में पहुंचे।

इस प्रकार से युगेण्डा में हमारे निम्नलिखित व्याख्यान हुये:- टरोरो में तीन, जञ्जा में पांच, लोगाज़ी में दो और कम्पाला में दस। कुल २० व्याख्यान युगेण्डा में दिये। यहां पर चार आर्य समाजें हैं।

कम्पाला समाज ने टरोरो से कम्पाला तक का किराया २२ शिलिंग और २० शिलिंग अलडोरियट से कपोमों तक का

दिया। जञ्जा समाज ने २० शिलिंग किराये के अलावा दिये। हमारा निज का खर्च २२ शिलिंग और ८ शिलिंग कुल ३० शिलिंग हुवा। इस प्रकार हम को ३२ शिलिंग बच गये।

नवां अध्याय

जञ्जोबार में भारतीयों की अवस्था

यह द्वीप ६० मील लम्बा ४० मील चौड़ा निषवत् रेखा के निकट है। परन्तु समुद्र के किनारे पर होने के कारण बहुत गर्म नहीं है। यहां जून से अगस्त तक भारत के अक्तूबर मास जैसी सर्दी पड़ती है। शहर समुद्र से आध फर्लांग से भी कम दूरी पर है। समुद्र के किनारे के साथ साथ सड़क जाती है। जब जहाज़ समुद्र में आकर ठहरता है तो वहां से शहर का दृश्य बड़ा सुहावना दिखाई देता है। समुद्री तट के निकट सुलतान का बेतुल अजायब और शाही महल हैं। जिनपर सुलतान का झंडा लहराता है। और क्लाक टावर है। शहर बहुत बड़ा नहीं है। कुल जन संख्या ३६ हज़ार है जिसमें १६ हज़ार हिन्दुस्तानी लोग हैं। जो अधिकतर गुजरात काटियावाड़ के मेमन, असमीली खोजे, बहोरे, लोहाने गुजराती और पटेल हिन्दू हैं। यह सब लोग व्यापार करते हैं और अच्छे धनी हैं। शहर हिन्दुस्तान के शहरों के नमूने का है। बाजार और गलियां तंग हैं। नई आबादी

यूरोपियन नमूने की हो रही है। बाज़ार के फ़र्श पक्के हैं। दुकानें हिन्दुस्तानी ढंग की हैं। बाज़ार से गुज़रने पर ऐसा प्रतीत होता है कि हम गुजरात सूबे के किसी नगर मे जा रहे हैं।

गुजरातियों ने यहां अपने होटल खोल लिये हैं। हिन्दुस्तानियों ने लगभग ८ प्रारम्भिक स्कूल क़ायम किये हुये हैं। और ६ लाइब्रेरियां हैं जिनमें हिन्दी लाइब्रेरी, तिलक लाइब्रेरी बहुत प्रसिद्ध हैं। यहां इण्डियन ऐसोसियेशन हिन्दू व्यायाम मंडल, हिन्दू मंडल, आर्य समाज, व्यायामशाला, आर्य समाज आदि कई संस्थायें हैं। आर्य समाज के मंदिर की बड़ी विशाल इमारत है। सनातन धर्म सभा का मंदिर भी है जो बहुत साधारण है। दो हिन्दुस्तानी प्रेस हैं। इनमें अख़बार जञ्जीबार वायस, जञ्जीबार समाचार आधा अंग्रेज़ी व आधा गुजराती में छपते हैं। कुल द्वीप की आबादी डेढ़ लाख के लगभग है। इस द्वीप में केला, मयूंगा, पपीता, नारियल बहुतायत से होते हैं। बड़े सस्ते मिलते हैं। और ईस्ट अफ्रीका में जाते हैं। सबसे मुख्य यहां की यह विशेषता है कि यहां इतनी अधिकता में लौंग पैदा होती हैं कि दुनिया भर में इस देश से लौंग जाती हैं। हिन्दुस्तानियों को लौंग के व्यापार ने ही यहां खुशहाल बना दिया है। १८७० ई० में सुलतान जञ्जीबार ने हिन्दुस्तानियों को ज़मीन पेश की कि तुम अपने बाल बच्चों को यहां लाकर आबाद करो हम मुफ्त भूमि देते हैं। परन्तु हिन्दुस्तानियों ने कहा कि हम स्त्रियों को समुद्र पार लाकर उनका धर्म भ्रष्ट नहीं करना चाहते। यदि उस समय

भारतीय यह बात मान लेते तो आज बहुत धनी और भारी ज़िमीदार बन जाते। इसके बाद भारतीय बड़े पछताये। क्योंकि आज कल सब गुजराती कच्छ के लोग स्त्रियों सहित यहाँ पर निवास करते हैं। अब हज़ारों रुपया व्यय करके भूमि खरीदते हैं जो उस समय उन्हें मुफ्त मिलती थी। यदि उस समय ले लेते तो आज जञ्जीबार पर उनका पूरा अधिकार होता। फिर भी दूसरे द्वीपों की अपेक्षा भारतीय लोग यहां बडे समृद्धिशाली हैं। जो लोग भारत से यहां निर्धन आये थे वे आज धनवान हो गये। हिन्दुस्तानियों के ६ साबुन के कारखाने हैं। जो भी यहां पांच ६ हज़ार की पूंजी से काम प्रारम्भ करते हैं दो चार वर्षों में लाखों की सम्पत्ति के स्वामी बन जाते थे। सात आठ भारतीय यहां ऐसे हैं जो करोड़ रुपयों से अधिक की सम्पत्ति के स्वामी हैं। दस पंद्रह सेठ ५०००००००) के पूंजीपति हैं। दो चार लाख की सम्पत्ति के स्वामी तो कई हैं। अब भी यदि कुछ अवसर या क्षेत्र भारतीयों के लिये है तो जञ्जीबार में है। यहां आने की कोई रुकावट नहीं। केवल एक सौ रुपया अमानत रखना पड़ता है। यदि कोई अपनी जान पहिचान का मनुष्य हो तो वह भी रखना नहीं पड़ता।

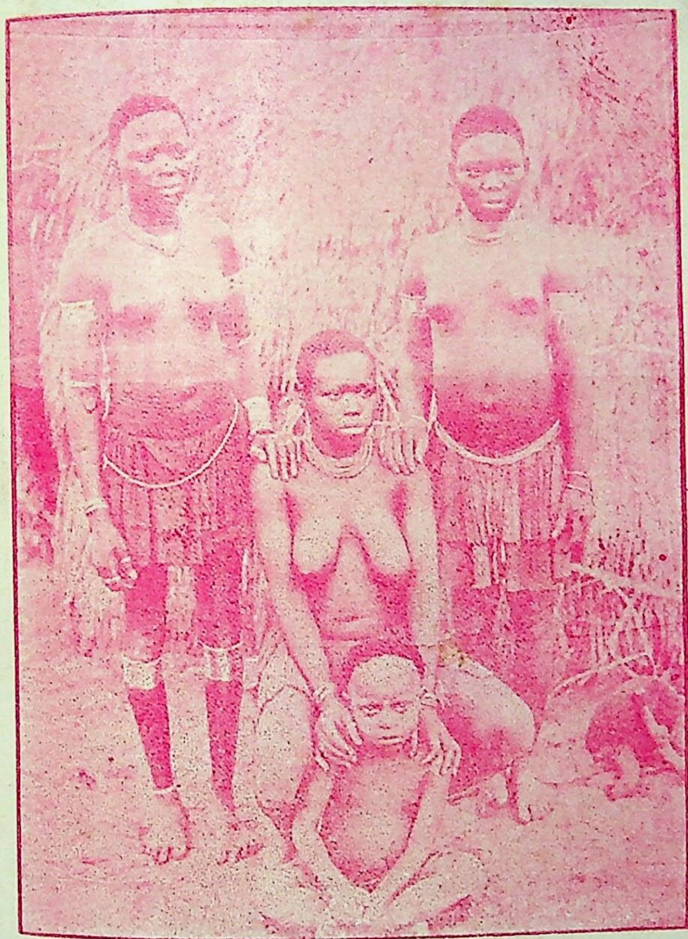
प्रायः भारतीय लोग विवाह शादियां भारत में जाकर करते हैं। और दो तीन वर्ष के पश्चात् मातृ भूमि की यात्रा भी कर आते हैं। जात पांत छुआछूत का भूत उनके सिर पर सवार है। महात्मा गांधी जी के व्रत ने भी उन पर कोई प्रभाव नहीं डाला। खान पान का झगड़ा इन लोगों में अभी तक प्रचलित है।

यदि भारत के उपदेशक यहां पर आकर प्रचार करते रहें तो उन की श्रद्धा भारतीय संस्कृति और सभ्यता के साथ बनी रह सकती है। यहां नेशनल बैंक आफ इंडिया की शाखा है। और जेठोमल लाल भाई का बैंक भी है। कुल कारोबार, व्यापार बम्बई के बैंक द्वारा होता है। यहां के खोजे भाई बड़े समृद्धिशाली हैं। ये लोग सर आग़ा खां के मतानुयाई है। लगभग छः लाख रुपया आग़ा खां की भेंट करते हैं। उन्होने कई स्कूल, औषधालय और अन्य कार्य यहां पर स्थापित किये हैं। सबसे अधिक उन्नति इन लोगों ने पूर्वी अफ्रीका में की है।

यहां का राज्य प्रबन्ध एक सभा के आधीन है। उसका प्रधान सुल्तान जञ्जीबार है और समासद सरकार वृतानिया का रेज़ीडेण्ट, चीफ़ सेक्रेटरी, कोषाध्यत्त, और डाइरेक्टर शिक्षा, कृषि, आरोग्यता विभाग इसके सदस्य हैं। दूसरी सभा क़ानूनी सभा है। जिसमें रेज़ीडेण्ट प्रधान है और छः सरकारी अधिकारी और छः ग़ैर सरकारी सदस्य हैं। इनमें दो हिन्दुस्तानी और तीन एराबी लोगों के प्रतिनिधि भी सम्मिलित हैं।

सन् १६१४ तक यहां की अपील हाईकोर्ट बम्बई में जाती थीं। परन्तु अब सरकार ने यहीं पर हाई कोर्ट बना दिया है।

लौंग की पैदावार १०७६६ टन है। बाकी कुल दुनिया में १८०० टन लौंग पैदा होता है। आर्य समाज पुत्र पाठशाला का बड़ा विशाल भवन है। इसमें १५० के लगभग पुत्रियांशिक्षा पा



केनिया का गरीयामा परिवार-- दांत देखने योग्य हैं।



अमेरीका में व्याख्यान देते हुये ।

रही हैं। खोजे लोगों की भी लड़कियां शिक्षा पाती हैं। खोजों की अपनी निर्जी पाठशाला भी है। २३ फी सदी सरकारी सहायता मिलती हैं।

यहांपर १३ बैरिस्टर, सात डाक्टर हिन्दुस्तानी हैं। जहां पर पहिले गुलामों की मण्डी थी अब वहां पर आर्य समाज का मन्दिर और व्यायाम शाला बनी हुई है। यह देश पहिले गुलामों की बिक्री का केन्द्र था। और हज़ारों गुलाम यहां पर नीलाम हुआ करते थे अमरीका, अरब और अंग्रेज़ लोगों ने गुलामों के व्यापार से बहुत लाभ उठाया। हज़ारों रुपये कमाये। परन्तु अब तो पादरियों और सरकार के पुरुषार्थ से यह प्रथा सर्वथा बन्द हो गई है। अन्यथा १८७५ ई० तक यह गुलाम भेड़, बकरियों की तरह बेचे जाते थे। और उनके साथ पशुओं से भी बुरा बर्ताव किया जाता था।

भारतीयों का जञ्जीबार से प्राचीन सम्बन्ध

भारत के लोग यहां पश्चिमी जातियों के आगमन तथा अंग्रेज़ों के राज्य से बहुत काल पहिले यहां आते जाते थे। इस पर राबर्ट ब्राउन महोदय अपनी पुस्तक स्टोरी आफ़ अफ्रीका (Story of Aferica) में लिखते हैं कि व्यापारियों में बनिया या हिन्दू सौदागर इस देश के व्यापार पर पूर्ण अधिकार रखते थे और अब तक रखते हैं। आगे वह लिखते हैं: –

The Hindus formed by for the wealthiest and enterprising class in the community, being at once the principal dealers and capitalists who found the means for fitting out the Caravans in which they possessed a secret or open interest.

अर्थात् हिन्दू लोग सब से अधिक धनाढय और अत्यन्त पुरुषार्थी थे और कारखानों के चलाने में भी मुख्य सञ्चालक और साहूकार बनकर पूरा प्रबन्ध कराते थे क्योंकि इस व्यापार में प्रगट या गुप्त रीति से वे सम्मिलित रहते और दिलचस्पी लेते थे।

आगे चलकर वह लिखता है कि भारतीय लोग अधिकतया बम्बई प्रान्त से प्रस्थान करके यहां आबाद हुये और अरबी लोगों को गुलामों के व्योपार करने में आर्थिक सहायता हिन्दू लोग ही दिया करते थे। चर्म का व्यापार मुसलमानों ने सम्हाला हुआ था। क्योंकि हिन्दू इसे पसन्द नहीं करते थे। परन्तु हिन्दुओं का तेज और यश और गौरव जञ्जीबार में प्राचीन समय में खूब जमा हुआ था।

बरटन महोदय अपनी पुस्तक "मध्य अफ्रीका के सरोवर तट के प्रान्त" में लिखते हैं कि जब सारा हिसाब किताब अन्तिम समय तक हिन्दुओं के साथ चुकता कर दिया गया तो सुल्तान को प्रस्थान करने की आज्ञा मिली। इससे सिद्ध होता है कि कुल हिसाब किताब भारतीयों के हाथ था। फिर वह लिखता है कि

भारतीय खोजा मूसा मज़ोरी अनियम बेज़ी प्रान्त का खोज किया था। जञ्जीबार के बृटिश एजण्ट कप्तान रगबी ने १५ जुलाई १८५६ ई० को बम्बई सरकार को लिखा कि जञ्जीबार के महकमे कस्टम (Custom) के अध्यक्ष लधावहाना (गुजराती हिन्दू) के उत्तम कार्यों और युरोपियन अन्वेषणकर्ता मंडल को यथोचित सहायता देने के लिये कोई शाल या तोहफा पुरस्कार में देना उचित है। उसकी लिखित से यह भी प्रगट होता है कि उस समय जञ्जीबार में हिन्दी भाषा का प्रायः प्रचार था।

इसी प्रकार अनग्राम साहब की "जञ्जीबार का इतिहास" पुस्तक के पृष्ठ ३२ पर लिखा है:—

The earliest sea-trade in Indian Ocean started in the time of last Chalchean King of Babylon, after two centuries the sea-trade between India and Babel flourished and ships came to Babel from India and China. These traders were Aryan and Darawars and their explorations led to the settlements of Indian traders in Arab, Babul, East Africa and China. Not only did the Hindus make settlements in East Africa but they penetrated with Inland regions

अर्थात्-सब से प्राचीन व्यापार भारत सागर में बाबल के अन्तिम बलज़ियन राजा के समय में आरम्भ हुआ दो शताब्दियों के पश्चात् भारत और बाबल के बीच में समुद्री व्यापार खूब

प्रचलित हुआ और भारत तथा चीन से जहाज़ बाबल को अधिक संख्यामें आते थे। यह व्यापारी द्राविड़ और आर्य दोनों जातियों के थे। उनकी समुद्री खोज से भारतीय व्यपारियों ने अरब, ईस्ट अफ्रीका, बाबल तथा चीनमें अपने उपनिवेश स्थापित किये हिन्दुओं ने न केवल पूर्वी अफ्रीका में उपनिवेश बनाये किन्तु वे अफ्रीका के भीतर भी घुस गये और वहां भी व्यापार जाकर किया। जितने भी यात्री अफ्रीका से अन्य देशों में आये हैं सभी ने पूर्वी अफ्रीका के तट पर भारतीय लोगों की उपस्थिति का वर्णन किया है। वास्कोडिगामा भी वर्णन करता है कि मोज़म्बिक मम्बासा, लन्दी और मकोवा में हिन्दू व्यापारी विद्यमान थे। चुनाचे एक गुजराती हिन्दू व्यापारीने मम्बासा से कालीकट तक उसके साथ पथ-प्रदर्शक तथा जहाज़ चलाने का कार्य किया। बहुत प्राचीन काल से वानिया लोगों ने मक़त, जन्जीवारे, चका-चका और कई अन्य तटों में अपने व्यापार के गोदाम घर स्थापित किये। अब यहां जेनी, सिक्ख, लोहाने, भारतीय, चमार और मेघ जातियों के हिन्दू हैं। पहिले यहां समरियन लोग आबाद हुये। जो द्राविड़ नस्ल से थे। चुनाचे सुहेली भाषा में अब भी उनके अधिक शब्द पाये जाते हैं। दृष्टान्त के तौर पर कुछ शब्द दिये जाते हैं।

समीरयन	सुहेली	हिन्दी अर्थ
ज़मी	ज़मो	जी

मो	कमो	रूह (आत्मा)
अज़्	बुंज़ी	आज
अमी	अइमी	ज़बान

पहिले मिश्र निवासियों का यहां से व्यापार था। अरब, ईरान और भारत से यहां जहाज़ व्यापार के लिये आते थे। मिश्र की प्राचीन पुस्तक में जो पण्ट (Punt) देश का वर्णन आता है उससे आशय सोमालीलैण्ड तथा जञ्जीबार लिये जाते हैं परन्तु मैक्समूलर ने इसमे भारत का तात्पर्य लिया है।

जब वास्कोडिगामा आया तो जञ्जीबार के लोग उस समय जहाज़ चलाने के कार्यमें निपुण थे। उन्होंने मिश्र फ़ुनेशिया के लोगों से इस विद्या को सीखा था। यूनानी और यहूद लोगोंने भी जञ्जीबार की यात्रा की और उसके साथ सम्बन्धित हो गये।

पैरस महोदय अपनी पुस्तक जञ्जीबार सम्बन्धी में लिखता है कि:—

Bartering and purchase of ivory, tortise-shell and other marchandise at Rhepta was in the hands of Indian merchants while the Arabs confined themselves to the shipping of goods to and from their destinations.

अर्थात्—परस्पर गल्ले का व्वापार करने और हाथी दांत, कछुवे की हड्डी और अन्य माल की बिक्री रपटा में भारतीयों के

हाथ में थी और एराबी लोग केवल एक स्थान से दूसरे स्थान तक सामान बेचने का का कार्य करते थे।

प्रोपस पुस्तक में आता है कि पहिली शताब्दी में मोज़ा के लोग अरब और कच्छ खाड़ी के लोगों के साथ व्यापार करते थे आठवीं शताब्दी में इस्लाम का बहुत बल रहा। मिश्र से लेकर युरोप तक उनकी ध्वजा लहरा रही थी। परन्तु घर की फूट ने अवनति करदी और ईरान के शिया लोगों के हाथों में शक्ति चली गई। अफ्रीका में न केवल उनका राज्य रहा किन्तु व्यापार के साथ साथ उपनिवेश भी स्थापित किये और आज तीन सागर के तट पर ईरान और अरब के लोग राजनैतिक क्रान्ति के कारण भाग कर आबाद होने लगे। पस अरब, ईरान और भारत को व्यापार और युद्ध ने अज़ातीन सागर के तटों और उसके विशेष द्वीपों मम्बासा, जञ्जीबार और माफ़िया के साथ सम्बन्धित कर दिया।

स्टैनले नारमन भारतीयों के सम्बन्ध में लिखता है हिन्दू लोग यहां बतौर व्यापारी और सूद लेने वालों के काम करते हैं। कृषि की ओर उन्होंने ध्यान नहीं दिया। इस लिये पूर्वी अफ्रीका में बनिया लोगों का बड़ा प्रभुत्व है। अखबार टाइम्स आफ लंदन बाबत १८८९ ई० लिखता है कि जञ्जीबार का तमाम व्यापार भारतीयों के हाथ चला गया है। ऐराबी लोग उनका मुकाबला नहीं कर सकते। इस प्रकार जे० सी० कैंटी ने १८७८ ई० में लिखा कि भारतीय व्यापारी हिंदू और मुसलमान हज़ारों की संख्या में

तटों पर आबाद हैं। सुलतान के राज्य में शक्ति-शाली हैं। गत बीस वर्षों में उनकी और भी शक्ति बढ़ गई है। ऐराकी लोग हिन्दुओं से रुपया उधार लेने के कारण निर्बल हो गये हैं। और अपनी सम्पत्ति और भूमि हिन्दुओं के पास रहन रख देते हैं। यद्यपि बनिया हिन्दू और खोजा लोगों ने इस द्वीप के ऊपर अपना अधिक प्रभाव जमा लिया है तो भी कहीं भी राज्य अधिकारी अपने कार्यकर्ताओं को घृणा की दृष्टि से और लापरवाही से नहीं देखेंगे। भारतीय व्यापारियों जैसे पुरुषार्थी और दिनभर तक खूब काम करने वाले पूर्वी अफ्रीका में कहीं किसी जाति के मनुष्य नहीं मिलेंगे। व्याज खाने वाले तो हम अंग्रेज़ लोग भी प्रसिद्ध हैं। यदि हम अपनी आंख का शहतीर देखें तो हमें हिन्दुओं का कांटा दृष्टिगोचर न होवे। इसलिये हमें उचित है कि हम उदारता के साथ बर्ताव करें। उनकी अनमोल सेवाओं और कार्य के लिये उनकी प्रशंसा करें जो उन्होंने पूर्वी अफ्रीका को उन्नत करने में और हमारे व्यापार और वस्तुओं को जञ्जीबार और पूर्वी अफ्रीका में फैलाने में की हैं। उनका पुरुषार्थ ऐसे गर्म देशमें आश्चर्यजनक है। ऐसी किफायत करने वाले और उत्साही निश्चय रूप से समृद्धिशाली होने के अधिकारी हैं। और ज्यों ज्यों वह उन्नति करके समृद्धिशाली बनेंगे त्यों त्यों अफ्रीका निवासियों को अधिक लाभ पहुंचावेंगे।

दसवां अध्याय

जञ्जीबार की आरम्भिक अवस्था

यह शब्द जञ्ज और बार से मिलकर बना है जिसके अर्थ हबशियों का तट है। ६९५ ई० में शाहज़ादा सुलेमान और रशीद जञ्जीबार में आये। उनको दमिश्क से हज्जाज ने निकाल दिया था। सन् ७७ हिजरी में अब्दुल मलिक बनी मूरसैनी ने इस देश की यात्रा की। वह सिरीम लोगों को साथ लाया। और उन्होंने पैटी, मलन्डी और जञ्जीबार शहरों को बनवाया और आबाद किया। साथ ही मम्बासा, चिकबा और लामो शहरों को बसाया ७३९ ई० में कच्छ जैदिया लोग पूर्वी अफ्रीका में ईरान से भाग कर आये। ऐसा ही सुलतान हसन शीराज़के रहने वाले बादशाह का पुत्र अली यहां प्रस्थान करके आया और ९७५ ई० में कलोवा में आकर आबाद हुआ। ऐसा ही यमन और पैटी से मलिक हतियान बदर किया गया और यहां आकर आबाद हुआ। यह लोग सुन्नी मज़हब के शोफिया फिरके के विश्वासी थे। पहली मस्जिद ११०७ ई० में कज़मकाज़ी शहर में तामीर की गई।

कलोवा के इतिहास से पता चलता है कि शिराज़ के सुल्तान हसन के छः पुत्र थे वह सात जहाज़ों को लेकर देश से प्रस्थान कर गये। छटा जहाज़ कलोवा में आया। वहां एक मुसलमान पहिले से आबाद था। उसने एक गांव अलमोली

फिरके से खरीद कर लिया उसका बेटा अली पहला बादशाह कलोवा का हुवा। उसने ९५० ई० तक राज्य शासन किया। उस का पुत्र मम्बासा का राजा बना। फिर हबशी लोगों ने आक्रमण करके अली के बेटे को भगा दिया। परन्तु कलोवा की प्रजा ने हबशियों को हटाकर फिर बादशाह को जन्जीबार से बुला लिया। उसने १४ वर्ष तक शासन किया उस समय के सिक्के और इमारतें उन लोगों की उच्च सभ्यता के प्रमाण हैं। तेरहवीं शताब्दि में जञ्जीबार स्वतंत्र राज्य था। ६८६ ई० में जलन्दा के दो पुत्र सुलेमान और सईद अपनी सेनाओं के साथ अलहजाज गवरनर यमन से मुकाबला कर रहे थे। परन्तु अपनी शक्ति कमज़ोर देखकर अफ्रीका को भाग आये और नई आबादी स्थापित की। ९०८ ई० तक अरबी लोगों ने यहां वारशेख, मरका, बरावा, कमायो, पटा, लामो, मलन्दी, मम्बासा, माखिया और कलोवा में अपनी बस्तियां बसाईं। और किले भी बनाये।

मसूदी बग़दाद के निवासी ने ९१२ ई० में जन्जीबार की यात्रा की। और पूर्वी अफ्रीका में भ्रमण किया। तेरहवीं शताब्दी में याकूब अरब निवासी ने जन्जीबार को देखा और कहा कि यहां से हाथी दांत यमन और भारत को बहुत जानता है। फिर बैन बतोता ने १३२८ ई० में यात्रा की। वह मम्बासा के विषय में लिखता है कि यहां के लोग पवित्र, दयानतदार और धार्मिक विचार वाले हैं। हिन्दू और अरबी लोगों के अतिरिक्त चीनी लोगों का सम्बन्ध भी जन्जीबार से था। क्योंकि कई चीनी सिक्के

कलोवा, माफिया और यगडेशो से मिले हैं। ये सिक्के १२वीं शताब्दी तक के हैं। १४८६ ई० में पैरो पुर्तगीज़ ने मिश्र और लाल सागर के मार्ग से भारत को प्रस्थान किया। लौटते हुये उसने सोखाला को देखा। इस काल तक युरोप के लोग भारत के सुगन्धित पदार्थ, मसाले और कपडे वीनस के द्वारा खरीदते थे। और वहां फारस की खाड़ी अरब के मार्ग व मिश्र से होकर माल आता था। आखिर ८ जुलाई १४९७ई० में वास्कोडिगामा पुर्तगाल से चार जहाज लेकर भारत के लिये चला और अप्रेल १४८९ ई० में जञ्जीबार से होकर मम्बासा गया वहां से २२दिन में कालीकट एक गुजराती के मार्ग दिखाने पर पहुंचा। वापसी पर वह जञ्जीबार के किनारे पर आया। फिर १५०३ ई० में लोरञ्जोग वास्को ने जञ्जीबार में पग रक्खा और कई अरबी जहाज़ों को पकड़ लिया और गोला बारी आरम्भ की। उन्होंने सन्धी करली और ३० भेडें और ५४ पौंड नकद वार्षिक कर देना स्वीकार कर और एक जहाज़ पुर्तगाल के बादशाह को भेंट देने के लिये भी ले लिया। इस प्रकार १५०३ ई० में पुर्तगीजों का जञ्जीबार पर अधिकार हो गया। ऐसा ही कलोवा को परास्त करके वहां से ११०० पौंड वार्षिक कर, बरावा पर २२३ पौंड, लामो पर २२८ पौंड और मम्बासा पर ६०० पौंड कर लगाया।

१५०९ ई० में महोदय डेबोरियट पुर्तगाल से जञ्जीबार में कर प्राप्त करने आया। लोगों के मुकाबला करनेपर गांव लूट लिया। आखिर १५८६ ई० में अलीबे एक जहाज़ तुर्की लाया।

जञ्जीबार और कलोबा के सब मुसलमान उसके सहायक बन गये। पुर्तगाल वालों ने भारत से २८ जहाज़ मंगवा कर उस क्रान्ति को दबाया। परन्तु ३ वर्ष बाद फिर अली बे पांच हज़ार मुकाबले के लिये लाया। पुर्तगीजों ने भारत से बड़ा जहाज़ मुकाबले के लिये मंगवाया। परन्तु इतने में ही बज़रमयाजात के मनुष्य भक्षक लोगों ने मम्बासा को आकर घेर लिया। और अली बेग को गिरफ्तार करके उसकी सेना को बध कर दिया। जो लोग भागकर समुद्र में पुर्तगीज़ों की पनाह लेने गये वह पुर्तगीज़ों ने नष्ट कर दिये। उधर पमबा के लोगों ने पुर्तगीज़ों के विरुद्ध शान्ति की और एक रात को पुर्तगाल के अध्यक्ष को उसके बालक बच्चों सहित कतल कर दिया। पमबा का सरदार बाक़ी पुर्तगीज़ों सहित मलन्दी में भाग गया। इस प्रकार पमबा पुर्तगीज़ो के हाथ से निकल गया।

अंग्रेज़ों का आगमन

१५८० ई० में कप्तान ड्रैक ने दुनिया के चारों ओर चक्कर लगाया। वादिस्स अभीद से गुज़रा। फिर टाम्स कैवेंडिश ने १५८६ ई० में जावा द्वीप में भ्रमण किया। फिर १५९१ ई० में तीन जहाज़ ईस्ट इंडीज़ को पूर्वी अफ्रीका के मार्ग से भेजे गये। पहिला अंग्रेज़ी जहाज़ जञ्जीबार में कप्तान रास १६०४ ई० में लाया। मारकोपोलो यात्री ने तेरहवीं शताब्दि में जञ्जीबार की यात्रा की। वह लिखता है कि यहां के लोग मूर्ति पूजक हैं। मज़बूत हैं और चार आदमियों के बराबर बोझ उठा लेते हैं।

किसी के भी पराधीन नहीं हैं। मछली, मांस, दूध, चावल और खजूर पर निर्वाह कर लेते हैं। वह चन', मसाला और चावल से नशा बना लेते हैं। वीर हैं मृत्यु से भय नहीं खाते। ऊंट और हाथियों पर चढ़ कर युद्ध करते हैं। युद्ध के अवसर पर मद्य पीते हैं। लौनीवारल्डी जिनेवा निवासी ने सब से पहिले तरहवीं शताब्दि में इस द्वीप की यात्रा की। मारकोपोला ने इससे इस नाम का पता लिया था।

पुर्तगीज लोग १६२२ ई० में हरमज़ की खाड़ी से निकाले गये। और १६५० ई० में मक़त से भगाये गये। १६३५ ई० में जञ्जीबार पुर्तगीज़ों का खिराज गुज़ार न रहा। १६५२ ई० में एराबियों की सेना आई और जञ्जीबार पर आक्रमण किया। अन्त में १६६७ ई० में सुल्तान यमन के पुत्र इमामसेफ ने पुर्तगीजों को कलोबा, पम्बा और मम्बासा से निकाल दिया। १७१० ई० में फिर पुर्तगीज़ों ने मम्बासा को लेने का यत्न किया परन्तु सफल न हुये। १७२७ ई० मेंगोआ से छः जहाज़ लेजाकर फिर पुर्तगीजों ने मम्बासा पर आक्रमण किया और अपना झण्डा गाड़ दिया। परन्तु १७२९ ई० में एराबियों ने फिर पुर्तगीजों को निकाल दिया इमामसेफ़ पम्बा और जञ्जीबार का राजा बन गया।

सुल्तान का पुत्र सईद जञ्जीबार का प्रसिद्ध बादशाह हुआ है। वह यमन का सुल्तान भी था। १८३२ ई० में उसने जञ्जीबार को अपनी राजधानी बनाया। १८३४ ई० में अमेरिका का कौंसिल नियत हुआ। १८४२ ई० में बृटानिया सरकार का कौंसिल भी

जञ्जीबार में नियत हुआ। १८४४ ई० में फ्रांस के साथ भी व्यापार की मित्रता हो गई। १८५६ ई० में ईरानियों के साथ उस ने संधि की। आखिर १८५८ ई० में वह मरगया। उसके पुत्र मजीद ने जञ्जीबार पर अधिकार कर लिया। परन्तु उसके भाई ने झगड़ा किया। १८६२ ई० में लार्ड केनिङ्ग भारत के गवरनर जनरल ने फैसला कराया। जञ्जीबार मजीद को दिया। १८७० ई० में मजीद के मरने पर उसका भाई सैयद बरघश राज्य पर बैठा। १८८८ ई० तक राज्य किया। उसने गुलामों की प्रथा को रोकने के लिये १८७१ में हुक्म जारी किया।

उसने ३० फीसदी महसूल बरामद लौंग पर लगाया और ४० हज़ार रुपया वार्षिक सुल्तान मक़त को देना बंद कर दिया। साथ ही साथ बाक़ायदा जहाज़ ईस्ट इण्डिया कम्पनी के यहां पर ठहर कर इंगलैंड से हिन्दुस्तान को आने जाने लगे। १८७५ ई० में उसने इंगलिस्तान की यात्रा की। १८८६ ई० सुल्तान जञ्जीबार की सीमा जञ्जीबार पम्बा और १० मील समुद्री तट तक की नियत हुई।

बरघश सुल्तान के मरने पर सैयद खलीफा तख्त पर बैठा। परन्तु १८९० ई० में मर गया। अब उसका भाई सैयद अली उसके स्थान में नियत हुवा। उसने बृटिश सरकार को अपने राज्य का संरक्षक (Protectorate) मान लिया। जर्मन ने हेलीगोलैण्ड टापू लेकर और फ्रान्स ने मैडेगासकर पर अधिकार

जमाकर बृटिश सरकार को जञ्जीबार का अध्यक्ष मान लिया। १८९३ में उसके मरने पर सैयद हमीद तख्त पर बैठा। १८९५ में ईस्ट अफ्रीका इम्पीरियल कम्पनी ने ढाई लाख पौंड लेकर यह कुल प्रान्त सरकार अंग्रेज़ अर्थात् पार्लियामैंट के सुपुर्द कर दिया। यह बादशाह १८९६ ई० ही में मर गया। उसके भतीजे ख़ालीद ने तख्त का दावा किया और सेना एकत्रित कर ली और अंग्रेज़ों से युद्ध करने को तैयार हो गया। उसने अंग्रेज़ों के अल्टीमेटम की परवाह न की। अंग्रेज़ों ने उसके क़िले, महल और शहर पर जंगी जहाज़ द्वारा गोलाबारी शुरु कर दी। ४० मिनट में क़िला व महल नष्ट हो गये। शहर के लोग भाग गये। खलीद जर्मन कौंसिल की शरण में भाग गया। और सईद का पोता तख्त पर बैठाया गया। वह १९०२ ई० में मर गया। फिर उसका बेटा सैयद अली तख्त पर बैठा जो सन १९११ ई० में जर्ज पंचम बादशाह की ताजपोशी की रस्म में सम्मिलित हुवा। वह १९१८ ई० में पैरिस में मर गया।

उसकी मृत्यु के बाद सैयद खलीफा उसका साला तख्त पर बैठा। १९१४ ई० में प्रबन्धक कौंसिल नियत हुई। १ २६ ई० में कौंसिल और अदालतों का ठीक प्रबन्ध हो गया। उम्दा सड़कें बन गई। १९२९ ई० में प्रिन्स अब्दुल्ला तख्त का वारिस हुआ। और सुल्तान इंगलैंड की सैर को गया। अब वह एक्ज़ीक्यूटिव कौंसिल का प्रधान है। उसकी अनुपस्थिति में शेख सुलेमान बतौर स्थानापन्न के काम करता है। अब दरिया बांगा से पकनी तक १० मील का टुकड़ा सुल्तान जञ्जीबार का है। कुल १७० मील

तक समुद्री तट की भूमि और लामो, माण्डा, पटा, फाज़ा और कमावो बन्दर के इर्द गिर्द के इलाकों पर उसका राज्य है। परन्तु उसके अधिकारस्थ स्थान किराये पर रहते हैं और उनके बदले में १७० हज़ार पौंड वार्षिक सरकार से मिलते हैं। उसका झण्डा जञ्जीबार और मम्बासा के किलों पर लहराता है और इस्लामिया कानून उसके १० मील के क्षेत्रफल में प्रचलित है। देसी मजिस्ट्रेट जिन्हें वाली कहते हैं डिस्ट्रिक्ट बृटिश अफसर की निगरानी में काम करते हैं। यद्यपि सिक्के पर उसका नाम है परन्तु कुल अधिकार रेज़ीडेन्ट के हैं। सुल्तान नाम मात्र को है। रेज़ीडेण्ट जिसे चाहे बरखास्त करे या सुल्तान के बारे में कानूनी सेक्रेटरी रिपोर्ट करे, हटा देवे।

ग्यारहवां अध्याय

जञ्जीबार के हवशियों के हालात

यहां के असली बाशिन्दे सुलेही कहलाते हैं। जब बच्चा उत्पन्न होता है उसके कान में अज़ान दी जाती है। और बायें कान में मनाजात से पहिले की आयतें बोली जाती हैं। अर्थात् आर्यों के जात कर्म-संस्कार से उनकी रस्में मिलती हैं। कुछ मीठी वस्तु बच्चे के मसूड़ों पर मलते हैं सातवें दिन खतना करते हैं। दावत करते हैं और कुछ खैरात (दान पुण्य) करते हैं चालीसवें

दिन मुंडन संस्कार की रस्म की जाती है। लड़के के वाल्दैन किसी रिश्तेदार को लड़की के वाल्दैन के पास सगाई के लिये भेजते हैं। उनके यहां भी जातपांत का भेद रक्खा जाता है। कुरेश जाति के अन्य जाति में विवाह नहीं करेंगे। सितारों की लग्न को देखकर विवाह करते है। आधा हक् मेहर पेशगी दिया जाता है। विवाह प्रायः मस्जिद में होता है। माह मफर में विवाह नहीं करते। जब स्त्री पुरुष विवाह करके एकान्त स्थान में जाते हैं पति स्त्री को बोलने के लिये कुछ नकदी देता है। सात दिन तक लड़की के घर पर एकान्त स्थान में रहने की प्रथा है। वहां पर वे परस्पर समागम करते हैं।

मृत्यु समय हबशी लोगों में सिर उत्तर की ओर पांव दक्षिण को किये जाते हैं। उनका सरदार शेख कहलाता है जो सब पारस्परिक झगड़े निबटाता है। यह लोग बड़े अतिथि सत्कार करने वाले तथा मधुर भाषी होते हैं। यदि कौआ कांय कांय करता है तो उसे महमान के आने का चिन्ह समझते हैं। यदि गधा हैंकने (चिल्लाने) लगे तो उसे काम सफल होने का चिन्ह समझते हैं। बिल्ली को देखना, बैल का बोलना बुरे शकुन हैं। पहिले ये लोग चोरी नहीं करते थे। परन्तु पश्चिमी सभ्यता और सिनेमा में चोरी करने के दृश्य देखकर ये लोग भी चोरी करने लगे हैं। यह लोग भी गोमा (नाच) करते हैं। खड़ाम पहिनते हैं। पहिले बनस्पति का बना कपड़ा कमर के चारों ओर लपेटते थे। लम्बा चोगा और टोपी उनका पहिनावा है। लम्बे कोट को



कवीरेण्डो डगडीज़

इनका पहनावा विचित्र और देखने योग्य है।



मम्बासा में हब्शियों का नाच।

जोहों और बुश्ती कहते हैं। औरतें काली पोशाक और बुर्का जिसे लुंगा कहते हैं पहिनती हैं। अधिकतया धारीदार वस्त्र पहिने जाते हैं। स्त्रियां कानों में बालियां और नाक में ज़ेवर पहिनती हैं हाथों में लोहे के तार की चूड़ियां पहिनती हैं। मिट्टी के बर्तन, टोकरियां चटाइयां खजूर के पत्तों से तैयार करते हैं। लुहार, सुनार और बढ़ई के काम में होशियार हैं।

नारियल से बहुत काम लेते हैं। और कई प्रकार की वस्तुयें तैयार करते हैं। यद्यपि ये लोग मुसलमान हैं परन्तु जिन, भूत, तावीज़ गण्डे आदि सब प्रकार की मिथ्या पूजा को मानते हैं। किसी के हाथ में कैंची देना अशुभ मानते हैं। झूठ बोलना उनके लिये साधारण बात है। आराम तलब, फ़िज़ूल खर्च, अदूरदर्शी होते हैं। रिश्वत लेना और हर काम के लिये पैसा मांगना उनका काम है। उपकार करना नहीं जानते। अब वे विलायती वस्त्र पहिनने लगे हैं।

ऐराबी लोगों ने भी अपने रस्म व रिवाज़ों में परिवर्तन नहीं किया है। जैसे अरब से आये थे वैसे अब भी हैं। नमाज़ के पाबंद हैं। वे भी भूत प्रेत और भ्रम जाल में फंसे हुये हैं। मकानों की कारीगरी शीराज़ी नमूने की है। सुल्तान बरघश के पुराने आलीशान महल, स्तम्भ और स्नानागार बाग़ पुरानी यादगार है और अब खण्डहरों के रूप में मिलते हैं। अंग्रेज़ लोगों ने प्राचीन कारीगरी की खोज की है। उनके बहुत से रस्म रिवाज भारत से

मिलते हैं। उनके संस्कारों में भारत के प्राचीन संस्कारों की झलक दिखाई देती है।

जन्जीबार के पुराने खण्डरात

(१) सबसे पहिले तम्बानो द्वीप के खंडर हैं। (२) मगोगनी के खंडर स्थान (३) कमकज़ी के कई खंडर (४) एक छोटी मस्जिद खण्डाजवाका में है। अंगोजाको जो पुराना जञ्जीबार था उसके खंडर हैं। जन्जीबार से तीन मील की दूरी पर समुद्री किनारे बरघश सुल्तान के शाही महल व तहखाने अब खंडरों की दशा में है। बड़े २ स्तम्भ सीमेंट और चूने के बने हुये हैं जो प्राचीन महानता का प्रमाण दे रहे हैं। उसके निकट एक बड़ा विशाल बाग था। जिसकी पक्की दीवारें अब भी खड़ी हैं। इस बाग़ में कई विशाल तालाब थे जिनमें बेगमें स्नान किया करती थीं अब यह सब टूटी फुटी दशा में हैं।

पम्बा द्वीप में पंदरह बड़े खंडर पाये जाते हैं। लकड़ी की नक्शकारी बड़ी उच्च कोटि की दृष्टि पड़ती है। इन खंडरों में चीनी बर्तन, ईरानी शीशे और भारत की मालायें पाई जाती हैं।

जन्जीबार के कुछ प्रसिद्ध पुरुषों के नाम

(१) थारियामल कोपनीमल मर्चैंट (२) लालजी प्रागजी मरचेन्ट (३) हंसराज वल्लभदास जनरल मरचेन्ट (४) विशन जी

वल्लभदास मरचेन्ट (५) हरजीमल भानजी (६) बिहारीलाल अन्तानी एल०एल० डी० मालिक सम्पादक अख़बार जन्जीबार वायस (७) जेठा लीलाधर मालिक बैंक व जनरल मरचेन्ट (८) दामोदर प्रेमजी मरचेन्ट (९) विट्ठलदास कृष्णादास (१०) टीकम जी प्रेम जी।

जञ्जीवार के बैङ्क—स्टैण्डर्ड बैंक आफ साउथ अफ्रीका (२) नेशनल बैंक आफ इण्डिया (३) जेठा लीलाधर का बैंक।

ऐराबी लोग दस हज़ार, अंग्रेज़ लोग १५० के निकट यहां पर आवाद हैं कुल क्षेत्रफल ३७०६८ एकड़ है और पम्बा द्वीप २३८०८ एकड़ हैं। अप्रेल और मई यहांपर वर्षा के महीने होते हैं। यसांपर ५२ से लेकर ६० इञ्च तक वर्षा होती है। ८० मील तक मोटर की पक्की सड़क है। प्रायः पुराने लोग महोगो (एक प्रकार की घास होती है) की रोटी खाते हैं। परन्तु अब तो मकई, मोट; बाजरा, चावल की पैदावार भी होने लगी है। लोग भारत का आटा और सब्ज़ियां खाने लगे हैं। हिन्दुस्तानियों के आने से पहिले यहांपर सब्ज़ी की खेती नहीं होती थी परन्तु अब तो मूली, बैंगन, तोरी, कद्दू और पेठा सब प्रकार की तरकारियां पैदा होती हैं।

बारहवां अध्याय

जञ्जीबार में मेरा प्रचार

१२जून को सायंकाल के समय मैं जञ्जीबार उतरा जहाज़ पर सामाजिक भाई लेने के लिये आये हुये थे। बड़े आदर सत्कार से ले गये।

१३ जून से हमने प्रचार आरम्भ किया। लोग बड़े प्रेम व श्रद्धा से सुनते रहे। श्रोतागण प्रतिदिन बढ़ते गये। भिन्न २ विषयों पर व्याख्यान हुये। स्त्रियों को प्रथक व्याख्यान दिया। पुत्री पाठशाला में भी हमारा व्याख्यान हुआ। गोवानी इन्स्टीटयूट में एक व्याख्यान अंग्रेज़ी में हुआ। उपस्थिति बहुत थी। मिस्टर याकूबअहमद एडवोकेट ने प्रधान पद को स्वीकार किया। जनता व्याख्यान सुनकर बड़ी प्रभावित हुई। एक और व्याख्यान शक्ति स्क्वायर में जापान में संगठन पर दिया। जनता ने इन व्याख्यानों को बहुत पसन्द किया। गवरनर महोदय से भैंट की। उसने भारतियों की अवस्था पर बहुत कुछ बार्तालाप किया। जनता ने व्याख्यान बहुत पसन्द किये और हिन्दू, मुसलमान, खोजे आदि सब लोग सुनने के लिये आते रहे। गवरनर साहब ने लैक्चर की एक कापी मंगाई। मेरे सेक्रेट्री ने टाइप कराकर उनको एक कापी भेज दी।

हम जन्जीबार में २१ जून तक ठहरे। अर्थात् १७ दिन में २१ व्याख्यान दिये। एक गृहप्रवेश संस्कार कराया। एक नाम करण संस्कार कराया। समाज ने मेरे सत्कार के लिये एक प्रीति भोज किया जिसमें १५० स्त्री पुरुष सम्मिलित हुये। इस प्रकार से जनता बहुत प्रभावित हुई। जन्जीबार वायस समाचार पत्र ने मेरे व्याख्यान की बहुत प्रशंसा की और चार लेख अपने पत्र में मुद्रित किये। जो आगे दिये जायेंगे।

जनता कहती थी कि आज तक ऐसे व्याख्यान किसी ने नहीं दिये। जनता की सन्तुष्टि न होती थी। मैं दोबारा २२जुलाई को वहां पर उतरा और आठ दिन लगातार व्याख्यान दिये। जनता ने बड़े प्रेम व शान्ति से सुना।

एक व्याख्यान अंग्रेज़ी में २६ जुलाई को अरब लोगों में देश भक्ति पर हुवा जिसे अरब लोगों ने बहुत प्रेम और उत्साह से सुना और उससे बडे प्रभावित हुये इस प्रकार जन्जीबार में मेरे कुल ३१ व्याख्यान हुये।

रात्रि के समय आर्य समाज में ३० जुलाई को एक बड़ी भारी सभा में मुझे सन्मान पत्र दिया गया। जिसे यहांपर उद्धृत किया जाता है। लोग बड़े प्रेम व उत्साह को प्रगट करते रहे।

To

Dr. JAIMINI MEHETA PANDIT,

B. A., L L. B., M. R. A. S., PH. D.

ZANZIBAR.

Revered Pandit ji,

We the undersigned on behalf of the ARYA SAMAJ IN ZANZIBAR beg to place on recored our profound gratitude for the benifit you have given to us and to all in Zanzibar of your vast learning through your most instructive lectures, discourses and preaching of the ancient learning and culture of India.

Your untiring zeal, unfalling energy, magnificent memory at a ripe age of 63 and extensive store of learning have not only amazed us, but, they have also taught an example worthy of emulation, to many a wary youths in Zanzibar.

Your axtensive and successfull travels in the new and the old world for the sole purpose of conveying to these far off lands, the message of the great Vedas to teach to them the sublimities of that great fountain sources of all religions have won for you a place in the history of modern

reformation in India. Indeed, the great researches you have made through these travels bearing testimony of the existence of ancient Aryan culture in America, the far east, Fiji, Trinidad, British Guina, Mexco and Mauritius have added to the legitimate pride of Bharat Varsha, for her glorious past and through your learned and indefatigable authorship where by you have linked all the acquisition of your knowledge in the form of book, you leave for India of the future a legacy which, we assure you, would not only be highly cherished but would also be valued as the most inestimable heritage, from one, who left his happy hearth and home for the good of his countrymen, for the propagation of the great ideals and the massage of his great Rishi-Maharhi Dayanand Saraswati, who lived and died for mankind in single pursuit of Truth-which he found in the Vedas and which he left fully vindicated as an untarnished source of all culture having been fully tested on the anvil of all the latests of the modern world.

You have fulfilled your mission in East Africa, the peoples where-of have been placed under a debt of gratitude to you which they can ill afford to repay. Self effacement and self

abnegation are the two great features of your character, which have endeared you to all hearts. It is an affection, of the power of which, *Zimmerman* has said : "*there are few mortals so insensible that their affection can not be gained by mildness, their confidence by sincerity, their hatred by scorn or neglect.*" Indeed, you have demonstrated beyond dispute the great cosmopolitan character of the great principles of Arya Samaj laid down by its great founder-Maharshi Dayanand Sarswati.

In conclusion, we wish you success in all your future engagements for your great work of service to religion and the country and beg you to accept the accompanying, as an humble token of our abiding respect, reverence and affection for your most simple, but nevertheless most lovable and great personality.

We beg to subscribe ourselves
Revered Panditji
Your most sincere admirers

Vithalbhai Bhimji
President.

Zanzibar,
30th July, 1933.

Rughnathji P. Mehta
Secretary.

THE ARYA SAMAJ.

सन्मान पत्र श्री जैमिनी महता की सेवा में-

पूजनीय पंडित जी हम लोग आर्य समाज जञ्जीबार की ओर से आपका अत्यन्त धन्यवाद देते हैं। इस लिये कि आपने हमें और जञ्जीबार के समस्त निवासियों को भारत की संस्कृति और प्राचीन विद्या के प्रचार करके अत्यन्त शिक्षाप्रद व्याख्यानों द्वारा अपने विशालज्ञान और अनुभवद्वारा हमें लाभ पहुंचायाहै।

आपके अनथक पुरुषार्थ, अपूर्व उत्साह, अद्भुत स्मरणशक्ति और ज्ञान के विशाल भंडार ने न केवल हमें चकित कर दिया है किन्तु जञ्जीबार के कई उत्साही नवयुवकों को उत्तेजना तथा उन्नति करने की उमंग की शिक्षा दी है। आपने जो नई व पुरानी दुनिया में वेदों का सन्देश देशदेशान्तरों में पहुंचाने के लिये इतना विशाल और सफलता पूर्ण भ्रमण किया है उन समस्याओं ने भारत के वर्तमान सुधार के इतिहास में आपके लिये यश उत्पन्न करने का कार्य किया है। वास्तव में इन यात्राओं में जो आपने अनुसन्धान व गवेषणा की हैं उनसे आर्य सभ्यता का अमेरिका दूरस्थ पूर्वी भाग, फीजी, ट्रीनीडाड, बृटिश गायना, मक्सीको और मारीशस में पाया जाना सिद्ध कर दिया है, उन्होंने भारत के प्राचीन गौरव व महत्ता को प्रकाशित कर दिया हैं और आप ने विद्वतापूर्ण अनथक आन्दोलन से जो पुस्तकें इन विषयों पर लिखीं और मुद्रित कराईं उनसे भारत वर्ष में एक ऐसी अध्यात्मिक सम्पत्ति व ज्ञान का कोष उत्पन्न और एकत्रित कर दिया है

जो निश्चय रूप से न केवल जनता व पाठक प्रेम पूर्वक अवलोकन करेंगे। किन्तु वह अनमोल पैतृक-सम्पत्ति भविष्य के लिये समझी जायगी। उस मनुष्य की तरफ से जिसने अपना घर बार अपने देश भाइयों के हितार्थ त्याग किया और उस महापुरुष दयानन्द सरस्वती के संदेश और आदर्शों को प्रगट करने के लिये महान कार्य किया, जिसने वेदों से खोज किये हुए सत्य की जांच और प्रकाशित करने के लिये मनुष्य मात्र के उपकार के लिये अपने प्राण न्योछावर कर दिये और जिसने यह सिद्ध कर दिया कि तमाम संस्कृति का पवित्र स्रोत वेद ही है जिसे अर्वाचीन संसार ने तमाम विद्याओं और सत्य की कसौटी पर परख कर देख लिया है।

आपने पूर्वी अफ्रीका में अपना उद्देश्य सरलता पूर्वक प्राप्त कर लिया है। यहां के लोग आपके उपकार और प्रचार के लिये इतने कृतज्ञ, ऋणी और आभारी हैं जिसका बदला वह किसी प्रकार भी नहीं चुका सकते। आपके आचार विचार में आत्म त्याग तथा आत्म बलिदान ये दो प्रसिद्ध गुण हैं। जिन्होंने आपको सर्व प्रिय बना दिया है और आपने सबके हृदयों को आकृष्ट कर लिया है। यह वह प्रेम है जिसकी शक्ति के विषय में ज़मरमन ने कहा है कि ऐसे मनुष्य संसार में दुर्लभ हैं जिनका प्रेम नम्रता और विश्वास शुद्ध हृदय से प्राप्त न कर सकें। निस्संदेह आर्य समाज के उत्तम सिद्धान्तों को जिन्हें महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रगट करके स्थापित किया आपने सार्वजनिक विशेषताओं को

प्रकाशित कर दिया है जो आपकी महानता को प्रगट करती है।

अन्त में हम प्रार्थना करते हैं कि आपने जो देश और धर्म के महान कार्य को हाथ में लिया है उसके भविष्य कार्यों में आप को सफलता प्राप्त हो। और हम नम्रता पूर्वक विनय करते हैं कि आप हमारी इस तुच्छ भेंट, स्मरण चिन्ह को जो आपके हार्दिक सन्मान, सत्कार और प्रेम के प्रगट करने के लिये आपके अत्यन्त सरल स्वभाव और प्रेममय महान व्यक्ति के लिये उपस्थित की है, स्वीकार करेंगे।

हम हैं पूजनीय पंडित जी

आपके अत्यन्त शुभचिन्तक प्रेमपात्रः-

विट्ठल भाई भीम जी प्रधान

३० जु० १९३२ ई० }

रघुनाथ पी० महता मन्त्री

आर्य समाज जञ्जीबार

अब मैं समाचार पत्र जञ्जीबार वायस के चार लेख अनुवाद सहित नीचे प्रकाशित करता हूं जिससे जनता को विदित हो जाय कि जञ्जीबार निवासियों ने इन व्याख्यानों की किस प्रकार प्रशंसा की है और उनसे वे कितने प्रभावित हुये हैं और प्रेम प्रगट किया है।

The Zanzibar Voice 18 th June, 1933.

Professor Jamini Mehta's Illuminating Lectures.

Proffessor Jaimini Meheta, B. A., L L. B., M. R. A. S., PH. D., Aryan Missionary who arrived here on Monday last commenced his series of lectures from Wednesday last in Arya Samaj Temple. The learned and veteran Pandit at once proved his wide knowledge and won the hearts of his audienee which is daily increasing in numbers through his illuminating lectures. His first lecture was on the sucject of Vedic Culture in America wherein he showed how ancient the Aryan Civilization in America has been. He has brought with him ancient coins and other such proofs of symbols obtained out of excavations of ancient ruins in Ameriea which are the evidence of the Aryan Settlement in the country atleast some 7500 years ago. Pandit Jaimini has a most retentative memory which at his age which is above 60 does great credit to him. He is almost a talking encyclopoedea. In his world tour on an extensive scale he has made many friends in Trinidad, British Guiana, Java and Fiji and has converted many to the fold of Aryan Cult and Philosophy in these countries.

Panditji will deliver further lecturrs on Vedic Culture in Fiji aud Mauritius, and Japan on Sunday and Monday.

महता जैमिनी के ज्ञान से भरपूर व्याख्यान

महता जैमिनी यहां सोमवार को पहुंचा । आर्य समाज मंदिर में बुधवार से उसने व्याख्यान आरम्भ किया । योग्य तथा उत्साही पंडित ने एक ही व्याख्यान में अपना विशाल ज्ञान प्रगट किया और श्रोतागणों के हृदयों को आकृष्ट कर लिया । जो उसके विद्वत्तापूर्ण व्याख्यानों को प्रति दिन अधिक संख्या में उपस्थित होकर सुनते हैं । आपका पहिला व्याख्यान अमेरिका में भारतीय सभ्यता पर था । आपने उसमें सिद्ध किया कि किस प्रकार से प्राचीन आर्य सभ्यता अमेरिका में प्रचलित रह चुकी है । वह अपने साथ प्राचीन सिक्के और ऐसे चिन्ह लाये हैं जो वहां के खण्डरात के खोदने से प्रगट हुये हैं । उनसे सिद्ध होता है कि आज से साढ़े पांच सहस्त्र वर्ष पूर्व अमेरिका में आर्य जाति के उपनिवेष थे । पंडित जैमिनी की स्मरण शक्ति अत्यन्त अद्भुत है । साठ वर्ष से अधिक आयु रखते हुये ऐसी स्मरण शक्ति का होना उनके लिये प्रशंसा की बात है । वह देहधारी पुस्तकालय है । उसने संसार का भ्रमण करते हुये अपने कई मित्र फीजी, ट्रीनीडाड, जावा और बृटिश गायना में पैदा किये हैं और कई लोगों को शुद्ध करके आर्य धर्म में सम्मिलित किया है और उन्हें वैदिक तत्व

ज्ञान का अमृत पिलाया है। अब वह मारीशस फीजी और जापान में वैदिक संस्कृति के प्रभाव पर रविवार और सोमवार को व्याख्यान देगा।

Zanzibar Voice - 25th June, 1933

Professor Jaimini Mehta's Inspiring and Instructive Lectures.

Pandit Jaimini Mehta, B. A., L L. B., M. R. A. S, PH. D., continued his learned lectures under the auspices of the Arya Samaj during the week which have drawn out increasing numbers of audience which have evinced an ever growing interest in them. After narrating the influence of vedic culture and Ancient Aryan civilisation and telling that there is field for maintaining contect of the resident Indian populations with Aryan Civilisation in Fiji, Java and Mauritius, the learned Pandit gave lectures on the evolution of Japan. The speech lasted three days even when only an out line of the colossal activity of Nationalist Japan to build the country to its great international status of today was hardly drawn out. Panditji depicted a marvellous faculty of close observation and keen perception of things

and affairs and his anxiety to compare them to the state of things in India with a view to find out a basis for improvement. The system of education in Japan the object of which is, the Pandit described, raising the standard of the feeling of national self respect and evolution of industrial life of the country needs deep study by the rising Asiatic nations which are still in the making. After hearing Pandit Jaimini on the system of education in Japan one can immediately understand why hitherto the system of national education in India and the activities of social and religious reform have not met with sufficient success. In Japan these things were possible because the country had its own national government which recognised the necessity for them and hence one can understand why even a saint like Mahatma Gandhi is seen at the helm of a political organisation of the Congress. The Indian community of Zanzibar has gone under a deep debt of gratitude to Pandit Jaimini for his lectures the like of which have been a rarity in these secular and isolated islands.

जञ्जीवार वायस २९ जून १९३३ ई०

अर्थात्—पण्डित जैमिनीने इस सप्ताह अपने विद्वतापूर्ण व्याख्यानों को आर्य समाज मन्दिर में जारी किया। और जनता प्रतिदिन उनके सुनने के लिये उत्सुक रही और अधिक होतीगई। वेदिक संस्कृति और आर्य सभ्यता पर व्याख्यान समाप्त करने के पश्चात् आपने वर्णन किया कि प्रवासी भारतीयों के साथ हमें संसर्ग न त्यागना चाहिये। योग्य पण्डित ने तीन दिन जापान के विकास पर व्याख्यान दिये परन्तु फिर भी जापान के संगठन व विकास को संक्षेप रीति से उपस्थित कर सके। पण्डित जी की अनुभव शक्ति और सूक्ष्म विचार की बुद्धि ज्ञात पड़ती है। साथ ही वहां की सब घटनाओं और समस्याओं की तुलना भारत की अवस्था से करके बलपूर्वक कहते हैं कि भारत जापान की शिक्षा ग्रहण करके उसका अनुकरण करे। पण्डित जी ने बड़ी उत्तमता और विस्तार से जापान के विकास, जाति संगठन और शिक्षा प्रणाली को वर्णन किया। पण्डित जी का व्याख्यान सुन कर मनुष्य अनुभव कर सकता है कि क्यों भारतवर्ष ने अभी तक जाति संगठन, जाति उन्नति, व्यवसाय व धन्धों के कार्यों में विकास नहीं किया। कारण यह है कि जापान में अपना राज्य था। जापानी सरकार अपनी प्रजा को अपना समझ कर उसकी उन्नति करना अपने लिये लाभदायक समझती थी। इस लिये प्रत्येक मनुष्य समझ सकता है कि क्यों महात्मा गांधी जी जैसा सन्त पवित्र आत्मा, राजनैतिक सुधार करने के लिये अग्रसर है।

जञ्जीबार की भारतीय जनता पण्डित जैमिनी जी की अत्यन्त आभारी है कि ऐसे विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान आकर दिये जो उन्हें इस से पहिले व्याख्यानों के सुनने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ था।

Zanzibar Voice—2nd July, 1913.

Pandit Jaimini's further lectures.

Pandit Jaimini accompanied by his Private Secretary was received by His Exeellency the British resident on Monday last at 10 A. M. at the Residence. Panditji had an interesting conversation with Sir Richard Rankine on a variety of theological and educational topics, with special reference to Panditjis extensive travels all over the world. On Monday at 6. 30 P. M. sharp, Pandit Jaimini. Meheta delivered a lecture in English at the, Goan institute on *India's contribution to world's culture* Mr Ahmed Ayub, Advocate was in the Chair,

The lecture was very learned and proved what a wide store of general information Pandit Jaimini posseased. The lecture lasted for about 1¼ 15 minutes. On Thursday last Panditji delivered a speech at a public meeting at the Shaksi Square in Hindi on '*Nationalism* in *Japan*', under

the auspices of the Bharat Svayamsevak Mandal. Mr. R. K. Shah B. A. L L. B. was in the chair. The audience was very much interested in Pandit ji's experiences in Japan and the method and measures by which Japan could attain such rapid successes in building her present National status within so short a time Panditji exhorted the Indians to achieve National unity inorder to achieve National freedom in like manner.

On Thursday afternoon Panditji addressed a gathering of women at the Arya Samaj Temple under the auspices of the Mahila Mandal. For five days between 8. 30 P. M. to 9. 30 P. M. Panditji delivered sermons on Upnishadas at the Arya Samaj. Panditji left for Dar-es-Salaam on Friday last.

जञ्जीबार ता० २-७-१९३३ ई०

अर्थात्—पंडित जी और उसके निज मन्त्री का बृटिश रेज़ीडेंट ने सोमवार को दस बजे स्वागत किया और धार्मिक तथा शिक्षा सम्बन्धी विषयों पर आपसे मनोरञ्जक वार्तालाप हुआ और साथ ही आपके संसार भ्रमण विषय में बहुत बातें पूछीं। सोमवार साढ़े छः बजे पंडित जैमिनी ने गवानी इन्सटीट्यूट में भारतीय संस्कृति पर व्याख्यान दिया। मिस्टर अहमद याकूब एडवोकेट ने प्रधान पद स्वीकार किया। वह व्याख्यान अत्यन्त

विद्वत्तापूर्ण था । इससे प्रगट होता था कि पंडित जैमिनी को तमाम संसारिक घटनाओं से कितना परिचय है, यह व्याख्यान सवा घण्टे जारी रहा । वृहस्पतिवार को पंडित जैमिनी जी ने सकशी स्क्वायर में जापान के संगठन पर व्याख्यान दिया जो भारत स्वयंसेवक मण्डल की अध्यक्षता में हुआ । मिस्टर आर० के० शाह बी० ए० एल एल० बी० ने प्रधान पद ग्रहण किया । जनता को महता जी के अनुभव से बहुत लाभ पहुंचा । आपने बताया कि किन साधनों से जापान ने अपने अन्दर जाति संगठन और देश भक्ति के भावों को उत्पन्न करके विकास किया । महता जी के बहुत उत्तेजित किया कि भारत की स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिये जातीय संगठन और जातीय भक्ति का होना अत्यन्त आवश्यक है ।

वृहस्पतिवार सायंकाल आपने महिला मण्डल में स्त्री शिक्षा पर व्याख्यान दिया । पांच दिन आपने उपनिषदों से कथा की, जो जनता ने अत्यन्त प्रेम से सुनी । शुक्रवार को आप दारा-सलाम को प्रस्थान कर गये ।

PANDIT JAIMINI MEHETA

The Arya Samaj Missionary Pandit Jaimini Mehta who returned from Dar-es-Salaam last week has continued his learned and interesting

discourses during the week. His thesis on Lord Krishna's flute has been widely appreciated. The discourse was all philosophy. He also delivered lectures on the two great epics of India, Ramayana and Mahabharat. On Saturday night Pandit ji was the guest of the Young Arab Union at their Baghani Hall where he delivered a speech in English on "Patriotism' which was full of learning and instruction to the Arab youths of Zanzibar. Panditji was received in audiance by H. H. the Sultan at the Palace on Saturday at 11. 15 A. M. His Highness evinced great interest in oriental culture and had a lively talk with the Pandit. Panditji will receive an address of appreciation from the Arya Samaj on Monday. He will leave for Nairobi en route to India by the S S. Takliwa on Tuesday. We wish Pandit Jaimini Mehta bon voyage and success in all future engaegments.

अर्थात् जञ्जीबार वायस ता० ३० जुलाई १९३३ ई०

पण्डित महता जैमिनी

आर्य समाज मिश्नरी पण्डित महता जैमिनी जी ने जो शनिवार को दारासलाम से लौटकर आया है सप्ताह भर विद्वत्ता पूर्ण और मनोरञ्जक व्याख्यानों का सिलसिला जारी रक्खा।

उसके व्याख्यान कृष्ण भगवान की बंसरी को समस्त जनता ने बहुत ही पसन्द किया। यह व्याख्यान फिलासफी और तत्वज्ञान का भण्डार था। उसने महाभारत और रामायण की शिक्षाओं पर भी दो उत्तम व्याख्यान दिये। शनिबार के दिन अरब नवयुवक सभा के बागनी हाल में देश भक्ति पर व्याख्यान दिया जो जन्जीबार के अरबी नवयुवकों के लिये अत्यन्त शिक्षाप्रद और विद्वत्तापूर्ण था। शनिवार के दिन सवा ग्यारह बजे हज़ हाईनेस सुल्तान जन्जीबार ने आपको भेंट का सुअवसर दिया। भारतीय सभ्यता के साथ बहुत सहानुभूति और मनोरञ्जकता प्रगट की। और पण्डित जी के साथ बहुत उत्तमता और हंसमुख होकर बार्तालाप किया।

पण्डित जी को आर्य समाज की ओर से सोमवार को मानपत्र दिया जावेगा। वह नैरोबी से होकर एस० एस० तजलिबा जहाज़ द्वारा भारत को जा रहा है। हम पण्डित जी की कुशलता पूर्वक यात्रा समाप्त होने तथा आपके आगामी कार्यक्रम में सफलता प्राप्त करने के लिये प्रार्थना करते हैं।

२९ जुलाई को मैंने सुलतान जन्जीबार से मुलाकात की और सरकारी गज़ट ने भी अपने ६ अगस्त के परचे में इस मुलाकात का वर्णन छाप दिया है। इस प्रकार से मैंने १ अगस्त को जन्जीबार से जहाज़ पर सवार होकर मम्बासा में २ अगस्त को पहुंचकर आराम किया।

Tanganica Herold 1-7-1933.

Aryan Missionary.

I am glad to know that the Dar-es-Salaam Arya Samaj has invited Pandit Jaimini Mehta, B. A. L L. B., M. R. A. S., Ph. D. to perform the opening ceremony of the girls school new premises. I think it will interest your readers to know something about this Aryan Missionary whom Dar-es-Salaam will have an opportunity to welcome on June 30.

Pandit Jaimini is sixty three years old, yet he possesses wonderful memory and works hard. He has toured all the world over and has studied to himself the social and economic conditions and problems to Indians abroad. He is a living "encyclopedia", and his has been the Mission to gain knowledge and serve humanity,

He arrived in Zanzibar on June I2. He has delivered a series of lectures on different subjects under the auspices of Arya Samaj. They have all been masterpieces. Zanzibarians have taken full advantage of this unique opprtunity of listening to a learned, well travelled, experienced and a matter of fact missionary. They have attended to his lectures in such large numbers that meetings had to be arranged in the Yyayamshala compound. He is very

punctual and it is his principle to commence his lecture exactly at the fixed time is respeetive of whether the numbe r of people present at the meeting. To my mind no other Indian of Panditji's ability has up till now visited East Africa,

आर्य प्रचारक

टांगानीका हैरल्ड १-७-१९३३ ई०

अर्थात्—मुझे यह सुनकर प्रसन्नता हुई है कि दारासलाम आर्य समाज ने पंडित जैमिनी आर्य मिश्नरी को आर्य पुत्री पाठ-शाला के भवन के उद्घाटन के लिये निमंत्रित किया है। मैं समझता हूं कि इस आर्य मिश्नरी के सम्बन्ध में दारासलाम की जनता को परिचित करना उचित होगा ३० जून को दारासलाम की जनता स्वागत करने का अवसर प्राप्त करेगी। पंडितजी की आयु ६३वर्ष की है। परन्तु उनकी स्मरण शक्ति अद्भुत है। और अत्यन्त पुरु-षार्थ से कार्य करते रहते हैं।

उन्होंने सारे जगत का भ्रमण किया है और अन्य देशों में भारतियों कीआर्थिक, सामाजिक दशा का उन्हें पूर्ण ज्ञान है। वह जीता जागता देहधारी पुस्तकालय है। और उसका पवित्र कार्य मनुष्य मात्र की सेवा करना और ज्ञान प्राप्त कराना है।

वह १२ जून को जन्जीबार में आया था। उसने आर्य समाज की अध्यक्षता में भिन्न २ विषयों पर कई व्याख्यान दिये

हैं। यह सब व्याख्यान विद्वत्ता पूर्ण थे। जञ्जीबार निवासियों को अत्यन्त उत्तम, शुभ अवसर ऐसे योग्य विद्वान, अनुभवी और वास्तविक सच्चे उपदेशक के विद्वतापूर्ण व्याख्यानों के सुनने का प्राप्त हुवा। जनता उसके व्याख्यानों में इतनी अधिक संख्या में उपस्थित होती थी कि व्याख्यानों का प्रबन्ध व्यायाम शाला के आंगन में करना पड़ा। वह समयानुकूल काम करने वाला है और ठीक नियत समय पर अपना व्याख्यान प्रारम्भ कर देता है। इस बात की परवाह नहीं करता कि जनता कम है या अधिक। मेरी सम्मति में ईस्ट अफ्रीका में अब तक पंडित जी की योग्यता का कोई उपदेशक नहीं पधारा है।

जञ्जीबार समाज की अवस्था

यह समाज १९०६ ई० में स्थापित हुई। उसकेमूल संस्थापक रूजी भाई मिस्तरी थे। १९१३ ई० में आर्य समाज का मंदिर तैयार हुवा। १९२९ ई० में अपना कच्चा मकान गोकलदास हंसराज भाई ने दान किया। और १९३० ई० में गोविन्द भाई पटेल ने ज़मीन खरीद करके समाज को दान की। १९३२ ई० में आर्य समाज के लिये २५ वर्ष के किराये पर मकाम लिया। और उसमें नीचे पुत्री पाठशाला और ऊपर यात्रियों के रहने के लिये स्थान बनायें गये। भाई लक्ष्मण राजाकोट निवासी के श्रम से मंदिर तैयार हुवा जो दस हज़ार रुपये की मालियत का है।



सुहेली माता



मसाई जाति

इनके भूषण देखने योग्य हैं ।

समाज के पास पुत्री पाठशाला है जिसमें ६० लड़कियां पढ़ती हैं उनका वार्षिक व्यय चार हज़ार रुपये। सरकार से कोई सहायता नहीं ली जाती। धार्मिक शिक्षा भी दी जाती है। आर्य समाज के कुल सभासद ३२ है उनमें तीन स्त्रियां भी सम्मिलित हैं। १९३२ ई० में आर्य समाज ने अपनी २५ वर्षीय जुबली मनाई जो बड़ी धूमधाम से मनाई गई। जनता पर उसका बड़ा प्रभाव पड़ा। यह समाज वार्षिक उत्सव बराबर करती रहती है। आरम्भिक सभासदों में से अब केवल विट्ठल भाई भीम जी बाकी हैं। शेष या तो प्रस्थान कर गये या परलोक सिधार गये। समाज की उत्तम अवस्था है। गुजराती भाई बडे प्रेम से कार्य चला रहे हैं।

यहां भारत से पंडित हरि शंकर विद्यार्थी, महारानी शंकर, पंडित गड़वे, स्वामी परमानन्द, स्वामी मंगलानन्द, पं० ईश्वरदत्त, प्रोफ़ेसर रामदेव, पंडित चमूपति, पंडित बुद्धदेव विद्यालङ्कार, डाक्टर भक्तराम आदि प्रचार करने आये। समाज ने यथा योग्य सबका सत्कार किया।

महाशय रघुनाथ जी महता मंत्री, विट्ठल जी भीम जी अधिकारी, शिव जी भाई और गोकुल भाई बहुत पुरुषार्थी और सज्जन प्रेमी पुरुष हैं। यह लोग आर्य समाज के रत्न हैं।

जञ्जीबार में रमणीक स्थान

जहां आजकल जञ्जीबार है पहिले यहां समुद्र था। पुराना जञ्जीबार यहां से २० मील की दूरी पर था। सुल्तान बरघश के पुराने महल और शाहज़ादियों के बाग़ और स्नानागार खण्डरों की शक्ल में वर्तमान जञ्जीबार से ३ मील की दूरी पर खड़े हैं। मम्बासा से ४ मील की दूरी पर एक मस्जिद अब तक विद्यमान है जो पांच सौ वर्ष की पुरानी है। सरकार अब उनकी मरम्मत कराती रहती है। उन पर सन हिजरी लिखा हुआ है। जिससे पाया जाता है कि पांच सौ वर्ष के पुराने मकान, मस्जिद आदि बने हुये हैं।

जञ्जीबार से २५ मील की दूरी पर पश्चिम की ओर समुद्री किनारा है। जहां रेज़ीडेण्ट सुल्तान और एशियाई लोगों के ठहरने के मकान बने हुये हैं। प्रायः वहां पर सैर करने के लिये लोग आते जाते हैं। मोटर का रास्ता है। यह स्थान बड़ा रमणीक और शुद्ध वायु वाला है। जञ्जीबार से ४६ मील की दूरी पर दूसरी तरफ समुद्र का किनारा है और उसके निकट भी एक गुफा है। समुद्री तट की वायु बड़ी चित्ताकर्षक है और दृश्य अत्यन्त मनोरञ्जक है। गुफा में नीचे उतरने के लिये सीढ़ी लगी हुई हैं। उनके द्वारा लोग नीचे उतर जाते हैं। यह गुफा एक मील लम्बी है। अब उसमें नीचे पानी है। अंग्रेज़ लोग हाथ में मशाल लेकर और हवा पहुंचाने के रेसपीरेटर (Respirater) यन्त्र

लेकर तम्बेड़ पर बैठ कर जाते हैं। और सारा दृश्य देखते हैं। ऊपर से एक भी एक सूराख रोशनी और हवा के जाने का है। परन्तु यह काफ़ी नहीं है।

दूसरी गुफा इससे ३ मील की दूरी पर है। यह बहुत लम्बी नहीं है। तीसरी गुफा कुवें के समान है। उसमें उतरना कठिन है। न मालूम ये गुफायें स्वाभाविक रूप से बनी हैं या किसी प्राचीन काल के दक्ष कारीगर ने अपनी शिल्पकारी बल पर तय्यार की थीं। अभी उनके विषय में कोई अन्वेषण नहीं कर सका। इनके अतिरिक्त ३० मील पर एक स्वाभाविक तालाब है। उसमें बड़े २ अजगर तैरते हुये और घास में छिपे हुये बैठे दिखाई देते हैं। तालाब के निकट एक घना जंगल भी है जिसमें सूअर और चीते बहुत पाये जाते हैं। जंगल से निकलने पर एक पहाड़ी दिखाई देती है। इसका दूर से बड़ा सुहावना दृश्य दिखाई देता है। यहां के जंगलों में केला स्वयं उत्पन्न होता है। और वृक्ष बहुत घने नहीं हैं। फिर भी जंगल भयानक प्रतीत होते हैं। भारतीय लोगों ने अपने स्थान अच्छे बना लिये हैं। लौंग और नारियल के वृक्ष और आपके झाड़ जन्जीबार की बड़ी शोभा बढ़ाते हैं।

तेरहवां अध्याय

टाङ्गानीका देश का वृतान्त

प्रथम काण्ड—प्राचीन अवस्था

यह प्रान्त विक्टोरिया नाइन्ज़ा सरवर तथा बृटिश पूर्वी अफ्रीका के मध्य में स्थित है। उसका क्षेत्रफल ३८५००० वर्ग मील है। अर्थात् पूर्वी अफ्रीका में सब से बड़ा बृटिश सरकार का प्रान्त है। यह प्रान्त वास्तव में जर्मन सरकार का था परन्तु महायुद्ध के समय में बृटिश सम्राट ने सन १९१६ ई० में इसे अपने अधिकार में ले लिया। युद्ध की समाप्ति पर वैसलेज की सन्धि के अनुसार यह प्रान्त अंग्रेज़ों के अधिकार में रहा। इसमें से दो ज़िले रवाण्डा और अरण्डी बेलज़ियम को मिल गये। शेष प्रान्त पर बृटिश सरकार की ध्वजा फहराने लगी। इस प्रान्त में नदियां और पर्वत बहुत हैं। पर्वत कलेमानजारो उन्नीस हज़ार फ़िट समुद्र के धरातल से ऊंचा है। दूसरा प्रसिद्ध पर्वत मेरु है जो १५ हज़ार फ़िट ऊंचाई पर है।

इस प्रान्त में बड़े २ नगर दारासलाम, मवान्ज़ा, टबोरा आदि हैं। जर्मन सरकार ने दारासलाम को अपनी राजधानी बनाया था। पहिले पहल सुल्तान मजीद ने जो जन्जीबार का सुल्तान था सन १८६२ ई० में नौआबादी की स्थापना की थी। परन्तु सन १८७१ ई० में उसके मरने के पश्चात मुसलमानों ने

उसे छोड़ दिया। इसलिये यहां के मकान आदि खण्डर हो गये। सन १८८७ ई० में जर्मन सरकार ने यहां एक क़िला बनाया और उसे स्वरक्षा का स्थान बनाया। परन्तु दो वर्ष पश्चात यहां अपनी राजधानी बनाली। अरब लोगों ने आठवीं शताब्दि में इसे आबाद किया था। परन्तु अब जो प्राचीन-सिक्के यहां से निकले हैं उन से पता चलता है कि ईरान के लोग पांचवीं शताब्दि में यहां पर अपना अधिकार रखते थे।

सब से प्राचीन नगर इस प्रान्त का कलवा है जिसे शीराज के बादशाह ने सन ६७५ ई० में आबाद किया। अब भी दो पुरानी मस्जिदों के खण्डर वहां पर पाये जाते हैं। तेरहवीं शताब्दि के अन्त तक ईरान और अरब के लोगों की बस्तियां यहां पर आबाद रहीं। अबन बतोता यात्री चौदहवीं शताब्दि में यहां की उच्च सभ्यता का वर्णन करता है। अठारहवीं शताब्दि में डाक्टर लौंग हरोन, स्टैनले, लैफ्टीनैण्ट कैमरन, जानस्टन और टामसन ने टांगानिका सरवर का खोज निकाला। फिर जर्मन के वानडैकन ने डाक्टर क्रस्टन के साथ मिल कर कलेमानजारो पर्वत का पता लगाया। सन १८६५ ई० में उसने जोबान्दी का खोज किया। परन्तु सोमाली लोगों ने उसे क़तल कर दिया।

सन १८८४ ई० में डाक्टर कौल पीटर्स ने एक सभा की स्थापना की जिसका नाम "जर्मन उपनिवेश स्थापित कर्तृ सभा" रक्खा। स्वयं भी पूर्वी अफ्रीका में जञ्जीबार तक आया। तत्पश्चात् वह खुजन में गया। और वहां से अलगरो में जाकर ठहरा। वहां

के अध्यक्षों के साथ सन्धि की। सन १८८५ ई० में छः जातियों के सरदारों के साथ सन्धियां करके वहां अपना प्रभाव और अधिकार जमाया।

सुल्तान जञ्जीबार को ये बात नापसन्द थी। बृटिश सरकार ने अपने कौंसिल सर जान कर्क को जो जञ्जीबार में था आज्ञा की कि वह जर्मन की सहायता करे। और जर्मन को निश्चय करा देवे कि अंग्रेज़ लोग जर्मन के उपनिवेश बनाने के कार्य में बाधा डालने का विचार नहीं रखते। परन्तु अरब के लोग जर्मन का इस प्रकार का अधिकार मानने के विरुद्ध ही थे। इस लिये जोशायर के आधीन अरबी लोगों ने क्रान्ति की। १८८८ ई० में जर्मन की कम्पनी ने सैयद खलीफा के साथ सन्धि की। सुल्तान बरघश का उत्तराधिकारी था इसी के अनुसार ५० वर्ष के लिये टांगा से रोदमा तक का प्रान्त जर्मनी के सुपुर्द कर दिया गया। इस शर्त पर कि सुल्तान का नाम और ध्वजा बनी रहे। राज्य प्रबंध जर्मनी लोग करते रहें। और उसको चुंगी के माल में भी हिस्सा मिले, वार्षिक वेतन या कर भी मिलता रहे। परन्तु फिर भी मूल निवासी लोग कहीं २ क्रान्ति मचा रहे थे।

सन १८८८ ई० में जर्मन सरकार ने एक इम्पीरियल कमीशन को कुछ सेना साथ में देकर पूर्वी अफ्रीका में भेजा। उसने बोशायर को परास्त करके टांगा, सुजनी आदि में क्रान्ति को दबा दिया। अन्त में १८६१ ई० में जर्मन सरकार ने यह प्रान्त अपने अधिकार में लेकर उसे सुरक्षित बना दिया और कम्पनी

यह सब प्रान्त लेकर वान सोडन को पहिला गवर्नर इस प्रान्त का नियत किया। सन १६०५ ई० में फिर कुछ आन्दोलन हुवा। परन्तु गवरनर ने उसे दबा लिया। तब से वहाँ रेल बनाई गई। और १६१४ ई० में रेलवे लाइन सम्पूर्ण बन गई। जो टबोरा से दारा-सलाम तक और अरोण्डा से मोश तक ४०० मील लम्बी थी। तत्पश्चात् मवान्ज़ा से बटोरा तक बनाई गई। अन्त में युरोप के युद्ध के समय में पूर्वी अफ्रीका में भी अंग्रेज़ों और जर्मन के बीच युद्ध प्रारम्भ हो गया। परन्तु १६१६ ई० में अंग्रेज़ों ने जर्मन को परास्त कर लिया और साढ़े सात करोड़ रुपया इस युद्ध में व्यय हुवा और २५ हज़ार अंग्रेज़ी सेना के आदमी भी मारे गये। परन्तु यह सब प्रान्त अंग्रेज़ों के हाथ में आ गया।

अंग्रेजों ने जर्मनी के लोगों की तमाम जायदाद, मकानात आदि को नीलाम कर दिया। हिन्दुस्तानियों ने इस अवसर पर खूब हाथ रंगे। सस्ते दामों पर ज़मीन और मकानात खरीद कर लिये। और अब बहुत मालदार व हैसियत वाले बन गये हैं। १६२१ ई० में जर्मन निवासियों को इस इलाकेमें प्रवेश करने और अन्त जातियों के समान निवास करने तथा जायदाद खरीदने और व्यापार करने की आज्ञा मिल गई। १६२१ ई० में सरकार अंग्रेज़ी ने इस प्रान्त का प्रबन्ध भली प्रकार कराया और एक शासन कार्य सभा बनाई जिसका प्रधान गवरनर साहब, और चीफ़ सेक्रेटरी, डाइरेक्टरान शिक्षा विभाग, आरोग्यता विभाग, कृषी विभाग उसके सभासद बनाये गये। परन्तु गवरनर महोदय

को अधिकार दिया गया। कि उनकी सफारिश को रद्द करदे या अमल न करे। १९२६ ई० में लैजिस्लेटिव कौंसिल नियत हुई। उसमें भी गवरनर प्रधान और १३ सरकारी अफसर सभासद और दस अन्य सभासद होते हैं जिन्हें नियत करने का अधिकार गवरनर महोदय को है। उनमें किसी सम्प्रदाय या जाति की शर्त नहीं है। जिसे गवरनर उचित समझे उसकी योग्यता देखकर सभासद बनादे। आजकल दो हिन्दुस्तानी सभासद कौंसिल में नियत हैं।

दारासलाम को सरकार अंग्रेज़ों ने भी अपनी राजधानी बनाया। इसके बाज़ार और गलियां बहुत विशाल हैं। यह नगर नये नमूने का बनाया गया है। सफाई ऐसी उत्तम है कि अफ्रीका के किसी और नगर या भारत के किसी नगर में ऐसी न होगी। यहाँ जंगल पडा था अंग्रेज़ों ने वहां सफाई कराके बडी सुन्दर कोठियां और बंगले बनाये हैं। १९२८ ई० में इस नगर की विशालता को बहुत बढ़ा दिया है। इस नगर की मनुष्य संख्या २५ हज़ार है। इन में १६ हज़ार गोरे और ५ हज़ार हिन्दुस्तानी है शेष सब यहां के मूल निवासी हैं।

इस शहर में गवर्नमैंट हाउस, हाई कोर्ट, २ बड़े २ रोमन कैथौलिक गिरजे, बेङ्क, होटल और कितने ही बड़े सुन्दर विशाल भवन हैं। समुद्र का किनारा ३ मील तक लम्बा चला गया है। वहां स्नान करने के लिये स्थान बने हुये हैं। किनारे के पास पानी में पथरीली ज़मीन है। चट्टान है, पहाड़ियां भी हैं। इसी

लिये जहाज़ किनारे पर नहीं आते हैं। समुद्र में खड़े हो जाते हैं। लोग मोटर, किश्तियों और साधारण नौकाओं पर बैठ कर किनारे पर आते हैं।

कुल टांगानीका की जन-संख्या १६२१ ई० में ४७४०१०६ थी इसमें १० हज़ार हिन्दुस्तानी, ५ हज़ार गोरे लोग थे, बाकी सब मूल निवासी थे। हिन्दुस्तानियों में अधिकतया लोग गुजरात, कच्छ काठियावाड़ के हैं। पञ्जाबी और यू० पी० के बहुत थोडे लोग हैं। यह लोग व्यापार का काम करते हैं। यहां भी खोजे लोग आग़ाखानी बहुत धनाढ्य हैं। ईसाई मिश्नरियों का यहां पर बहुत ज़ोर है। उनके गिरजा-घर बड़े विशाल हैं। यूरोपियन शफ़ाख़ाना भी बहुत उत्तम बना हुआ है। बिजली और पानी का यहां उत्तम प्रबन्ध है। समुद्र के किनारे पर तमाम यूरोपियन लोगों की आबादी है। आबहवा बड़ी उत्तम है। यद्यपि यह इलाक़ा भूमध्य रेखा के निकट है परन्तु समुद्र के किनारे पर होने के कारण जलवायु उत्तम है। मार्च, अक्तूबर, नवम्बर वर्षा की ऋतु है। जुलाई अगस्त शीतकाल के भाग हैं। परन्तु पञ्जाब के मार्च मास से अधिक सर्दी नहीं पड़ती।

मच्छर और एक प्रकार की मक्खी बहुत होती है। इसलिये मलेरिया बुखार और काला बुखार भी होता है। अंग्रेज़ों ने सफ़ाई करके बहुत कुछ मच्छर हटा दिये हैं। परन्तु कोनेन का फिर भी उपयोग करना ही पड़ता है।

मूल निवासी लघु कद के होते हैं। उनकी भी अनेक जातियां हैं। उनमें से सकोमा चाजा, ज़रामो, बनिया, नगोनी, गोगो और नरञ्जा बहुत प्रसिद्ध हैं। आमतौर पर सुहेली भाषा है परन्तु एक सौ के लगभग बोलियां हैं। दफ्तरों और अदालतों में अंग्रेज़ी भाषा के साथ २ सुहेली भाषा सीखनी पड़ती है और उसमें परीक्षा पास करनी पड़ती है। जर्मनी वालों ने तो बर्लिन में सुहेली भाषा सीखने का स्कूल भी खुलवा दिया था जिससे जो जर्मनी अफ्रीका में जाना चाहे उन्हें सहूलियत हो। अंग्रेज़ों ने कई ऐसी पुस्तकें बनाईं जिनके द्वारा सुहेली भाषा को सुगमता से सीख सकते हैं। यह भाषा डेढ़ करोड़ के लगभग अफ्रीकन लोग बोलते हैं। यह सीखने से बहुत जल्द आ जाती है। इसमें हिन्दी, अंग्रेज़ी, जर्मनी और अरबी भाषा के बहुत शब्द मिलाते हैं।

यहां भी फल बहुतायत से होते हैं। विशेषकर आम, पपीता, केला और नारियल होते हैं। सन्तरा, मचोंगा यहां भी होता है। पैदावार यहां की काफ़ी, तम्बाकू, चावल, अनाज, मकई, बाजरा, रुई, केतकी बहुत होते हैं। इनके अतिरिक्त गन्ना तथा तरकारियाँ, प्याज़, बैंगन, मूली, मिर्च, टमाटो, अनन्नास आदि सभी होती हैं।

१९२९ ई० की बरामद वस्तुओं की निम्नलिखित सूची है:-

नाम वस्तु	संख्या (टन)	मालियत (पौण्ड)
१. शहद	४९०	७१०००

नाम वस्तु	संख्या (टन)	मालियत (पौण्ड)
२. नारियल	६३१८	१६२०००
३. काफ़ी	१०४३१	६३१६५७
४. रुई	४६४७	४८६८६३
५. अनाज (चावल के सिवाय)	१४१३८	१५५७७१
६. मूङ्गफली	१०५६५	१८३५८२
७. रबड़	१२८७	४३२५१२
८. सरसों	४२५६	७४३४३
९. सेल	४५७२८	१४८१८६३
१०. घी	४५४	३६५४७
११. जानवरों की खाल	२५४६	२१३०८०
१२. चावल	४५४६१	२७३५५००

कुल मीज़ान बरामद बस्तुओं की ४ ८५६.२ पौंड है और दरामद बस्तुओं का मूल्य ३६८८३६५ पोंड है। मार्ग में आने जाने वाले माल का मूल्य २५३१२०६ पौंड है। कुल दरामद बरामद १०८०५५३२ पौंड की है इसमें से ५४½ फी सदी माल बृटिश सम्राट के उपनिवेश आदि से आया। १२ फी सदी जर्मनी से, शेष अमेरिका, जापान हालैण्ड आदि से माल आया।

मूल निवासी अधिकतया सेल और कपास की खेती करते हैं। इस प्रान्त में सोना भी निकलता है। १९२६ई० में यहां से १०५३६ औंस सोना ३८९६१ पौंड का बरामद हुआ। २३३० ०

कैरट के हीरे ८८२७० पौंड के निकले । इसी प्रकार तांबा, गंधक कीमती पत्थर भी निकलते हैं। नमक और टीन भी बरामद होता है।

इस प्रान्तमें ५०लाख मवेशी, २२लाख भेंड़ें, २६लाख बकरियां ढाई हज़ार सूअर, ५० हज़ार गधे हैं। घोड़े बहुत कम हैं। हाथी भी बहुत होता है। शेर सांप छिपकलियां और रेंगने वाले जानवर कई प्रकार के होते हैं। ११० किस्म के सांप हैं ७८ किस्म की छिपकालियां हैं। गिरगट,कछुवे, हिरन, बारहसिंगे कई प्रकार के पाये जाते हैं।

शिक्षा की अवस्था

यहां मिशन स्कूल और गवर्नमेंट स्कूल हैं। स्कूलों को सरकारी सहायता मिलती है। सरकार का कुल शिक्षा व्यय १२७२११ पौंड है। स्कूल छः श्रेणियों तक होते हैं। ६ मिशन सैन्ट्रल और ८ सरकारी सैन्ट्रल स्कूल हैं। उनमें कामरशियल (टाइपिंग शार्टहैण्ड आदि हिसाब किताब रखना) और शिल्पकारी तथा चित्रकारी की शिक्षा दी जाती है। ऐसे ही कृषि की शिक्षा नौकरी करने की शिक्षा देने और उस्ताद बनाने के स्कूल भी हैं। स्त्रियों के लिए टबोरा, मतङ्गी और अरङ्गा के ज़िलों में मिशन सोसाइटी ने स्कूल चला रक्खे हैं। उन्हें आरोग्य बच्चे पैदा करने और डाक्टरी की शिक्षा भी दी जाती है। कुल प्रान्त में ६५ सरकारी स्कूल हैं। उनमें ५५०० विद्यार्थी शिक्षा पा रहे हैं। और

२६०३ ईसाईयों के स्कूल हैं। उनमें ६० हज़ार के लगभग विद्यार्थी पढ़ते हैं। पादरी लोग ६ लाख रुपया शिक्षा पर व्यय कर रहे हैं जो मूल निवासियों को शिक्षित करने पर लगाते हैं। प्रचार का व्यय इसके अतिरिक्त है।

१९२६ ई० में सरकार ने हिन्दुस्तानी बच्चों की शिक्षा का विचार किया। और हिन्दुस्तानी स्कूलों की इमारत पर पांच हज़ार पौंड सरकार ने और ३हज़ार पौंड हिन्दुस्तानियों ने दिया एक लाख रुपये से भवन बनाया गया। अब यहां २१५ लड़के शिक्षा पा रहे हैं। छोटी क्लासों और स्कूलों में गुजराती और हिन्दी पढ़ाई जाती है। बड़ी श्रेणियों में अंग्रेज़ी पढ़ाई जाती है लन्डन की मैट्रिक परीक्षा के लिये लड़के तैयार किये जाते हैं। कई स्कूल हिन्दुस्तानियों ने भी बनाये हैं। उनको भी सरकार सहायता देती है कुल २४ हिन्दुस्तानी स्कूलों में १७०० लड़के पढ़ते हैं। अमरोशा, दरोमां, टांगा के स्कूलोंको सरकार सहायता देती है। दारास्सलाम के गवर्नमेंट इंडियन स्कूल में स्काउट की शिक्षा का भी प्रबन्ध है।

चुनांचे वहां २५ लड़कों की स्काउट की एक टीम भी है। आर्य समाज ने भी इस कार्य में बहुत भाग लिया है। आर्य समाज ने पुत्री पाठशाला खोली हुई है उसमें एकसौ क लगभग लड़कियां शिक्षा पाती हैं। उनको धार्मिक शिक्षा भी दी जाती है। भजन कहना, चित्रकारी आदि की शिक्षा भी दी जाती है। उनके लिये

उत्तम व्यायामशाला भी बनाई गई है। लड़कियों को व्यायाम करना सिखाया जाता है। पहिले समाज मन्दिरमें पुत्री पाठशाला लगती थी अब ४५ हज़ार शिलिङ्ग की लागत से एक विशाल भवन बनवाया है। उसमें हिन्दू सोशलसभा, हिन्दू व्यायामशाला आदि के कार्यालय भी हैं। भवन बड़ा सुन्दर है।

आर्य समाज यहांपर बड़ा सराहनीय कार्य कर रहा है। सनातन सभा ने भी अपना मंदिर बनवाना प्रारम्भ किया है। यहां हिन्दू, मुसलमान या अन्य जातियों में वैमनस्य नहीं है। सिक्खों का गुरुद्वारा भी अच्छा बना हुवा है। यहां हिन्दुस्तानी वैरिस्टर, डाक्टर और मास्टर भी हैं। कोई कोई पुलिस, रेलवे और दूसरे विभागों में भी नौकर हैं। परन्तु अब नये हिन्दुस्तानियों को सरकार नौकरी नहीं देती है। अब अफ्रीकन लोगों के लिये हर प्रकार की शिक्षा का प्रबन्ध करके उन्हें तैयार किया जाता है। यहां से जहाज़ दक्षिणी अफ्रीका और युरोप को मम्बासा से हो कर जाते हैं। चुनाचे बृटेन, इटली, फ्रांस, जर्मन, जापान और अमेरिका की कम्पनियों के जहाज़ वहां पर आते जाते हैं। इसके सिवाय हवाई जहाज़ चलने का भी इन्तज़ाम हो गया है। १६२१ ई० में पहिले पहल हवाई जहाज़ यहां पहुंचा था अब तो यहां से जञ्जीबार, मम्बासा, नैरोबी तक हवाई जहाज़ जाते हैं और मुसाफिरों के ले जाने का भी प्रबन्ध कर दिया गया है। इसके सिवाय थल मार्ग मोटर द्वारा भी युगेण्डा, मम्बासा और नैरोबी जाने का बन गया है।

इस प्रकार जो लोग समुद्री यात्रा करना पसंद न करें वह मोटर के जरिये बृटिश ईस्ट अफ्रीका की यात्रा कर सकते हैं। रेलवे लाइन दारासलाम से कगोमा तक ७७२॥ मील, तबोरा से मवाञ्जा तक २३५ मील और टांगा से अरोशा तक २७३ मील है। परन्तु यात्रा अधिकतया जहाज़ द्वारा होती है क्योंकि रेल की अपेक्षा जहाज़ में किराया कम लगता है। मवाञ्जा से कोमो को विक्टो-रिया नाइआ में जहाज़ चलते हैं। सप्ताह में एक बार जहाज़ जाता है। ऐसे ही कम्पाला तक जहाज़ जाता है।

ईसाईयों का काम

सन १८५७ ई० में लौंग स्टोन ने इस इलाके का खोज किया और कैम्ब्रिज व आक्सफ़ोर्ड में व्याख्यान देकर नवयुवकों को उत्तेजित करके ईसाईयत का प्रचार करने के लिये बहुत ज़ोर दिया। जिसका परिणाम यह हुआ कि एक यूनीवर्सिटी मिशन क़ायम हुआ इसमें कई नवयुवक भरती हुये। इस मिशन ने यहां आकर ईसाई धर्म फैलाने और स्त्री विक्रय के रिवाज को कम करने में बहुत काम किया। मिश्नरी लोगों ने अपनी जान पर खेल कर बहुत कष्ट उठा कर अफ्रीकन लोगों में ईसाई धर्म का प्रचार किया, अब उसका फल वे चख रहे हैं। यहां के असली बाशिन्दे अपने गिरजा घर स्वयं बना रहे हैं और ईसाई धर्म का प्रचार कर रहे हैं। चुनाचे इस समय १७ मिशन सोसाइटियां यहां पर ईसाई मत का प्रचार कर रही हैं।

अर्थात्—(१) इङ्गलिश चर्च (२) यूनीवर्सिटी मिशन (३) चर्च मिशन सोसाइटियां (४) लन्दन मिश्नरी सोसाइटी (५) बर्लिन मिशन सोसाइटी (६) लैपज़ग मिशन (७) अगस्तानालो चर्च मिशन (८) न्यूक्रिश्चियन मिशन (९) एडविन्स्टन मिशन (१०) अफ्रीकन इनलैंएड मिशन (११) मोरवियन मिशन (१२) बैथल मिशन (१३) वाइट फादर्स मिशन (१४) कस्पूसन मिशन (१५) फादर्स होली घोस्ट मिशन (१६) बैनी डिक्शन फादर्स (१७) इटैलियन फादर्स कन्वीशन।

आर्य समाज का काम केवल हिन्दुस्तानियों तक ही सीमित है। असली निवासियों में आर्य समाज ने कोई काम नहीं किया। ईसाईयों के अस्पताल भी हैं। उन्होंने एक स्कूल गुरुकुल के नमूने का भी दारासलाम से कुछ दूरी पर बनाया है।

टांगानीका में प्रचार और रोज़गार के लिये अभी बहुत क्षेत्र है। अभी सरकार की ओर से यहां आबाद होने के लिये कोई बाधा नहीं है। कृषि के लिये अभी तक यहां पर काम करने का अच्छा अवसर है। जर्मन राज्य के समय लोग अधिक समृद्धि-शाली थे और अधिक स्वतन्त्रता को प्राप्त किये हुये थे परन्तु अब प्रति दिन कड़ी शर्तें यहां भी लगती जाती हैं।

इसके अतिरिक्त हिन्दू लोगों ने मिल कर एक हिन्दू सार्व-जनिक औषधालय खोला हुआ है जिसमें सब हिन्दू जाति के लोगों को मुफ्त औषधियां मिलती हैं। जो मूल्य दे सकते हैं उन

से भी एक दिन के सिर्फ दो आने लिये जाते हैं और यदि कोई डाक्टर को घर बुलावे तो सवा रुपया फ़ीस है। यद्यपि दूसरे डाक्टर ७ रुपये से दस रुपये तक फ़ीस लेते हैं। हिन्दू सभा ने इस प्रकार ये कार्य बड़े उपकार का कर रक्खा है इसमें बड़े कार्यकर्ता, इ० के० पटेल प्रधान, टी० बी० सेठ उपप्रधान, छोटा भाई पटेल मन्त्री, जेठालाल शाह सहायक मन्त्री हैं। प्रबन्धक कर्तृ सभा के अन्य सभासद चतुरभुज दास, गोविन्द भाई पटेल, जेठालाल वैल जी, मानकलाल जी, सी० एस० कुशल हैं और श्रीयुत मथुरादास, कालीदास महता, प्राग जी के सौदागर उसके जीवन भर के लिये सभासद तथा संरक्षक हैं और केशो जी आनन्दजी कोषाध्यक्ष हैं।

डाक्टर दीवान चन्द जी बड़े उत्साह और लग्न से औषधालय को चला रहे हैं और जनता में सर्व प्रिय हैं। यह संस्था जनता के लिये बड़े उपकार का कार्य कर रही है।

दारासलाम में आर्य समाज का काम

यह समाज १९१२ ई० से खुला है और बहुत अच्छी तरह से काम कर रहा है। समाज का मंदिर बड़ा उत्तम बना हुआ है। इस पर २५-३० हज़ार से अधिक लागत आई है। इसमें पुत्री पाठशाला का एक विशाल भवन अलग बन गया है जो साठ हज़ार रुपये की लागत का होगा। उसका उद्घाटन मेरे हाथ से १ जुलाई १९३३ को कराया गया। आर्य समाज में अधिक भाइयों

की संख्या गुजराती लोगों की है जो बड़े श्रद्धालु और प्रेमी भक्त हैं। कुछ पंजाबी भाई भी हैं। सभी बड़े उत्साह से काम करते हैं। सभासदों की संख्या ४० के लगभग है। परन्तु सहानुभूति सभी गुजराती भाइयों की है। मिस्टर गोविन्द भाई पटेल तो आर्य समाज की जान हैं। मथुरादास मान जी, पंडित ऋषीराम, महाशय रामजीलाल गुप्ता मंत्री तथा माधो भाई बड़े उत्साह से काम करते हैं।

निम्न लिखित महानुभावों ने समाज तथा पाठशाला को बड़ी बड़ी रकमें दान की हैं:

(१) मथुरादास मान जी २० हज़ार शिलिङ्ग (२) गोविन्द भाई पटेल १५ हज़ार शिलिंग (३) उमनादास गोरधन जी ५ हज़ार (४) गोविन्द जी मान जी ४५०० शिलिंग (५) माधो जी विश्रामजी २५०० शि० (६) नारायनदास द्वारकादास १५०० शि० (७) केशव जी भाई १००० शिलिंग (८, मनी जी भाई १००० शिलिंग।

दूसरा काण्ड

टांगानीका में प्रचार

३० जून को मैं टांगानीका में पहुंचा। उसी रात को अमेरिका में वैदिक धर्म्म प्रचार पर व्याख्यान दिया। श्रोतागण से समाज मन्दिर भर गया। लोग इस व्याख्यान से अत्यन्त प्रसन्न

हुये। १ जुलाई को आर्य कन्या पाठशाला के नये भवन का उद्घाटन करना था। ३ बजे से ७ बजे तक यह कार्यक्रम था। लगभग १ हज़ार स्त्री पुरुष इसमें सम्मलित हुये। लड़कियों ने भजन गाये और सम्वाद किये। बाजे पर भी गीत सुना। अपने लेख दिखाये। मेरा भाषण शिक्षा प्रणाली पर हुआ।

रात को फिर मेरा व्याख्यान अमेरिका में वैदिक सभ्यता पर हुआ। २ जुलाई को रात्रि के समय फिर मेरा व्याख्यान कन्या पाठशाला के भवन में हुआ क्योंकि समाज के भवन में जनता नहीं समा सकती थी। ये भवन बड़ा विशाल है। व्याख्यान इंडोनेशिया में वैदिक सभ्यता पर हुआ। ३ जुलाई से ८ जुलाई तक भिन्न २ विषयों पर व्याख्यान होते रहे। ६ जुलाई को एक गृह प्रवेश संस्कार, ३ स्त्रियों के यज्ञोपवीत संस्कार कराये। एक सीमन्तोनयन संस्कार कराया। ६ से ११ जुलाई तक फिर व्याख्यान होते रहे। १२ जुलाई को गोवानी इन्स्टीट्यूट में अंग्रेज़ी में व्याख्यान हुआ। जनता बहुत संख्या में थी। लोग सड़कों पर खड़े थे। जनता ने व्याख्यान बहुत पसन्द किया और प्रार्थना की, कि एक व्याख्यान और अंग्रेज़ी में हो। इस पर १३ जुलाई को व्याख्यान कन्या पाठशाला के भवन में भारतीय सभ्यता पर हुआ। इसे भी जनता ने बड़ा पसन्द किया और बड़ी प्रशंसा की। १४, १५ जुलाई को फिर व्याख्यान हुये। १६ जुलाई को प्रातःकाल दो मुण्डन संस्कार एक यज्ञोपवीत संस्कार कराया। सायङ्काल स्त्री मण्डल में भारत की स्त्रियों के आदर्श पर व्याख्यान दिया।

रात्रि के समय अष्टावक्र का उपदेश जो राजा जनक के दरबार में हुआ सुनाया। लोगों ने बड़ा पसन्द किया। आर्य समाज की ओर से अभिनन्दन पत्र दिया गया। परन्तु दूसरे दिन १७ जुलाई को जहाज़ रवाना न हुआ इसलिये उस दिन भी दो घण्टे तक उपदेश किया। जनता बड़ी उत्सुक थी। सभी लोग बड़े प्रसन्न होते थे। १८ जुलाई को मैं वहां से डच जहाज़ में रवाना होकर जन्जीबार को चला। परन्तु जहाज़ ने मुसाफ़िर न लिये। इसलिये २२ जुलाई तक फिर वहां ठहरना पड़ा। जनता को बड़ी प्रसन्नता हुई और चार व्याख्यान और दिये। उपनिषदों की कथा की। लोग बड़े प्रसन्न हुये। और बड़े प्रभावित हुये।

समाचार पत्रों ने जो लेख मेरे व्याख्यानों पर मुद्रित किये और अपनी टिप्पणियां चढ़ाई वह सब यहां पर देता हूं जिससे जनता उन्हें पढ़ कर लाभ उठाये। अभिनन्दन पत्र की नकल भी दी जाती है।

TANGANICA HERALD 1-7-1933.

Indian Civilization.

Pandit Jaimini Metha, B. A. L L. B. delivered a very instrutive and infoımative lecture on the above subject at the Arya Samaj Temple last night.

Panditji proposes to stay here about a fortnight and to give a series of lectures on different subjects. both in Hindi and in English.

In his first lecture he outlined briefly the impressions and experiences gained from his visits to some important parts of North and South America He said that he was the cnly religious preacher to go to North America where people are totally ignorant about India and that his lectures had produced tangible results. He could see clearly, said he, that America had appetite for spiritual knowlege and that Americans looked to India. He further cited some living examplees to drive home the historical fact that Aryan Civilization had established itself in America long before it was discovered and that about five thousand years ago there had existed an Indian Empire carrying its flag as far as America.

Panditji attributed the downfall of India only to "disunity" and emphasised three things preached by Gandhiji in his "home rule"; namely; self-reliance, self-knowledge and self-sacrifice.

He will give another lecture tonight at half past eight.

अर्थात्—पण्डित जैमिनी ने एक अत्यन्त शिक्षाप्रद और प्रभावशाली व्याख्यान पिछली रात को आर्य सिमाज गर्ल स्कूल में भारतीय सभ्यता पर दिया। पण्डित जी पन्द्रह दिन के लिये

ठहरना चाहते हैं। हिन्दी अंग्रेज़ी में कई विषयों पर व्याख्यान देना चाहते हैं। पहिले व्याख्यान में आपने उत्तर और दक्षिण अमेरीका के अनुभवों को संक्षिप्तरूप से वर्णन किया और बताया कि वहां के लोग भारत की अवस्था से पूर्णतया अनभिज्ञ हैं। आपके व्याख्यानों से उत्तम परिणाम निकला।

वास्तव में अमेरिका आत्मिक ज्ञान के लिये तृष्णा रखता है और भारत की ओर देख रहा है। उसने कई जाती जागता शक्तियों का प्रमाण दिया (जैसे मि० बोस, महात्मा गांधी) जिनसे सिद्ध होता है कि प्राचीन काल में पश्चिमी लोगों के पता लगाने से पूर्व अमेरिका में भारतीय सभ्यता थी और ५ हज़ार वर्ष बीते कि यहां पर भारतीय राज्य था। अमेरिका में आर्यों की ध्वजा लहराती थी। पंडित जी ने भारत की दुर्दशा का कारण घर की फूट वर्णन किया और महात्मा गांधी की स्वराज्य नामी पुस्तक से तीन वस्तुओं पर बलपूर्वक कहा अर्थात् आत्म-विश्वास, आत्म-ज्ञान और आत्म-संयम। वह आज रात्रि को ८॥ बजे एक और व्याख्यान होगा।

TANGANYIKA HERALD 3-7-1933.

INDIAN CULTURE.

Pandit Jaimini Mehta delivered two more illuminating lectures on the Aryan Civilisation abroad on Saturday and Sunday nights at the new premises of the Arya Samaj School.

In his second lecture he completed the account of his American tour and disclosed to the great astonishment of the hearers many a wonderful living monument of Aryan Culture in that part of the globe.

His Sunday's lecture on what he saw in Java, Sumatra was a most excellent one. He enlightened the audience on many historical events that had taken place two thousand years ago and on the present day things identical therewith. He will finish his Java, Sumatra tour tonight at half past eight and will recite Upnishad, the mine of knowledge for which the western world has so much appetite and which is the only true source of happiness to mankind.

Pandit ji's speech is so much impressive, his knowledge so vast, his experience of the outer world so great and his memory is so powerful that those who listen to him get hypnotised and spell bound.

People in large numbers have attended to his lectures and their number is expected to be on the increase day by day. It is the cherished desire of the Pandit ji that he may be given an opportunity of speaking to a still greater number.

टांगानीका हैरल्ड ता० ३-७-१९३३

वैदिक सभ्यता

अर्थात्—महताजैमिनी ने दो व्याख्यान विदेशों में भारतीय सभ्यता पर बहुत मनोरञ्जक, शनिवार तथा रविवार की रात्रि को पुत्री पाठशाला के भवन में और दिये। दूसरे व्याख्यान में आप ने अमेरिका की यात्रा को समाप्त किया और वहां आर्य संस्कृति के कई अद्भुत चमत्कार और चिन्ह प्रगट किये। जिन को सुनकर श्रोतागण चकित रह गये। रविवार के व्याख्यान में जो कुछ आपने जावा और सुमात्रा में देखा उसे वर्णन किया जो अत्यन्त उत्तम था। आपने श्रोतागण को कई इतिहासिक घटनायें सुनाईं जो दस सहस्र वर्ष पूर्व हो चुकी हैं।"'पण्डित जी का भाषण इतना प्रभावशाली हुआ करता है, कि उनका ज्ञान इतना विशाल है, संसार का इतना महान अनुभव है और स्मरण शक्ति ऐसी अद्भुत है कि श्रोतागण आप पर मोहित और विस्मित हो जाते हैं। अर्थात् जनता पर जादू का असर डालते हैं। लोग अधिक संख्या में आपके व्याख्यान सुनने आते हैं और प्रति दिन श्रोतागण की संख्या अधिक होती जाती है। पण्डित जी इससे भी अधिक श्रोतागण की आशा रखते हैं ताकि वह अपना संदेश सब भारतीयों तक पहुंचा सकें।

———

टांगानीका हैरल्ड ४ जुलाई १९३३ लिखता है:-

The Tanganyika Herald. Tuesday, 4-7-1933.

PANDIT JAIMINI.

We have great pleasure in introducing to our readers Pandit Jaimini Mehta, B. A, LL. B., M. R. A .S., PH. D., a brief sketch of whose life is published eleswhere, as an Aryan Missionary who has, since last ten years, been touring in the world with the object of enlightening both Indians and foreigners on Aryan Civilization, Culture and Religion. Since his arrival here he delivered four lectures: we have attended to all of them and we say from our 'personal experience that not only they were master pieces and erudite but that they were really a mine of knowledge and useful information to both Indians and foreigners in general and an inspiration to Indians in particular. Al- though Pandit ji possesses a vast knowledge of the present-day economic and political problems of India, and although he is one of those practical politicians who believe in independence through self-reliance, self-knowlege and self-sacrifiece, he has made his mission purely social and religious. While wishing this learned Pandit ji every success in this noble mission, we congratulate

the local Arya Samaj on affording the pubilc from time to time opportunities of listening to learned persons like Pandit Jaimini Mehta. May we make one suggestion. Pandit Jaimini delivers lectures in English, and it would be in the interest of the international cause to arrange a meeting of a cosmopolitan character where peoples of different nations could assemble to listen to this great social and religious preacher of India.

अर्थात् – हम बड़ी प्रसन्नता से अपने पाठकों को महता जैमिनी वैदिक मिश्नरी से परिचय कराते हैं जिनका संक्षिप्त जीवन चरित्र हमने इस अङ्क में दिया है जो दस वर्ष से विदेशों में भारतीयों और विदेशों को आर्य सभ्यता, आर्य संस्कृति और आर्य धर्म पर भ्रमण करते हुये प्रकाश दे रहा है। जब से वह यहां पधारे तब से उन्होंने चार व्याख्यान दिये हैं। आप अपने अनुभव से कह सकते हैं कि यह व्याख्यान न केवल विद्वत्तापूर्ण और गवेषणा से भरपूर थे किन्तु विद्या की खान और उपयोगी मालूमात से भरपूर थे। प्रवासी भारतीयों और विदेशों को उत्तेजित करने वाले थे। यद्यपि पण्डित जी को वर्तमान समय को आर्थिक और सामाजिक अवस्था का पूर्ण ज्ञान है और वह राजनीति को पूर्ण रीति से समझने वाले हैं और स्वराज्य की प्राप्ति का साधन आत्म विश्वास, आत्म ज्ञान, आत्म संयम

समझते हैं परन्तु फिर भी आपने अपना उद्देश्य केवल धार्मिक और सामाजिक समझा हुआ है। पण्डित जी ने अपने पवित्र कार्य में पूर्णतया सफलता प्राप्त करली है। हम स्थानीय आर्य समाज का धन्यवाद करते हैं कि जिसने पण्डित जैमिनी जैसे योग्य विद्वान को निमन्त्रित करके जनता को ऐसी उत्तम बातें सुनने का अवसर प्राप्त कराया। हम चाहते हैं कि एक ऐसे व्याख्यान का प्रबन्ध भी किया जावे। जो साम्प्रदायिक स्थान से भिन्न जगह पर हो। जिससे तमाम जातियों के लोग (गोरे अफ्रीकन) गोबानी आदि उपस्थित होकर महता जी जैसे धुरन्धर विद्वान के मुखारविन्द से भारत की सामाजिक और धार्मिक अवस्थाओं का ज्ञान प्राप्त कर सकें।

---

९ जुलाई के हैरल्ड समाचारपत्र ने निम्न लेख मुद्रित किया:—

T. HERALD 5—7—1933.

How Japan Rose ?

More than 500 persons including ladies listened to Pandit Jamini last night and viewd a vivid picture of the rise and fall of India and Japan reeled before their eyes.

Panditji outlined very ably and in a very impressive manner an account of what Japan was fifty years ago.

As regards India he laid stress on unity and equailty. He deprecated the present communal differences and quarrels and hoped to see a day when unity would be established and when every man and woman will consider it his or her duty to call himself or herself Indian first and everything else after wards.

जापान ने कैसे उन्नति की ?

अर्थात्—कल रात को ५०० से अधिक स्त्री पुरुषों ने महता जी के व्याख्यान को सुना। भारत व जापान की उन्नति व अवनति का प्रत्यक्ष चित्र जो महता जी ने खींचा वह लोगों के नेत्रों के सामने प्रगट हो गया।

पंडित जी ने बड़ी योग्यता से, बड़ी प्रभावशाली शैली से वर्णन किया कि जापान की अवस्था आज से ५० वर्ष पूर्व कैसी थी। भारतीयों के विषय में उसने एक्यता और समानता पर बहुत बलपूर्वक कहा।

उसने वर्तमान समय के साम्प्रदायिक झगड़ों और भेद के सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा और आशा दिलाई कि एक समय आवेगा जब कि यहाँ संगठन का राज्य होगा और प्रत्येक स्त्री-पुरुष अपने आपको पहिले भारतीय समझेगा और शेष बातें गौण समझी जावेंगी।

—

६ जुलाई के हैरल्ड ने अपने पत्र में इस प्रकार लिखाः-

T. HERALD 6-7-1933.

India And Japan

Pandit Jaimini's lectures have roused so much interest that every meeting witnesses the number of hearers larger than the previous one did. Last night he proved by facts and figures how Japan was able to make progress within the period of sixty years and how India lagged behind. Next to unity and equality there should be, insisted panditji, free spread of Education among masses, the kind of Education that makes one self-supporting. He deplored the situation which the prsent education system has created in India and emphasised the need of India for following in the foot-prints of Japun. In this cennexion Panditji shoked the audience by telling them that peoples in India were simply wasting something like Rs. 560,000,000 every year for satisfying their religious sentiments, and exhorted them to imagine what a benefit would acrue to India were she to spend such a huge amount every year in spreading among masses the right type of education. He very able brought home how Japan, a country of illiterates and idlers only three decades ago, could achive tangible results in the cause of education which India could not do even within 160

years of the British Rule and concluded by appealing to the audience for a careful consideration of the present day problem of India, which is a problem of only bread and buttre. Tonight Pandit Jaimini proposes to enlighten on the next chapter in the history of Japan.

भारत और जापान

अर्थात्—पंडित जैमिनी के व्याख्यानों ने इतना उत्साह और दिलचस्पी उत्पन्न कर दी है कि प्रति दिन अधिवेशन में अधिक संख्या बढ़ती जाती है। कल रात उसने घटनाओं और हिन्दसों को उपस्थित करके सिद्ध किया कि किस प्रकार जापान ने साठ वर्ष के भीतर इतनी भारी उन्नति कर दिखाई और किस तरह भारत सब से पीछे रह गया है।

संगठन (समानता और एकयता) के पश्चात् साधारण जनता में शिक्षा का प्रचार अनिवार्य होना चाहिये। इस प्रकार की शिक्षा दी जावे कि अपने आपको युवक पालने पोसने योग्य बना सके। उसने वर्तमान समय की शिक्षा प्रणाली जो भारत में प्रचलित की गई है और उसका जो दुष्परिणाम निकला है उस पर बहुत शोक प्रगट किया और इस बात पर बलपूर्वक कहा कि भारत को भी अब जापान के पग-चिन्हों पर अनुकरण करना उचित है। इस पर पंडित जी ने जनता को चकित कर दिया। यह वर्णन करके कि भारत के लोग ५६ करोड़ रुपये मन्दिरों व

तीर्थों पर धार्मिक भाव पूरे करने और साधू मुसटण्डे लोगों को दान करके व्यर्थ नाश कर रहे हैं और कहा कि यदि यही धन ठीक उपयोग में लाया जाकर साधारण जनता की शिक्षा और धन्धों के लिये उसे व्यय कर दिया जावे तो कितना भारी लाभ हो।

उसने बड़ी योग्यता और उत्तमता से वर्णन किया कि किस प्रकार से जापान जो ४० वर्ष पूर्व अनपढ़ तथा सुस्त मनुष्यों का देश था थोड़े ही समय में शिक्षा के बल पर इस क़दर समृद्धशाली और उन्नतिवान् बन गया। भारत में १६० वर्ष से अंग्रेज़ी राज्य होते हुये भी इतनी उन्नति न कर सका। आपने जनता को बहुत बलपूर्वक कहा कि आप भारत का वर्तमान समस्या को हल करने की ओर पूर्ण रीति से ध्यान दें। क्योंकि आजकल तो भोजन का प्रश्न अत्यन्त आवश्यक है। आज रात को महता जैमिनी जी जापान की अन्य विशेषताओं को प्रगट करने के लिये व्याख्यान देंगे।

१२ जुलाई को जो व्याख्यान गोवानी इन्सटीट्यूट में हुआ वह बहुत प्रभावशाली था इस लिये उसकी नक़ल यहां पर की जाती है।

Indias Cotribution to the World Culture.

On Wednesday Mehta Jaimini B. A., Vedic Missionary, delivered a most interesting and instructive lecture on the above subject in the Goan Institute from 6-30 p. m. to 8 p. m. The

audience was so large that not only the hall and its verendahs were overcrowded, but the people were standing outside the building and many had to return disappointed. The eminent speaker handled the subject so ably and masterfully that the audience was spell-bound with his magnetic power of eloquence. quotations, and perfound knowledge. The learned speaker introduced, his subject with misrepresentation about India by the Western Historians, the oriental western scholars, some missionaries and tourists. He refuted them one by one with irrevocable reasons and quotations; then he explained true India from the quotations of the Professor Max-muller, Von Shroedar and Edward Carpenter. Then he went on quoting various authors and historians in support of his allegations and assertions that India cuntributed her culture philosophy and civilisation to Greece, Egypt, Persia and Italy. The brains of the audience reeld under the weight of his dates, pages of the books, and quotations flowing from his mouth and above all they marvelled at his memory and vast knowledge and up-to-date information on the ancient world culture as well as current topics of the day. The distinguished speaker then showed that Indian culture teaches (1) self abnegation, self resignation,

simplicity and contentment; on this point he quoted Mr. C. R. Das. Mr. Nehru and Mahatma Gandhi. (2) Toleration. On this he quoted the persecution of Jews by Christians, their taking refuge in India where the Rajahs (Kings) gave them plots of land to erect their temples; the persecution of Parsees who escaped to Gujrat, about 10000 souls, where the Rajahs not only received them cordially but gave them lands to settle and build their worshipping abodes. Even the bitter enemies of the Hindus never charged Hindus for ever molesting them or maltreating them. The Indian Rajahs never demanded deposits or passports for entry into their territories (3) Universal Brotherhood. He said that Indian culture teaches not only to love humanity but all the living beings of the universe. As the lecture could not be finished in one and a half hour and the audience was not satisfied with the lecture, they were anxious to hear Mehta Jaimini more, hence another lecture was arranged in the building of Arya Girls school yesterday.

We cannot reproduce the whole lecture as our space is not sufficient but we can frankly say that this is the first speaker ever come in Dar-es-Salaam with so vast a knowledge, comparative

study of religions, philosophies, and culturse, gigantic prodigious memory and flow of speech replete with solid matter, marshalled facts, accurate figures and humourous demeanour.

डेली टांगानीका १४ जुलाई १९३३ ई०

संसार की संस्कृति में भारत का भाग

बुधवार के दिन महता जैमिनी वैदिक मिश्नरी ने एक अत्यन्त मनोरञ्जक व शिक्षाप्रद व्याख्यान गोवानी इन्सटीट्यूट में रात्रि के समय ६॥ बजे से ८ बजे तक हुआ। श्रोतागण इतनी अधिक संख्या में थे कि न केवल भवन (Hall) जनता से खचाखच भरा हुआ था किन्तु उसके बरामदे भी भरपूर थे कितने ही लोग सड़कों पर खड़े सुन रहे थे। अनेकों को स्थान न मिलने के कारण निराश लौट जाना पड़ा। योग्य भाषण कर्ता ने अपने विषय को ऐसी योग्यता और उत्तमता से प्रगट किया और विस्तृत किया कि जनता उसकी मधुर वाणी, प्रमाणों और विद्या की चकमक पत्थर जैसी शक्ति से मोहित और विस्मित हो रही थी। धुरन्धर विद्वान ने प्रारम्भ में वर्णन किया कि भारत के सम्बन्ध में चार प्रकार के मनुष्यों ने मिथ्या विचार प्रगट किये हैं और भारत के अन्धकार को प्रगट किया है अर्थात् ऐतिहासिकों, पश्चिम के संस्कृत विद्वानों, पादरियों तथा यात्रियों ने। इसका कारण उनकी विद्या की न्यूनता, स्वार्थ और नीति का ध्यान रखना और

दूसरों की सुनी सुनाई बातों पर विश्वास करना ही है। व्याख्यान-दाता ने अपूर्व युक्तियों और वास्तविक घटनाओं से और प्रमाणों से उनके विचारों को मिथ्या सिद्ध किया। तत्पश्चात् उन्होंने मैक्समूलर, वान शरोदर और कारपेण्टर जैसे योग्य विद्वानों के प्रमाणों से बतलाया कि वास्तविक भारत क्या है? अर्थात् भारत के सच्चे रूप का प्रतिबिम्ब उपस्थित किया। तत्पश्चात् उसने कई विद्वानों और प्रमाणिक ग्रंथों के उद्धरण देकर यह सिद्ध किया कि भारत ने संसार भर को अपनी संस्कृति, तत्वज्ञान और सभ्यता का प्रकाश दिया। विशेषकर मिश्र, यूनान, रोमा और ईरान को।

श्रोतागण के मस्तिष्क इन तिथियों, पुस्तकों के पृष्ठों और पुस्तक रचयिताओं की नामावली और उद्धरणों व प्रमाणों के नीचे दब गये जो कि महता जी अपने मुखारविन्द से धारा के समान बहा रहे थे।

इसके अतिरिक्त जनता आपकी स्मरण-शक्ति, विशाल-ज्ञान और आधुनिक काल की विद्वता से चकित हो रही थी जो कि भारत की प्राचीन संस्कृति और संसार की वर्तमान समय की संस्कृति के सम्बन्ध में वह प्रगट कर रहे थे। तत्पश्चात् प्रसिद्ध विद्वान ने सिद्ध किया कि भारतीय संस्कृति तीन प्रकार की शिक्षा देती है (१) त्याग भाव, सरलता और संतोष। इस पर आपने मिस्टर सी० आर० दास, नहरू, महात्मा गांधी के प्रमाण पेश किये और उनके जीवन का आदर्श रक्खा। (२) क्षमा भाव—इस

पर आपने वर्णन किया कि जब यहूदियों को ईसाई लोग पकड़ पकड़ कर अत्यन्त कष्ट दे रहे थे उनमें से कुछ भागकर भारत आये और आश्रय ढूंढा। राजाओं ने उनका स्वागत किया और पूजन स्थान बनाने के लिये मुफ्त भूमि दी। इस प्रकार जब पारसियों को मुसलमान पकड़कर दुःख दे रहे थे तो १० हजार पारसी भाग कर आश्रय ढूंढने के लिये गुजरात में आये। वहां के राजा ने भी उसी प्रकार उनका सत्कार किया और मन्दिर बनाने के लिये भूमि दी। हिन्दुओं के कट्टर शत्रु भी यह कहने या लिखने का साहस नहीं कर सके कि कहीं हिन्दु राजाओं ने उन विदेशियों के साथ बुरा सलूक किया हो। भारतीय राजाओं ने न तो कोई पास-पोर्ट प्रवेश करने के लिये मांगा, न कोई धन अमानत के तौर पर माँगा। (३) सार्वजनिक मित्रता--आपने कहा कि भारतीय संस्कृति न केवल मनुष्यों से प्रेम करना सिखाती है किन्तु संसार के तमाम प्राणियों के साथ मित्रता व प्रेम का भाव प्रगट करती है।

चूंकि व्याख्यान डेढ़ घन्टे में समाप्त नहीं हो सकता था और श्रोतागण इतने मनोरञ्जक भाषण से संतुष्ट न हुये इस लिये महता जी से प्रार्थना की गई कि कल फिर व्याख्यान अंग्रेज़ी में हो। इस लिये आर्य गर्ल स्कूल के विशाल भवन में फिर प्रबन्ध किया गया।

हम सारे व्याख्यानों को अपने पत्र में मुद्रित नहीं कर सकते क्योंकि हमारे पर्चे में कुल व्याख्यान के लिए पर्याप्त स्थान नहीं है। परन्तु हम स्पष्ट कह सकते हैं कि महताजी पहिले भाषण

करने वाले दारासलाम में आये हैं जो इतना विशाल ज्ञान रखने वाले, धर्मों का तात्विक ज्ञान रखने वाले, तत्वज्ञान, पदार्थ विद्या और संस्कृति का पूर्ण आन्दोलन करने वाले और समझने वाले अद्भुत स्मरण शक्ति, भारत की धारा बहाने वाले, ठोस विषय और घटनाओं को नियम पूर्वक सिलसिलेवार प्रगट करने वाले, यथार्थ घटनाओं और हिन्दसों को प्रगट करने वाले और हंस मुख स्वभाव के उपदेशक हमने नहीं देखे।

इसी प्रकार टांगानीका ओपीनियन पत्र ने मेरे व्याख्यान के सम्बन्ध में अपने पत्र में निम्न लेख छापा।

TANGANIKA OPENION.

India and World Culture.

A very learned discourse by Pandit Jaimini Mehta was given at the Goan Institute at very cosmopolitan and big gathering. The subject of discoure was "India's Contribution to World Culture".

The learnd speaker lamented that India had in the past been variously misrepresented—by foreign historians, by white Christian missionaries, by foreign Orientalists who had imperfect knowledge of Sanskrit in which the wealth of India's culture is to be found and lastly by foreign tourists. He

then exposed the fallacious idea that Miss Mayo's "Mother India" was an honest exposition of Indian life. How could a human being, contended the speaker, reach 500,000 villages which were the home of ancient traditions of India, the 20,000 modern towns which represented the impact of modern civilisation with India and India's 32 languages and 222 dialects through which the sublimity of India's lore was characteristicality interpretted, white he or she stays only for six months in India and that too in the salubrious climate of mountain heights entrenched in Simla European officialdom, as did that American woman !

Pandit Jaimini gave copious instances to belie the pretentions of Miss Mayo to a truthful account of India from the writings of eminent Western scholars who have more closely studied India. Quoting Max Muller, who studied Sanskrit for 56 years, from his book entitled "India What it Teaches Us" published in 1880.

"If I were asked under what sky the human mind has most fully developed some of his chiocest gift and has most deeply pondered on the greatest problems of life and has found solutions of some of them which will deserve the attention even of those who have studied Plato and Kant I should point to India..........."

He also cited, among others, Jacoliat, a French Governor of Pondicherry who studied Sanskrit for 26 years who wrote in his "The Bible in India." "O soil of ancient India, the cradle of humanity, hail, hail, venerable and efficient nurse hail, Father-head of faith, of love, of poetry, of science, may we hail revival of thy past in our western future..........

Leaving the past, India of this age has produced poet laureates like Tagore, the winner of Noble Prize, eminent research scholars in the field of science like Sir J. C. Bose, giant phylosophers like Surendranath Gupta whom foreign universities embraced as their "Master." India was not India such as has been depicted by prejudiced writers like Lord Macaulay, Wiliiam Archer and others.

The speaker then proceeded to illustrate from history how India had been a land of contentment and toleration. Imperialism is unknown to her. The occult philosophy of Vedas and the Ethical philosophy of Lord Budha are the bulwork of India's civilisation which have played no small part in the enlightenmeut of humanity. India's sons like Mahatma Gandhi have been a world force.

Pandit Jaimini concluded amidst continued applause his very ably delivered and inspiring lecture by quoting the words of Sadhu T. L. Vaswani that "As in the past so in the future India shall be the Torch Bearer of the world.

DAILY TANGANYIKA HERALD 15-7-1933.

Aryan Civilization.

The Dar-es-Salaam English-knowing public had one more chance to hear the learned and impressive speech of Pandit Jaimini Mehta on Thursday evening at the Arya Girls' School New Premises on the subject of the Arya Culture, when the centre hall was crowded as usual. Pandit ji at the outset pointed out the difference detween the Arya Civilisation and the western civilisation and said that the world Civilisation in English means to restrain barbarism and to humanise the mankind, but according to the Aryan Culture, the word "Sabhyata" for civilisation is comprehensive which includes the peaceful life (solace of mind tranquillity of heart and simplicity of life) which comprises universal love, service of humanity, development of morality and comfort of life.

He quoted Mr. Fox from "Nineteenth Century and After." Professor Ochimara a Japanese scholar. Mr. Wagner "Spoiled Child" and "W. Russel's Wonderful Century" showing that modern civilisation leads to barbarism, scientific savegery, the tyranny of machinery and

slaugher. He particularised his subject by concrete examples telling that America at the top of civilisation and rolling in wealth is not happy. there is not security of life and property there; because in America there is no heart for God; then he took Germany-an inventor of poisonous gases and industries; therein he showed how the tyranny of machinery has caused moral and spiritual death; the machine and machinery has so much inter-tangled that there is no room for God;. then he took England and quoting C. F. Andrew's statement from "Rangoon Mail" said that after the war the crimes have increased, the unemployment is raging because there is no time for God About France which is the land of fashions and passions he stated in the words of Professor Brugrueson that there is no mind for God and about Russia he said that is no need for God and lastly he took Japan the land of industries and said that in Japan there is no work for God. Thus he handled his subject so ably and masterfully that the audience was magnetised by the miraculous speech.

Then he proceeded to state what the Aryan Civilisation taught and showed how the ancient Aryan sages divided human life in four stages:-

Life of Celebacy devoting for study. Life of Household earn money and propagation of offspring life of "Tapasya' contemplation and austerity, Selfabnegation life for humanity. Then he explained daily functions of human life viz, spritual development, Physical dovelopment, Social development, Universal development and development of humanity. In short the speech was full of solid information and profound knowledge and proved Panditji to be living encyclopedia for the civilisation modern and ancient.

डेली टांगानीका हैरल्ड ता० १९-७-३३

आर्य सभ्यता

अर्थात्—दारासलाम की अंग्रेज़ी जानने वाली जनता को महता जैमिनी का दूसरा व्याख्यान विद्वतापूर्ण और प्रभावशाली आर्य समाज विषय पर आर्य पुत्री पाठशाला के नये भवन में १२ जुलाई को सुनने का फिर अवसर प्राप्त हुवा। भवन श्रोतागण से परिपूर्ण था। पंडित जी ने आरम्भ में आर्य सभ्यता और पश्चिमी सभ्यता के बीच के भेद को वर्णन करते हुये कहा कि शब्द सिविलिज़ेशन के अर्थ जंगलीपन से परहेज़ करना और मनुष्य को सभ्यता सिखाना है। परन्तु आर्य संस्कृति के अनुसार सभ्यता शब्द जो अंग्रेज़ी सिविलिज़ेशन शब्द के अर्थ

में आया है बहुत विशाल है जिसमें शन्तिदायक जीवन (मन और हृदय की शान्ति तथा जीवन की सरलता) सब से प्रेम रखना, मनुष्य मात्र की सेवा, सदाचार और जीवन का सुत्र भी सम्मिलित हैं। आपने मासिक "उन्नीसवीं शताब्दि और उसके पश्चात्" से मिस्टर फावस का प्रमाण देकर वर्णन किया और एक जापानी विद्वान ओची भारो की पुस्तक से भी प्रमाण देकर बताया। साथ ही महोदय वेंगनर की पुस्तक "बिगड़ा हुवा बालक" रसल महोदय की पुस्तक "अद्भुत शताब्दी" के प्रमाणों से सिद्ध किया कि वर्तमान सभ्यता हमें जंगलीपन, वैज्ञानिक वहशीपन, मशीनरी के अत्याचारों और क़तल करने की ओर लेजा रही है। उसने अपने विषय की पुष्टि में साक्षी और प्रत्यक्ष दृष्टान्त देकर कहा कि अमेरिका जो वर्तमान समय में विज्ञान के शिखर पर समझा जाता है। और धन धान्य से मालामाल है शान्ति और सुख का जीवन व्यतीत नहीं कर रहा है। वहां किसी की सम्पत्ति तथा जीवन सुरक्षित नहीं है। क्यों कि अमेरिका में किसी का हृदय परमात्मा की तरफ़ आकृष्ट नहीं है। फिर आपने जर्मन को लेकर कहा कि यह देश ज़हरीली जैसों का अविष्कार करने वाला है, और धन्धों का केन्द्र स्थान है। वहां के सम्बन्ध में आपने प्रगट किया कि मशीन और कला कौशल के धन्धों ने मनुष्य के सदाचार और आध्यात्मिक अवस्था को नाश कर दिया है। कला कौशल ने इतना जाल बिछा दिया है कि परमात्मा के लिये कोई स्थान नहीं रहा। फिर आपने इङ्गलिस्तान को लिया और सी०

एफ़० एराडरूज़ पादरी के लेख को जो रंगून मेल में मुद्रित हुवा था लेकर कहा कि युद्ध के पश्चात् अभियोग (अपराध) इङ्गलैंड में अधिक हो गये हैं। बेकारी ज़ोर से बढ़ रही है। क्यों कि वहां परमात्मा के लिये कोई समय नहीं रहा। फ्रांस के विषय में जो व्यभिचार और फैशन का केन्द्र बना हुवा है आपने प्रोफेसर वर्गसन की सम्मति प्रगट की कि यहां परमात्मा के लिये लेशमात्र स्थान नहीं है। रूस के विषय में आपने बताया कि वहां के लोग परमात्मा की आवश्यता ही नहीं समझते और और अन्त में जापान के विषय में कहा कि लोग कहते हैं कि परमात्मा के लिये कोई कार्य करने का नहीं है। हम सब काम स्वयं कर सकते हैं और करेंगे।

आपने अपने विषय को ऐसी योग्यता और सम्पूर्णता से निभाया कि तमाम श्रोतागण इस जादू भरे भाषण से चुम्बक पत्थर की तरह विस्मित हो रही थी। फिर आपने वर्णन किया कि आर्य सभ्यता सिखलाती है और प्रगट करती है कि किस तरह प्राचीन आर्य ऋषियों ने मनुष्य जीवन को चार विभागों में बांटा अर्थात् ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वाणप्रस्थ आश्रम तथा संन्यास आश्रम।

फिर आपने मनुष्य की दिनचर्या में वर्णित पंच कर्मों की व्याख्या करते हुये वर्णन किया कि ब्रह्मयज्ञ से आत्मिक विकास, अग्निहोत्र से शारीरिक विकास, पितृ यज्ञ से सामाजिक

और वैज्ञानिक विकास तथा बलिवैश्व यज्ञ से संसार भर में शान्ति का विकास और अतिथि यज्ञ से मनुष्य मात्र की भलाई और शान्ति का विकास होता है।

भाषण ठोस घटनाओं और विशाल विद्वता से भरपूर था जिससे सिद्ध होता था कि पंडित जी वर्तमान और प्राचीन सभ्यता के प्रगट करने के विश्वकोष और देहधारी पुस्तकालय है।

टांगानीका ओपीनियन पत्र ने निम्न लेख प्रकाशित किया :—

The Tanganyika Opinion 16-6-1933.

ARYAN CIVILISATION.

Pandit Jaimini Mehta delivered another lecture in English on "Aryan Civilisation" at the Arya Samaj Girl's School on Thursday last. It was again a cosmopolitan gathering. Panditji was listened to with rapt attention which he commands with the display of encyclopaedic knowledge coupled with simple and dispassionate delivery-qualities uncommon in the realm of similar discourses.

He made a pointed contrast between the civilisation as understood and practised in modern times under the Western influence and that in ancient Aryan times under the Eastern influence. "Restraint from barbarism and to humanise Man",

was the mordern intrepretation of civilisation, Pandit ji said. But according to Vedic interpretation it meant (i) peaceful life (tranquility of heart, consolation of mind, contentment and simplicity of life), (ii) love towards others, (iii) service to humanity, (iv) good conduct (self-control), (v) good behaviour, and (vi) comfort of life.

Panditji then explained by citing quotations from the writings of Western scholars, how the modern definition of civilisation has been translated into action. Mr. Fox writing in the "Nineteenth Century and After" states, "Modern civilisation is perfect barbarism and scientific savagery. All the resources of science have been exploited to introduce scientific precision, accuracy and order into the methods of slaughter with the greatest effectiveness... ... to inflict the maximum suffering in minimum time." Mr. Ocho Mora, a Japanese scholar writes in "Osoka Manchi' "Modern civilisation is based on not Crucified One but on crucifying one .. the Indian civilisation is spritual and humanitarian."

The speaker then gave an exposition of the modern advancement in the various countries of the world based on modern inventions. In spite

of America's pretentious to the attainment of the highest order in civilisation, Panditji lamented that America's face was besmirched with the guilt of lynching practices. He quoted Mr. Lindsay judge of the Supreme Court to show that America was the land of veneral diseases .....where 45 per cent of the high school girls have had intercourse with boys before they leave....

He showed how during the course of conversations between Indian savants and scholars of the respective nations, it had been taken as a confession that in the throes of modern civilisation, there was no *heart* fot God in America, no *room* for God in Germany, no *time* for God in England, no *mind* for God in France, no *need* for God in Russia, and there was no *work* for God in Japan.

Contrasting this life of western civilisation with the Aryan civilisation, Panditji said that in ancient India when the Vedic civilisation ruled supreme, and even now to a degree, every individual born in the State had certain definite duties and responsibilities to perform. His or her life was divided into four periods— (i) period of celebacy for first 25 years, (ii) period of married

family-life for the second 25 years, (iii) period of recluse for the third 25 years, and lastly the period of communion with God for the rest of the life.

Again, every individual had five duties to perform—(i) spiritual progress, (ii) physical development, (iii) social development and fifthly the uplift of the poor. The essence of all this life was Peace and Contentment.

Panditji then proceeded to describe that at the World Disarmament Conference at Geneva in 1923, when a resolution on disarmament was moved, His Highness the Maharaja of Bikaner (Indian Delegate) opposed the resolution as impracticable and urged that a resolution be passed that Powers should disarm their heart of greed and jealousy. Panditji contended that that alone was the true and the most effective method of world peace according to the Aryan civilisation.

Panditji regretted that he could not do justice to the subject within the short time at his disposal that evening. He concluded his highly instructive and illuminating speech with a quotation from Holmes who admitted that the

western culture was a sham and that the world's emancipation lay in seeking the guidance of Indian culture which was found in the ethical philosophy of Lord Budha, the ethical philosophy of the Upnishdhas and the Occult philosophy of the most ancient sacred literature—the Vedas.

हमको निम्नलिखित एडरस दिया गया टांगानीका हैरल्ड अखबार ने १८ जुलाई के परचे में अपनी टिप्पणी सहित इस प्रकार प्रकाशित किया है:-

An Address to Pandit Jaimini

His Services and Self-Sacrifices Appreciated

Public Urged to put His Preachings into Practice.

On Sunday at 8-30 P. m. at the Arya Girls' School new premises an interesting function was held by the local Arya Samaj under the chairmanship of Mr. Mulji Keshavji Anandji when an address was presented to Dr. Jaimini Mehts, Pahdit B. A, L L. B., M. R. A. S., PH. D. At the outset with a fow words of appreciation for the Panditji's work Mr. Rishiram stated that as a token of memery of his tour here the Arya Samaj decided to have a group photo with Panditji among them and to present an address, to him. The following address was read:—

ADDRESS

Dr. JAIMINI MEHTA, PANDIT,

B. A. L. L. B. M R. A. S. PH. D.

DARSSALAAM.

Revered Panditji,

We, the undersigned, on behalf of the ARYA SAMAJ take this opportunity on the eve of your departure from this place, in expressing to you our profound sense of gratitude in your having given us the privilege of getting the opening ceremony of the DEVKUNVER GIRLS SCHOOL buildiug performed at your auspicious hands.

Your short stay amidst us has impressed us with the belief that yours is an ideal personality. Your travels during the ten years across the New and the old world have indeed been a fascinating experience, an exposition of which you have so vividly and exquisitely given to the general public. Your discourses have aroused intense interest with your masterly exposition of the grandeur of vedic philosophy and the Aryan and parent culture of the world.

Respected Panditji, you have engendered in us the pleasaut recollections of the ancient practices of our forebearers who after undergoing a period of

celebacy, and another of family-life renounced their worldly pleasures and attachments to serve the cause of humanity and thus entered the third stage of their lives. The fourth stage of life has been the communion with god. How this world of today has fallen from those high ideals which were the traditions of our ancient times !

Fortunately for mankind, Maharishi Dayanand Sarswati brought about a renaissance and revival by his sacrifice, penance and inspiration—those blessed old traditions And in you Panditji we find, in the true sense of the term. the bearer of the message of renaissance of the maharishi.

Revered Panditji, your self-abnegation has deen brought home to us by the voluntary abandonment and renunciation of the pleasant and happy family-life which you had enjoyed with your devoted wife, your accomplished sons and a brisk practice at the Bar. It was thirteen long years ago that you forsook the sweat fruits of your strenuous labours which you so richly earned and which we of the mundane world aspire to. your self-sacrifice and devotion to the service of Man on the foot - steps of Maharishi Dayanand Saraswati has prompted in us the cravings to present to you, as we hereby do, this humble address in token of our respectful gratitude, and we pray for the acceptance of the same.

We offer our fervent prayers to the Almighty God that you may receive his divine blessings that many long years of healthful life may be spared to you to unable you to guide the erring humanity to the path of true enlightenment and traditional Aryan bliss. We will, Panditji, continue to cherish the hope that you will favour us with your presence on another occassion also. In wishing you our warmest bon voyage and long life.

we have the honour to be,

Revered Panditji,

Your most sincere admirers

Daresalaam,

16th July, 1933

Rishiram Laxmandas

President

Ramji K. Ganatra

Secretary

Then Mr. Muljibhai declaring himself fortunate to get a chance to present an address to such a learned men urged upon the andience to put into practice what Panditji had told them in form of advice and always keep before them in view his valuable principles, aud presented the address and garlended Panditji. Then Mr. H. D. Pandya briefly reviewed Prnditji's arrival here and thenking the Arya Samaj for affording the chance to the public to hear such a learned and experienced man like

Panditji and apreciating Panditji's self-sarifice and services with devotion prayed to God for Panditji's long life and hoped to hear such many Panditji's through Arya Samaj Then Mr. C. C. Jemindar first expressing his regret for the Panditji's separation asked to appreciate Panditji's activities and have a living example of a real Aryan life and urg·d to the audience follow suit and make their life sublime by putting into practice all that Panditji had preached for their benifit. Panditji gave a very brief but humerous reply. He stated that he did not do anything with any desire to obtain any address from them; he only desired to have the fruits of his labour and he would be only pleased when he will know that the public of Dar-es-Salaam has learnt something from his speeches and have put then into practice. He urged up,n them to unite to gether and use a part of their prefits in the uplift of the general community in the end he thanked the Arya Samajists for the kind and generous treatment they had given him.

Mr. Ganatra the Secretary, thanking the President, and too audience for their co-operation and the gathering was disperesed late at night 10. p. m.

टाँगानीका हैरल्ड १८ जुलाई १९३३ लिखता है:-

अर्थात्–महता जैमिनी जी को अभिनन्दन पत्र

उसकी सेवा और त्याग भाव की प्रशंसा

जनता को प्रेरणा की गई कि उसकी शिक्षाओं पर कर्तव्य पालन करें



शनिवार रात्रि के ८॥ बजे आर्य गर्ल स्कूल के नये भवन में स्थानीय आर्य समाज ने एक मनोरञ्जक कार्य म० मूलजी के केशोजी आनन्द जी के प्रधानत्व में सम्पूर्ण किया जब कि महता जी को अभिनन्दनपत्र दिया गया। पहिले म० ऋषिराम ने आरम्भ में पंडित जी के कार्य के लिये कुछ प्रशंसा के शब्द कहकर कहा कि आर्य समाज महता जी के भ्रमण की यादगार चिन्ह स्वरूप पंडित जी के साथ चित्र खिचवाये और उनको अभिनन्दन पत्र देने का निश्चय किया है। निम्न लिखित अभिनन्दनपत्र ऋषिराम प्रधान ने पढ़कर सुनाया।

पूज्य पण्डित जी ! हम हस्ताक्षर करने वालों को आर्य समाज की ओर से इस स्थान से आपके वियोग के समय यह अवसर प्राप्त हुआ है कि आपका हम अत्यन्त धन्यवाद करें कि आपने हमारी देवकन्या पुत्री पाठशाला के नये भवन का उद्घाटन संस्कार अपने कर कमलों से पूर्ण किया है आपने हमारे हृदय में थोड़ा समय निवास करके हमें इस निश्चय से प्रभावित कर लिया है कि आपका आदर्शनीय जीवन है। आपने जो दस वर्ष से पुरानी और नई दुनिया में भ्रमण किया है, आपने जो हृदय

आकर्षित, अनुभव प्राप्त और प्रगट किये हैं उनकी व्याख्या विस्तारपूर्वक अति उत्तमता तथा योग्यता के साथ साधारण जनता पर प्रकाशित कर दी है। आपके भाषणों से जनता में वैदिक फिलासफी और आर्य संस्कृति जो संसारभर की संस्कृति की माता है। उसके महत्व व उच्चता पर जो व्याख्या की हैं उनसे जनता अत्यन्त उत्तेजित और प्रभावित हो गई है।

मान्यवर पण्डितजी ! आपने हमारे हृदयमें हमारे प्राचीन पिता, पितामह के गौरव को अंकित कर दिया है जो ब्रह्मचर्य और गृहस्थाश्रम के समय को व्यतीत करने के पश्चात् आपने सांसारिक आनन्द और विषय भोगों को तिलाञ्जली देकर मनुष्य मात्र की सेवा करने के लिये उद्यत हुआ करते थे और इस प्रकार अपने जीवन के तीसरे आश्रम में प्रवेश किया करते थे। चौथा आश्रम परमात्मा के साथ मिलाप करने का था। वर्तमान जगत् उन आदर्शों से किस प्रकार पतित हो गया है जो हमारे प्राचीन काल के आदर्श चले आते थे।

मनुष्य मात्र के उत्तम भाग्य से ऋषि दयानन्द सरस्वती ने अपने त्याग, तप और ईश्वरीय ज्ञान की सहायता और प्रेरणा से उन पवित्र प्राचीन आदर्शों को पुनर्जीवित कर दिया है। पंडित जी हम आपके भीतर सत्य अर्थों में महर्षि के पुनर्जीवित करने के संदेश को क्रियात्मक रूप में पाते हैं।

मान्यवर पंडित जी ! आपका त्याग भाव हमारे भीतर अंकित हो गया है और आपने भी अपनी इच्छा से गृहस्थ के

आनन्द और संसारिक पदार्थों के विषयों को त्याग कर अपनी धर्मपत्नी तथा योग्य पुत्रों को तिलाञ्जली देकर प्रगट किया है उसने हमें आकृष्ट कर लिया है। तेरह वर्ष पूर्व आपने पुरुषार्थ के फलों को वाञ्छित करके लग्न से प्रचार का कार्य किया है। आपकी भक्ति और त्याग मनुष्य मात्र की सेवा के लिये स्वामी दयानन्द के पग चिन्हों पर चलने के आदर्श को देख कर हम उत्तेजित हुये हैं और हमारी कृतज्ञता प्रगट करने और आप के ऊपर अपनी श्रद्धा भक्ति के प्रकाशित करने के लिये यह तुच्छ भेंट सन्मान पूर्वक भेंट करते हैं आप कृपा पूर्वक इसे स्वीकार कीजिये।

हम सर्व शक्तिमान् परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह आप पर अपनी अपार दया प्रगट करते हुये आपको चिरकाल तक चिरंजीवी तथा आरोग्य रक्खे जिससे आप मनुष्य मात्र को सत्य ज्ञान और प्राचीन आर्य आदर्श जीवन बनाने में पथ-प्रदर्शक का कार्य करते रहें।

पण्डित जी हमें आशा है कि आप किसी अन्य अवसर पर भी दर्शन देकर कृतार्थ करेंगे। हम अन्त में प्रार्थना करते हैं कि आपकी यात्रा सफल हो।

हम हैं आपके सच्चे हृदय प्रशंसक

ऋषिराम लछमन दास प्रधान आर० के गनातरा मंत्री

१६ जुलाई १९३३ ई०]

आर्य समाज दारासलाम

तत्पश्चात् मूलजी भाई ने यह कह कर कि मेरे अहोभाग्य हैं कि मुझे ऐसे योग्य विद्वान को सन्मान पत्र उपस्थित करने का अवसर मिला है और आपने तमाम श्रोतागण से प्रार्थना की और बलपूर्वक कहा कि आप पंडित जी की शिक्षाओं का अनुकरण करें और उनके सिद्धान्तों और विचारों को अपने जीवन में धारण करें। फिर आपने पंडित जी को सन्मानपत्र भेंट करके फूलों के हार पहिनाये। फिर मि० पांड्या ने पंडित जी के आगमन और व्याख्यानों पर संक्षिप्त प्रशंसा करके आर्य समाज का धन्यवाद किया कि जिसमें पंडित जी जैसे अनुभवी और योग्य पुरुष के व्याख्यान सुनने का अवसर जनता को दिया। पंडितजी के त्यागभाव से प्रेरित होकर उनकी सेवाओं की प्रशंसा की और परमात्मा से प्रार्थना की कि वह पंडित जी को चिरकाल तक सुरक्षित और स्वस्थ रक्खें और आशा प्रगट की कि दूसरी बार फिर उनके भाषणों के सुनने का अवसर प्राप्त होगा।

बाद में महाशय ज़मीदार ने पंडित जी का वियोग होने का शोक प्रगट किया और जनता को उनके पुरुषार्थ को बताया और कहा कि पंडित जी वास्तविक जीवन की जीती जागती शक्ति का आदर्श हैं। जनता को उनका अनुकरण करना चाहिये। अपने जीवन को उत्तम और आदर्शवान् बनाना चाहिये।

महता जी ने इसके उत्तर में अत्यन्त संक्षिप्त और हास्यप्रद भाषण दिया और कहा, "मैं किसी अभिनन्दनपत्र पाने की इच्छा

से उनके मध्य में उपस्थित नहीं हुआ हूं। मेरी हार्दिक प्रबल इच्छा है कि मेरे पुरुषार्थ का फल आप मुझे दे देवें। मुझे तभी आनन्द व प्रसन्नता होगी जब आप मेरे भाषणों को हृदय में स्थान देकर उनका निध्यासन करें--अर्थात् अपने जीवन में घटायेंगे।" आप ने बलपूर्वक कहा, "आप संगठित होकर रहो और अपनी कमाई का एक भाग दुर्बल तथा 'साधारण जनता की उन्नति और सुधार के लिये व्यय करो।"

समाप्ति पर उन्होंने आर्य समाजी भाइयों को उस कृपा और उत्तम वर्ताव के लिये धन्यवाद किया जो उनके प्रति प्रगट की गई थी।

मिस्टर गनेतरा मंत्री ने प्रधान तथा उपस्थित जनता का उनकी सहानुभूति के लिये धन्यवाद दिया। तत्पश्चात् जनता रात्रि के १० बजे बिदा हुई।

हम समाचार पत्र की एक और सम्मति देकर अफ्रीका की यात्रा का वृतान्त समाप्त कर रहे हैं। हमारा अनुभव है कि अफ्रीका के भाई वैदिक धर्म्म के उपदेशों को बड़ी भक्ति और प्रेम से सुनते हैं और आर्य भाइयों में आर्य समाज तथा श्री० दयानन्द के प्रति बड़ी श्रद्धा है।

तारीख ७ जुलाई सन् १९३३ ई० को

टांगानीका ओपीनियन पत्र ने निम्न लेख प्रकाशित किया:-

The Tanganyika Opinion 7-7-1933.

Farewell to Pandit Jaimini.

Pandit Jaimini Mehta is one of those army of selfless workers who on reaching their fiftieth year of life elected to renounce the pleasures of the world for preaching the mission of the founder of the Arya Samaj, Swami Dayanand Saraswati, that of carrying the message of Vedic enlightenment to every nook and corner of the world. Panditji has been an honourary missionary for thirteen years now. He has travelled all over the world at his own expense. He has been in East Africa for about a month, and after a stay of about a three weeks at Dar-es-salaam is going to Nairobi tomorrow where he has been invited at the Arya Samaj anniversary. From there he will proceed to India to join the semi-centenary celebrations of Swami Dayanand and in December will return to visit South Africa.

His short stay at Dar-es-salaam has been extremely instructive and his daily sermons w

be remembered long after him. Panditji has come to be known as a practical preacher and an outspoken reformer. In token of commemoration of the visit of Panditji, a group photo was taken on Sunday at the Arya Samaj Girls' School and at night a farewell address was presented to him under the chairmanship of Seth Keshwaji Anandji. A characteristic appreciation of Panditji's highly useful work at Dar-es-salaam is given in a para graph of the Address which states:—

"Your short stay amidst us has impressed us with the belief that yours is an ideal personality. Your travels during the ten years across the New and the old world have indeed been a fascinating experience, an exposition of which you have so vividly and exquisitely given to the general public. Your discourses have aroused intense interest with your masterly exposition of the grandeur of vedic philosophy and the Aryan and parent culture of the world."

In reply to the Address, Panditji delivered his last sermon exhorting the people to regulate their lives on traditional Aryan principles and to reclaim themselvess from the degeneration which followed in mediaeval ages

Pandit Jaimini has published a number of books recording his experience in various parts of the world and he is now preparing for publication his travels in Africa. His works have been received in India with profound interest.

PUBLIC LECTURE—

Pandit Jaimini Mehta having been detained on account of steamer movement, he will address a public meeting at the Arya Samaj Girls' School to-night at 8-30 when Panditji will give an exposition of a Veda Mantra in Hindustani. The public is cordially invited to attend.

इस प्रकार से ४ मार्च से १७ अगस्त तक मैंने अफ्रीका में भ्रमण किया। अर्थात् कुल १६६ दिन अफ्रीका में निवास किया। इस समय में कई दिन एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने में भी लगे। लगभग ६ दिन तो यात्रा में बीत गये। शेष १६० दिनों में १५८ व्याख्यान मैंने दिये। कभी २ दो व्याख्यान भी देने पड़ते थे।

नाम स्थान	कितने दिन ठहरे	संख्या व्याख्यान	विशेष
दारासलाम	२२	२५	
जञ्ज़ीबार	२६	३१	पहिली बार १२ जून से २१ जून तक तथा दोबारा २२ जुलाई से ३० तक
मम्बासा	२४	२६	पहिली बार ४ मार्च से १७ मार्च तक दूसरी बार ६ जून से ११ जून तक तीसरीबार ६ अ० से १७अगस्त तक
नरोबो	२२	२६	
नकोरो	६	१०	पहिलीबार ४, ५ अप्रेल दूसरी बार २६ मई से ६ जून तक
अल्डोरियट	१५	१६	पहिलीबार ७, ८ अप्रेल दूसरी बार २८, २९ अप्रेल तीसरी बार १८ जे० २२ मई तक
जञ्जा	४	५	पहिली बार १२, १३, १४ अप्रेल दूसरी बार २५, २६ अप्रेल
लगाज़ी	२	२	
कम्पाला	८	१०	
कटाली	५	५	
कोमो	१२	१२	
टरोरो	२	३	

प्रचार के अतिरिक्त संस्कार इस प्रकार कराये नैरोबी में ४, टरोरो में १, जञ्जीबार में ३, दारासलाम में ८ तथा मम्बासा में ३, कुल १६ संस्कार कराये।

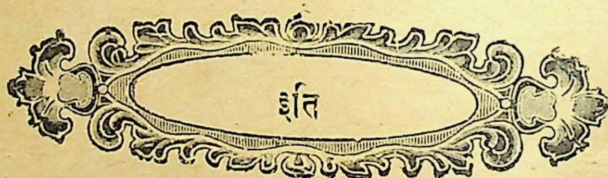
ब्यौरा प्राप्त आय व्यय

स्थान	प्राप्तव्य धन	व्यय	
दारासलाम	४०० शि०	किराया बम्बई तक	५०)
जञ्जीबार	५५	किराया जहाज़ बम्बई से मम्बासा तक दो आदमियों का	३००)
अल्डोरियट	३०	डाक व्यय	१५)
जञ्जा	२०	छपाई पुस्तक	२००)
लोगाज़ी	४७	विभिन्न व्यय	५००)
कम्पाला	४२	आर्य वीर पत्र को	३०)
कोमो	५०	बिभिन्न व्यय	१५५)
कटाली	७५	किराया वापिसी	३००)
टरोरो	५	प्राइवेट सेक्रेटरी	२५०)
नैरोबी	३००	बम्बई से पंजाब	५०)
	१०२४ शि०		१८००)

अर्थात् ६८० रुपये

इस प्रकार मुझे अपने पास से ११२०) व्यय करना पड़ा।

अफ्रीका के भाइयों की हार्दिक इच्छा हमारे व्याख्यानोको सुनकर दिनों दिन बढ़ती ही रही। वहां के भाई दो चार दिन ही नहीं किन्तु कई सप्ताह तक ठहराने के लिये उत्सुक रहे। अन्त में हम इस यात्रा को समाप्त करके २६ अगस्त को भारत वापिस लौटे।



श्री महता जी द्वारा लिखित पुस्तकें

तुरन्त लेकर पढ़िये



१. दक्षिण अमेरिका की यात्रा	१॥
२. जापान दर्पण	१)
३. इण्डोनेशिया में प्राचीन सभ्यता	।॥)
४. पाताल देश की यात्रा	।॥)
५. जगत् गुरु भारत	।॥)
६. अमेरिकन लेडी व भारत माता	१)
७. फीजी देश की यात्रा	।॥)
८. उत्तरी अमेरिका की यात्रा	॥)
९. मारीशस की यात्रा	॥=)
१०. दयानन्द का संसार पर जादू	।=)
११. उपनिषदों का महत्व	।)
१२. जावा में पाषाण चित्र लिपी रामायण	२)
१३. पूर्वी अफ्रीका की यात्रा	१)
१४. महता जी का जीवन चरित्र	१।)
१५. वेदों का महत्व अंग्रेज़ी	।॥)
१६. वैदिक मिशन इन अमेरिका	॥)
१७. संसार का आगामी धर्म क्या होगा	-)॥